नंदन
खेल पहेली : ५० पुरस्कार
नया वर्ष शुभ हो
जनवरी '९४
पांच
रुपए
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन

अंग्रेज़ी सीखाये
आत्मविश्वास जगाये
ज़िन्दगी की दौड़ में
आगे बढ़ाये
विशेषज्ञों द्वारा तैयार
डायमण्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स
एक ऐसा कोर्स जो आपको कुछ शब्द या वाक्य रटवाने की बजाय एक नवीन पद्धति द्वारा आधुनिक अंग्रेज़ी की गहराई तक पहुँचाता है। बेहद आसान निर्देशों व अनेक उदाहरणों के माध्यम से, यह कोर्स शब्द व वाक्य बनाने के नियमों, विभिन्न परिस्थितियों में बातचीत, महत्वपूर्ण विषयों के समानार्थक अंग्रेज़ी शब्दों व भाषा के अन्य पहलुओं से आपको अवगत कराता है।
देखते ही देखते अंग्रेज़ी पर आपका अपनी मातृभाषा की तरह अधिकार हो जाता है और आपके अंदर पैदा होता है ऐसा आत्मविश्वास कि आप हर जगह, हर व्यक्ति पर एक अमिट प्रभाव छोड़ पाते हैं।
देशभर में हर उम्र के लाखों व्यक्ति इस कोर्स का लाभ उठा चुके हैं।
आप क्यों पीछे रहते हैं?
डॉयमन्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स
अंग्रेज़ी सीखने का सरल कोर्स
मूल्य 42/-
'डायमण्ड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स' बंगाली, गुजराती, मराठी, नेपाली, उर्दू माध्यम में भी उपलब्ध है
मूल्य 36/-
मूल्य 42/-
मूल्य 36 -
मूल्य 36 -
मूल्य 32 -
आर्डर के साथ
आधा मूल्य
एडवांस भेजें।
डाक व्यय प्रत्येक 5/-
डायमण्ड पब्लिकेशन्स
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3273493, 3273495
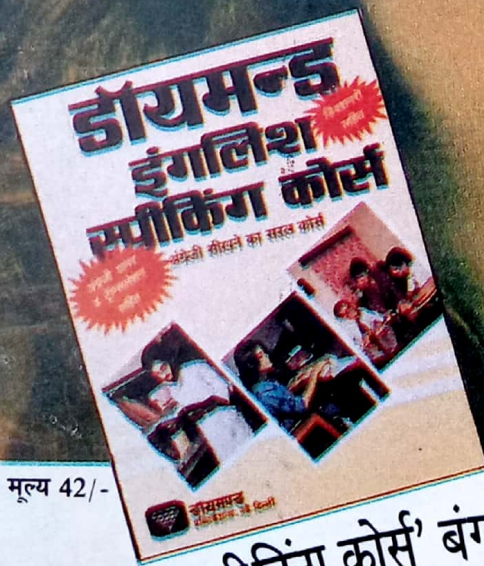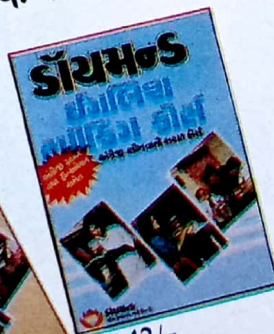
डायमण्ड कॉमिक्स का

सुपरहिट 800 वां अंक

कार्टूनिस्ट प्राण का

चाचा चौधरी-राका का चैलेंज

मुफ्त! पर्सी प्रीमियम कैंडी 4 पर्सी गोलियां और आकर्षक कार स्टिकर

नये डायमण्ड कामिक्स 1 दिसम्बर 93 को प्रकाशित

नये डायमण्ड कामिक्स 15 दिसम्बर 93 को प्रकाशित

डायमण्ड कामिक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

खेल पहेली

जीतिए ५० इनाम : प्रत्येक को ५० रुपए की पुस्तकें

आवश्यक सूचना

☐ प्रत्येक प्रश्न के आगे कोष्ठक में तीन उत्तर दिए हैं। जो सही हो, उस पर √ निशान लगाएं।

☐ सही हल इसी फार्म पर भेजें।

☐ अंतिम तिथि—३१ जनवरी, १९९४।

☐ **पता—खेल पहेली, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।**

☐ एशियाई खेलों में पहली बार स्वर्ण पदक जीतने वाली महिला एथलीट।
(पी. टी. उषा/कमलजीत संधु/शाइनी अब्राहम)

☐ कैरम का भारतीय विश्व चैम्पियन।
(रामहित शर्मा/विशाल/मारिया इरुधियम)

☐ ओलम्पिक खेलों में भारत की ओर से हाकी खेली। फिर भारतीय क्रिकेट टीम का कप्तान बना)।
(नरी कांट्रेक्टर/इफ़्तिखार अली खां पटौदी/मंसूर अली)

☐ एशियाई खेलों में कुश्ती को पहली बार स्थान मिला ?
(१९५१/१९५४/१९५८)

☐ पी. टी. उषा ने एक साथ चार स्वर्ण पदक यहां जीते थे।
(तेहरान/सिओल/बैंकाक)

☐ दो टैस्टों में लगातार दोहरे शतक लगाकर रिकार्ड बनाने वाला।
(सचिन तेंदुलकर/विनोद काम्बली/ संजय मांजरेकर)

☐ पेइचिंग में हुए थे ग्यारहवें एशियाई खेल। भारत ने इस खेल में स्वर्ण पदक जीता था।
(हाकी/कुश्ती/कबड्डी)

☐ सबसे पहले इस क्रिकेट खिलाड़ी को अर्जुन पुरस्कार मिला था।
(सुनील गावस्कर/सलीम दुर्रानी/सोल्कर)

☐ इस शहर में एशियाई खेलों का आयोजन तीन बार हुआ।
(दिल्ली/तोक्यो/बैंकाक)

☐ अगले राष्ट्रमंडल खेल यहां होने जा रहे हैं
(विक्टोरिया/आकलैंड/लंदन)

☐ हिरोशिमा में हाकी का चौथा एशिया कप जीतने वाला देश।
(भारत/दक्षिण कोरिया/पाकिस्तान)

☐ इस वर्ष भारत ने जीता था क्रिकेट का विश्व कप।
(१९७५/१९८७/१९८३)

☐ डेविस कप में इस खिलाड़ी ने सबसे अधिक बार भाग लिया है।
(लेंडर पेइस/रमेश कृष्णन/विजय अमृतराज)

☐ भारत ने ओलम्पिक हाकी का सिरमौर कितनी बार जीता ?
(छह/तीन/आठ)

☐ भारत की धरती पर पहला क्रिकेट टैस्ट इस खिलाड़ी का भी पहला टैस्ट था। इसने बनाया एक शतक।
(सी. के. नायडू/लाला अमरनाथ/विजय हजारे)

इन्हें पहचानिए
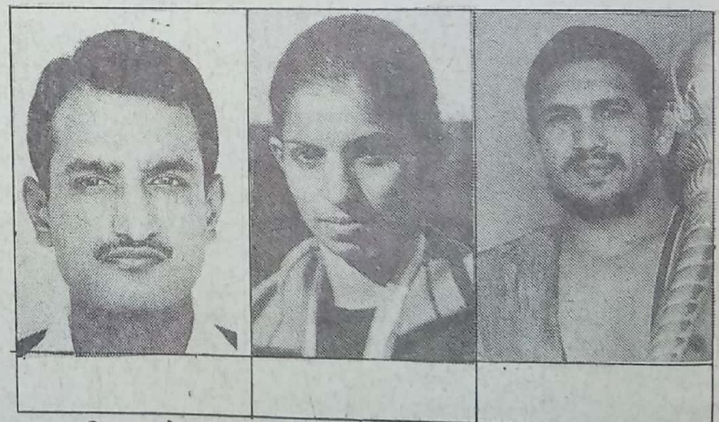
अधिक से अधिक दस शब्दों में बताइए
मुझे नंदन इसलिए सबसे अच्छा लगता है—

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

खेल पहेली

नाम - - - - - - - - - - - - - - उम्र - - - - -

पता -

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

राज कॉमिक्स प्रस्तुत करते हैं-

नागराज का नया सनसनीखेज कॉमिक्स विशेषांक

मूल्य 15/-

इसी सैट के अन्य कॉमिक्स प्रत्येक का मूल्य 6/=

- **महागुरु भोकाल** (भोकाल)
- **बलवा** (योद्धा)
- **अश्वराज और मैं** - (अश्वराज)
- **खूनी ब्रिगेड** (जादूगर सीरीज)
- **जलजला** (गोल्ड हार्ट)
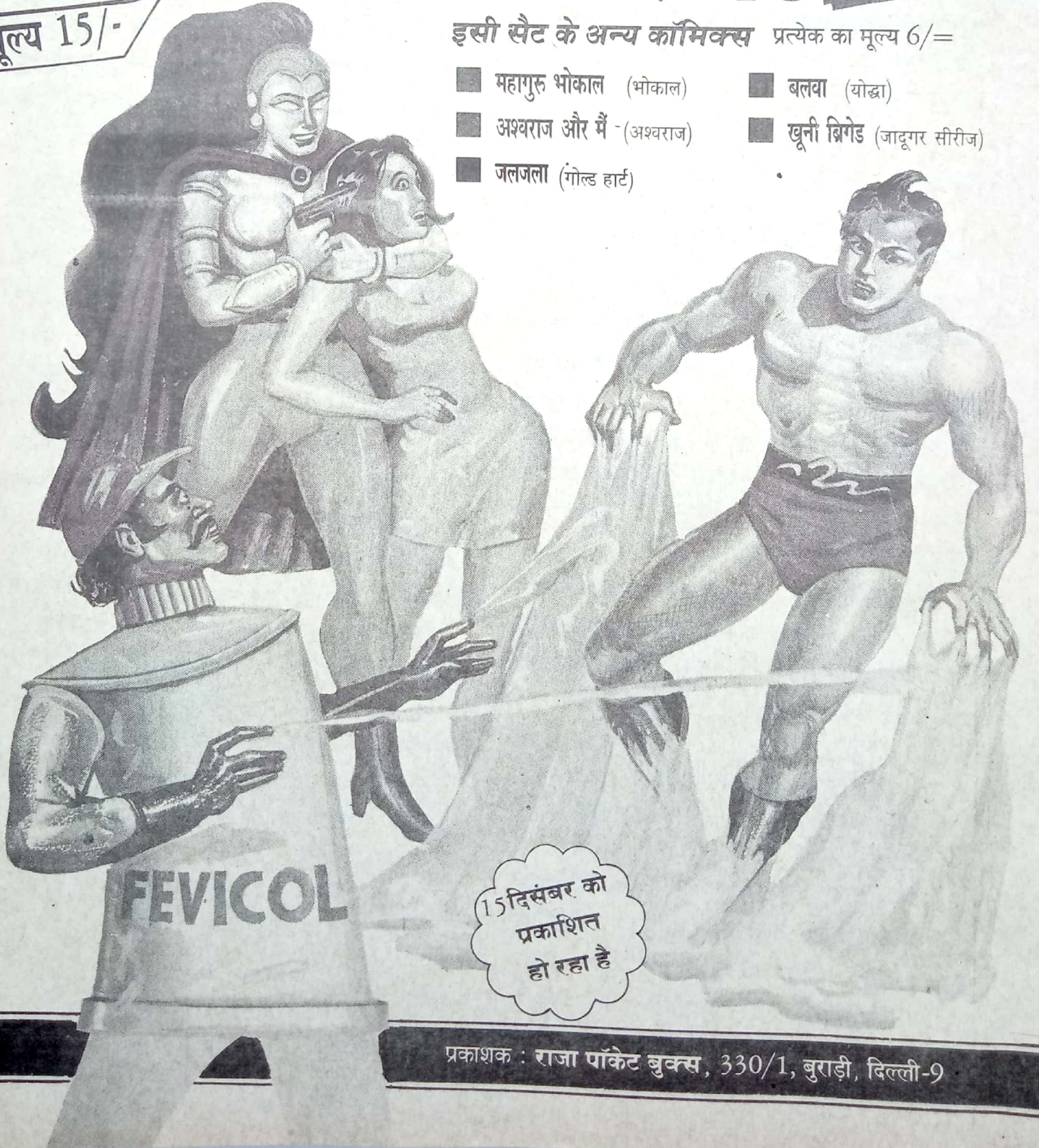
प्रकाशक : **राजा पॉकेट बुक्स**, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-9

आओ बात करें

बधाई हो, बधाई हो, बधाई
फुर-फुर खुर-पुर फुर्र

हवा काफी ठंडी हो गई है। पेड़ों पर पतझड़ खत्म हो चला, उन पर हरे-हरे कोमल पत्ते झांक रहे हैं। ठंड में भी कमरे की खिड़की थोड़ी-सी खोलकर बैठता हूं। वह आएगी, न जाने कहां से, कितनी दूर से। बरस पूरा होता नहीं पर रह-रहकर उसकी राह देखने लगता हूं।

एक चिड़िया, नन्ही-सी चिड़िया। नए साल के पहले दिन आती है। मेज पर कुछ उछल-कूद करती है, कुछ बोलती है— फिर फुर-फुर्र हो जाती है। प्यारी-सी सफेद चिड़िया, गले में नीली धारी है उसके। शायद किसी ने नीलम की वह माला उसे पहना दी हो। दस साल तो हो गए उसे आते हुए।

उस दिन आती है, फिर पूरे साल कभी दिखाई नहीं देती।

दो बरस पहले कुछ मित्रों से चर्चा कर बैठा। उन्हें विश्वास नहीं हुआ। कई मित्रों ने साल के पहले दिन सवेरे ही आकर धरना दे दिया— "तुम्हारी मित्र चिड़िया को देखने आए हैं।"

बैठे रहे, बैठे रहे— आई नहीं वह। जाते-जाते कहने लगे— "बड़े गप्पी हो। हमें बेवकूफ बनाते हो।" सोचिए भला, कोई चिड़िया क्या बुलाने से आएगी या उड़ाने से उड़ेगी। पंछी के पंख बंधे नहीं होते।

वह उस दिन भी आई पर तीसरे पहर। मेज पर उसने खुशी बिखेरी। नव वर्ष की बधाई देकर— यह जा, वह जा।

पहले एक-दो बार उपहार भी ले आई थी। एक बार मक्का का एक दाना तो दूसरी बार सरसों का सुनहरा फूल। काफी दिनों तक उन्हें सहेजकर रखा।

ऐसी भी चिड़ियां हैं जो ठंड बढ़ने पर ठंडे देशों से आती हैं। हमारे ही देश के पहाड़ों से भी पंछी ठंडे मौसम में मैदानों में आ जाते हैं। कौन जाने, वह देसी है या विदेशी। चिड़ियों पर कई किताबें देखीं, पर उस जैसी तसवीर नहीं मिली। नाम भी नहीं मालूम। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई अपना नाम नहीं बताना चाहता।

एक मंदिर में दो कबूतर आया करते थे। हर रोज आते, वहां जमीन पर बिखरे प्रसाद को चुगते। दिन भर उछल-कूद करते। शाम को अपनी राह उड़ जाते। उस मंदिर में वहां का राजा भी आया करता था। उसे कबूतरों के बारे में पता चला। उसने जानना चाहा कि वे कहां से आते हैं, कहां जाते हैं ? अब पक्षियों के बारे में यह कैसे पता चले ?

राजा तो राजा ठहरा। उसने ऐसे आदमी की खोज कराई जो पक्षियों की बोली जानता था। नाम था चतरू। उसको मंदिर के कबूतरों के पास भेजा। चतरू वहां पहुंचा तो उसे देखकर कबूतर उड़ गए।

लेकिन चतरू भी हार मानने वाला न था। वह मंदिर में ही रहने लगा। एक दिन कबूतरों का जोड़ा उससे टकरा ही गया। उसने उनसे पूछताछ की। वे बोले— "हम पिछले जन्म में इसी मंदिर में पुजारी और द्वारपाल थे। अपना काम ईमानदारी से नहीं करते थे। इसलिए पक्षी बन गए। हमें शाप था कि कोई तुम्हारी सुध लेगा, तुम्हारे बारे में पूछेगा तो मुक्त हो जाओगे। आज से हम मुक्त हुए।"

चतरू ने राजा से क्या कहा, क्या नहीं— नहीं मालूम। लेकिन वह एकदम बदल गया।

हां, याद आई उस नन्ही चिड़िया की। वह न जाने किस-किस की सुध लेने जाती हो। पूछती हो— "कैसे हो, सारा साल ठीक बीता ?"

अगर तुम्हारे कमरे में आ जाए तो पहचान लोगे उसे। वह चिड़िया आती है नए साल की बधाई लेकर। इसी तरह, कहां-कहां से कौन बधाई भेजता है— कोई जानने वाला, कोई अजाना।

—तुम्हारे भइया

[handwritten signature]

जनवरी '९४
वर्ष : ३० अंक : ३

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

लेखक	शीर्षक	पृष्ठ
कविराज ओमप्रकाश	दो बैल	८
जयप्रभा	ठाकुरजी का काम	१२
डा. जगमल सिंह	उतरी आकाश से	१५
डा. ओमप्रकाश सिंहल	लाल ही लाल	१७
रीता सतदेव	फिर-फिर पूछा	१९
सुनीति	खिली धूप	२०
विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय	अकेला सफर	२४
डा. रामकुमार तिवारी	मन की बात	२८
संतोष	युवराज ने कहा	३०
मीनाक्षी स्वामी	खाली हाथ	४१
शम्सुद्दीन	लौटी खुशी	४२
डा. भगवतीशरण मिश्र	पंच का फैसला	४४
फिगार बुलंदशहरी	साधु की बात	४६
डा. वीरेंद्र शर्मा	भागा खरगोश	४७
श्रीनिवास वत्स	अदल-बदल	५३
ईश्वरलाल प. वैश्य	कौन सुनेगा	५६
योगिता त्रिवेदी	इतना सुंदर गांव	५९
रूपक प्रियदर्शी	हार की कीमत	६४
प्रकाश चन्द्र खत्री	खाओ फल	६७

कविताएं

विनोदचंद्र पांडेय 'विनोद', चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक', अमिताभ मिश्र, डा. हरीश निगम, कमला ओबराय ३२

इस अंक में विशेष

शीर्षक		पृष्ठ
खेल पहेली		४
मेरा देश है यह	रंगीन झांकी	२२-२३
वामदेव के घोड़े	चित्र-कथा	३३-३६
मेरा नाम तेरा	चित्र-कथा	३७-४०

स्तम्भ

एलबम ११; आप कितने बुद्धिमान हैं २१; चटपट ४८; तेनालीराम ५१; ज्ञान-पहेली ५७; चीटू-नीटू ६१; पत्र मिला ६३; पुरस्कृत कथाएं ६५; नई पुस्तकें ६७;

आवरण : एम. एस. अग्रवाल; एलबम : कुलदीप शर्मा; कैलेंडर : इंद्रजीत जुनेजा; एस. एस. बृजवासी

सहायक सम्पादक : देवेन्द्रकुमार
मुख्य उप-सम्पादक : रत्नप्रकाश शील
वरिष्ठ उप-सम्पादक : क्षमा शर्मा; उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; डा. नरेंद्र कुमार
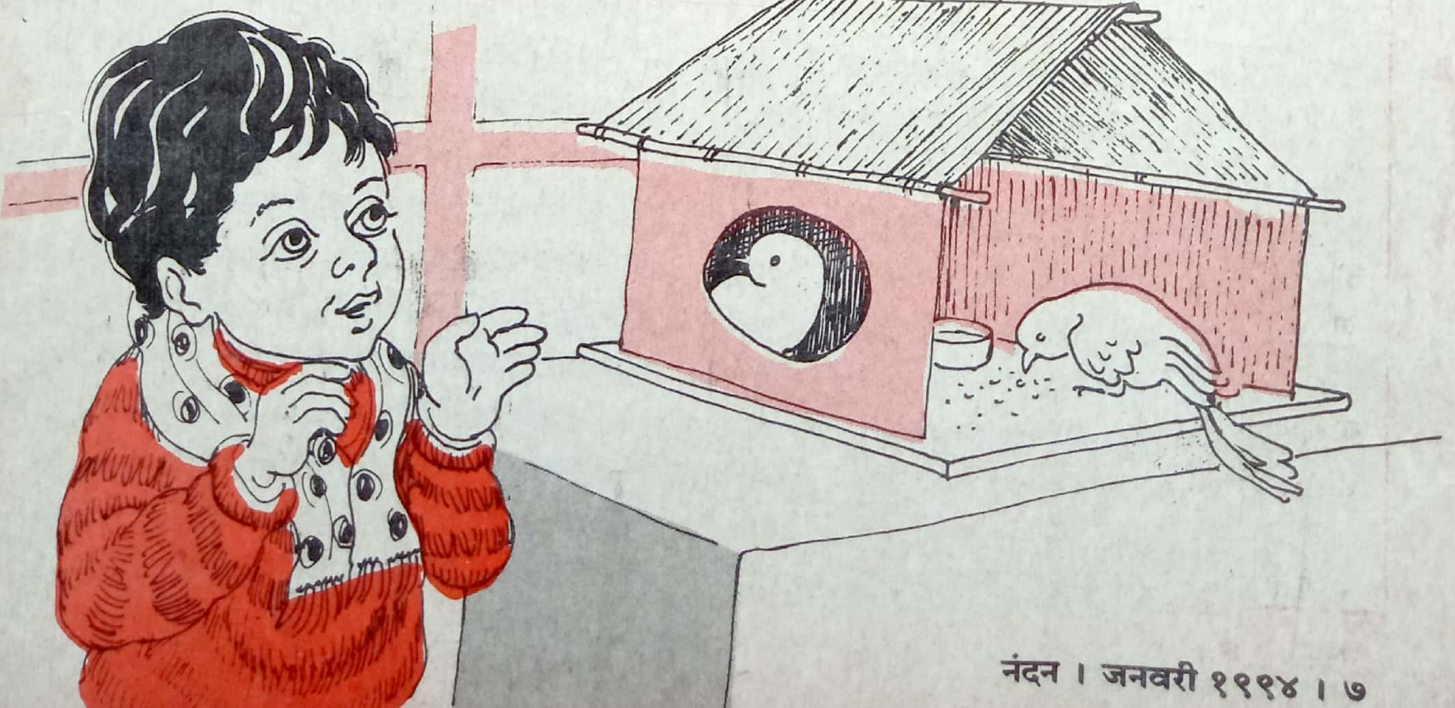
दो बैल

—कविराज ओमप्रकाश

सुखदेव पंडित माने हुए ज्योतिषी थे। हाथ की रेखाएं देखकर भविष्य बताते थे। उनकी भविष्यवाणी एकदम सही निकलती थी। लोग न जाने कहां-कहां से सुखदेव के पास आते थे। दूर-दूर तक उनका नाम था, पर उस नाम से उन्होंने धन कभी नहीं कमाया। कहते थे— 'जिस दिन भी भविष्य-कथन का पैसा लिया, यह सिद्धि मुझे छोड़ जाएगी।'

सुखदेव को पूजा-पाठ से जो कुछ मिलता, उसी से परिवार चलता था। बहुत साधारण ढंग से रहते थे। लेकिन उन्हें कतई असंतोष नहीं था। कई बच्चों को अपने पास रखकर शिक्षा भी देते थे। उन्हीं में एक था— दयाल। उसके माता-पिता नहीं थे। सुखदेव उसे अपने बेटे जैसा मानते थे।

समय भागता रहा। दयाल होनहार था। सुखदेव ने उसे खूब मन से शिक्षा दी थी। दयाल भी उस घर को अपना मानता था। एक दिन सुखदेव ने दयाल को अपने पास बुलाया। दयाल को वह कुछ चिंतित दिखाई दिए। उसने पूछा, तो सुखदेव बोले— "सचमुच परेशान हूं। समझ में नहीं आता कि कैसे क्या करूं?"

"मुझे आदेश दीजिए।"— दयाल ने हाथ जोड़कर कहा।

"कुछ दिन बाद मुझे नगर से बाहर जाना पड़ेगा। और हो सकता है कि मैं यहां कभी लौटकर न आ सकूं।"

सुखदेव की बात सुन, दयाल भौचक्का रह गया। वह कुछ कह न सका।

सुखदेव ने आगे कहा— "मेरे जाने के बाद तुम्हारी गुरु पत्नी एक बेटे को जन्म देगी। जिस रात मेरे घर में पुत्र जन्म लेगा, तुम जागते रहना। और जब आधी रात के समय किसी को वहां आते देखो, तो सावधान होकर सुनना कि उसने क्या कहा है।"

"उसके बाद क्या करना होगा मुझे?" —दयाल ने कुछ घबराए स्वर में पूछा।

"बस, उसके बाद तुम्हें जैसा उचित लगे करना।" —कहकर सुखदेव पंडित मौन हो गए। दयाल ने और कुछ नहीं पूछा। हां, उसका मन परेशान अवश्य हो गया।

कुछ दिन बाद सुखदेव पंडित को किसी काम से परदेस जाना पड़ा। चलते समय उन्होंने दयाल से कहा— "जो कुछ मैंने कहा, उसका ध्यान रखना।"

सुखदेव को गए एक सप्ताह हुआ था, तभी उनके बीमार होने का समाचार मिला और उसके दो दिन बाद उनकी मृत्यु का। घर में कुहराम मच गया। जिसने सुना, वही दुःख में डूब गया। सभी सुखदेव के प्रति श्रद्धा रखते थे।

सुखदेव की मृत्यु के दो मास बाद, उनकी पत्नी ने एक बेटे को जन्म दिया। सुखदेव के न रहने से घर की दशा बिगड़ गई थी। दयाल अपनी शक्ति भर काम करता था, फिर भी स्थिति संभलती न थी। जन्म वाली रात दयाल सतर्क होकर बैठ गया। उसे सुखदेव की बात अच्छी तरह याद थी।

—रात का समय था। घर में सब सो रहे थे। जाग रहा था केवल दयाल। एकाएक उसने कुछ आहट सुनी, फिर एक छाया दिखाई दी। फिर आवाज

आई— 'इसके भाग्य में दो बैल हैं ।' इतना कहने के बाद छाया अदृश्य हो गई । दयाल समझ न सका कि इन शब्दों का क्या अर्थ था ?

इसके बाद दयाल कुछ समय तक वहां और रहा । उसका मन वन में जाकर तपस्या करने का हो गया था । उसने अपने एक घनिष्ठ मित्र से बात की । उसने वचन दिया कि जब तक दयाल नहीं लौटेगा, वह सुखदेव पंडित के परिवार की देखरेख करता रहेगा ।

एक दिन दयाल ने गुरु पत्नी से अपने मन की बात कह दी । उन्हें बताया कि परिवार के भरण-पोषण का प्रबंध हो गया है । उन्हें कोई चिंता नहीं करनी होगी । और जाने की आज्ञा मांगी ।

गुरु पत्नी दयाल को अपना बड़ा बेटा ही मानती थीं । उन्होंने तुरंत आज्ञा दे दी ।

वह उसके मार्ग में बाधा नहीं डालना चाहती थीं । दयाल अब निश्चिंत था । पहले उसने तीर्थ यात्रा की, फिर एक वन में रहकर साधना करने लगा । धीरे-धीरे समय बीतने लगा । बहुत वर्ष बाद वह एक दिन फिर से पंडित सुखदेव के द्वार पर जा पहुंचा ।

दयाल ने गुरु पत्नी के चरण छुए । और परिवार का हाल-चाल पूछा । पंडित सुखदेव का बेटा अब बड़ा हो गया था । उसका नाम था— अभय । मां के कहने पर अभय ने दयाल को प्रणाम किया । फिर बाहर चला गया । गुरु पत्नी ने दयाल को बताया कि घर की स्थिति बहुत खराब है । बस, घर में दो बैल हैं । अभय उन्हीं की सहायता से खेती करता है । वह अनपढ़ ही रह गया था ।

एक विद्वान के बेटे के बारे में यह सुनकर, दयाल परेशान हो गया । फिर उसके कानों में शब्द गूंज उठे— 'इसके भाग्य में दो बैल हैं ।'

दयाल ने अभय को समझाया । पढ़ने-लिखने को कहा, पर वह एक ही बात कहता रहा— "मैं तो खेती ही करूंगा । पढ़-लिखकर क्या होगा ।"

उस रात दयाल को नींद न आई । वह निरंतर अभय के भविष्य के बारे में सोचता रहा । सुबह उसने अभय से कहा— "बेटा, मैं तुम्हें एक नया काम बताऊंगा । पहले तुम इन दोनों बैलों को हाट में जाकर बेच दो ।"

अभय बैल बेचने को तैयार न था । पर जब दयाल ने बहुत कहा, तो मान गया और बैलों को हाट में ले गया । दयाल सोच रहा था— 'इसके बाद मैं इसे किसी विद्यालय में भेजूंगा ।'

दिन ढले अभय आ गया । वह बैलों को बेच आया था । उसका मन दुखी था । सुबह मुंह अंधेरे अभय ने दयाल को पुकारा— "ये बैल तो लौट आए ।"

दयाल ने देखा— दोनों बैल द्वार पर खड़े पूंछ हिला रहे थे । उसे हैरानी हुई । दयाल ने कहा— "ये अपने नए मालिक को छोड़कर भाग आए हैं । यह तो ठीक नहीं हुआ ।"

"क्या तुम्हें पता है, बैलों को किसने खरीदा था ?"— मां ने पूछा ।

"नहीं तो ।"— इतना कहकर अभय चुप हो गया ।"

कुछ देर बाद दयाल ने देखा, वह बैलों को लेकर जा रहा है ।

"हाट में जा रहा हूं । वह आदमी इन्हें ढूंढ़ता हुआ वहीं आएगा ।"— कहकर अभय बैलों को ले

गया।

रात हो गई। अभय न लौटा,तो मां को चिंता हुई। वह दयाल के साथ उसे खोजने गई। देखा— सूने मैदान में अभय बैलों के साथ बैठा है।

मां ने घर चलने को कहा तो बोला— "बैलों को इनके नए मालिक को सौंप दूं, फिर आ जाऊंगा।" इसी तरह अगला दिन भी बीत गया, पर बैलों को लेने कोई नहीं आया।

बैलों को उनके नए मालिक को सौंपे बिना अभय घर लौटने को तैयार न हुआ। दयाल समझाकर थक गया। अभय ने तो हठ ठान ली थी। जल्दी ही यह खबर सब तरफ फैल गई। वहां भीड़ जमा हो गई। सब हैरान थे कि मामला क्या है!

बात राजा के कानों में पड़ गई, तो वह भी आए बिना न रह सका। उसने तुरंत आदेश दिया कि बैलों के खरीदार को ढूंढ़कर लाया जाए।

दो दिन बाद वह व्यक्ति मिल गया, जिसने अभय से बैल खरीदे थे। उसका नाम था— राघव। राजा की बुलाहट सुन, डरता हुआ आ गया। उसने पूरी बात सुनी तो बोला— "मेरे तो दोनों बैल घर के दरवाजे पर खड़े हैं।"

"तो ये बैल कौन-से हैं जो अभय के पास हैं?"— राजा ने पूछा।

"मैं कुछ नहीं कह सकता।"— राघव बोला।

"खैर, तुम इन दोनों बैलों को भी ले जाओ, वरना यह युवक खाना-पीना त्यागकर यहीं बैठा रहेगा।"— राजा ने कहा तो राघव को दोनों बैल अपने साथ ले जाने पड़े। दो नए बैल तो उसे जैसे उपहार में ही मिल गए थे।

बातों ही बातों में राघव को पता चल गया था कि अभय पंडित सुखदेव का बेटा है। वह सुखदेव का शिष्य रह चुका था। तुरंत अभय की मां से मिला। उनके चरण छुए। हाथ जोड़कर कहा— "मैं पंडित जी का ऋणी हूं। अब से अभय की शिक्षा-दीक्षा का भार मुझ पर रहेगा। आप निश्चिंत हो जाएं।"

सब बातें करके राघव घर पहुंचा,तो उसने देखा द्वार पर दो ही बैल थे। दोनों नए वाले जाने कहां चले गए थे?

उस दिन से अभय की देखरेख का भार सचमुच राघव ने उठा लिया। दो नए बैल कहां चले गए, इसकी चर्चा चलने पर वह कहता— "वे मुझे और अभय को मिलाने आए थे। काम हो गया तो चले गए।"

दयाल जो चाहता था,वह हो गया था। अभय नियम से शिक्षा पाने लगा था। एक दिन उसने गुरु पत्नी से विदा मांगी तो अभय ने कहा— "अब मैं आपको भी नहीं जाने दूंगा। आप कहीं नहीं जाएंगे, मेरे साथ रहेंगे। क्या यह घर आपका नहीं है?"

"है क्यों नहीं, पर मेरा भजन-पूजन!"— दयाल ने कहना चाहा।

—"मैं कुछ नहीं सुनूंगा। मेरे साथ रहने से आपका ईश्वर रूठ नहीं जाएगा।"

"अगर रूठ जाएगा तो तुम ईश्वर को भी मना लोगे, इसका मुझे विश्वास है।"— कहकर दयाल हंस पड़ा।

अभय ने भी हंसी में उसका साथ दिया। ●

स्वामी विवेकानंद
भारत भूमि मेरे लिए सबसे बड़ा स्वर्ग है।

ठाकुर जी का काम

—जयप्रभा

एक बार जोर का हल्लन आया। फिर तेज बारिश हुई। बाढ़ भी आ गई। भयंकर विपदा में भगदड़ मची। लोग अपनी-अपनी जान बचाने भागे। रामदेई का बेटा और बहू न जाने कहां गुम हो गए! लेकिन उसका पोता और पोती उसके पास रह गए। बूढ़ी रामदेई दोनों बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा करने लगी।

रामदेई आस-पड़ोस में सभी की मदद कर दिया करती। सब उसे बड़ी मां कहते। रामदेई सुबह-सवेरे उठ जाती। नहा-धो कर तुलसी को जल चढ़ाती। पूजा करने बैठती। उसकी पोती भगवती थोड़ी बड़ी हुई, तो वह भी दादी की देखा-देखी वैसा ही करने लगी। भगवती थोड़ा पढ़-लिख गई। वह दादी को हरि कथा सुनाने लगी। दोनों मिलकर कीर्तन भी किया करतीं।

समय बीतता गया। रामदेई का पोता अशोक बड़ा हुआ, तो छोटा-मोटा काम करने लगा। थोड़ी कमाई हो जाती। भगवान की ऐसी कृपा थी कि रामदेई के सभी काम पूरे होते रहते।

अब भगवती ब्याह लायक हो गई। रामदेई ने एक दिन अशोक से कहा—"बेटा, बहन के लिए कोई लड़का देख। मैं चाहती हूं, जल्दी से जल्दी इसके हाथ पीले कर दूं। मेरी जिम्मेदारी पूरी हो जाए।"

अशोक बोला—"बड़ी मां, लड़का तो ठीक कर आऊंगा। पर तुम्हारे पास कुछ माल-ताल भी है ? आखिर भगवती को कुछ तो दोगी।"

रामदेई बोली—"बेटा, तू लड़का तय करने की फिक्र कर। बाकी मुझ पर छोड़।"

अशोक ने हामी भरी। तीन महीने की भागदौड़ के बाद एक जगह शादी की बात पक्की हो गई। अशोक ने सोचा कि दादी के पास सोने-चांदी के कुछ जेवर जरूर हैं और शायद कुछ रुपए भी किसी कोने में गाड़े हुए हों। इसी भरोसे वह बेफ्रिक बैठी है। उसने घर आकर दादी को खबर सुना दी—"बड़ी मां, तैयारी में लग जाओ। अमुक तारीख को बुधवार के दिन लाला जगतराम अपने बेटे चरतराम की बारात लेकर आएंगे।"

खबर सुनकर रामदेई बहुत खुश हुई। देर तक लाला जी के घर-बार के बारे में पूछताछ करती रही। लेकिन भगवती को इस सबसे कोई प्रसन्नता नहीं हुई। उलटे उसकी रुलाई फूट गई और वह सिसकियां भर-भरकर रोने लगी। काफी देर हो गई, उसे चुप कराने की कोशिश की गई, पर चुप ही न हो। घंटों की मान-मनोव्वल के बाद उसने बताया कि इसलिए रोती है क्योंकि घर में कुछ है नहीं। गहने-कपड़ों की तो बात ही क्या, बारात को कैसे जिमाया जाएगा ?

रामदेई ने मनुहार करते हुए उससे कहा—"बेटी, घर की बड़ी मैं हूं। तू किस बात की चिंता करती है ? सारा प्रबंध हो जाएगा।"

रामदेई रोज ही भजन-पूजन करती। तुलसी को जल चढ़ाती। ब्याह का दिन पास आता जा रहा था। उसने मन ही मन ठाकुर जी से प्रार्थना की—"मेरी लाज रखना प्रभो। भगवती का ब्याह तो सिर पर आ गया है। कैसे क्या होगा ?"

ठाकुर जी उसके ध्यान में आए और बोले—"ब्याह से दो दिन पहले तू कई परातें ले लेना। तुलसी पर चढ़ाए हुए पुराने फूल तूने टोकरी में एकत्र किए हुए हैं। उन्हें परातों में बिखेर देना। उन पर चरणामृत छिड़क देना। फिर उन्हें लाल दुपट्टे से ढक देना। बस, अगले दिन जरूरत की सभी चीजें तुझे मिल जाएंगी। जनवासे में भी चरणामृत छिड़क देना, वहां भी सब प्रबंध हो जाएगा।"

अड़ोस-पड़ोस की औरतें भगवती के विवाह की चर्चा करती रहती थीं। वे मिलकर एक दिन रामदेई के पास आईं। कहने लगीं—"मांजी, भगवती का ब्याह सिर पर आ गया। तुम हो कि निश्चिंत बैठी हो। हमें बताओ कि क्या-क्या करना है ? तुम तो सारे मोहल्ले के काम निपटाया करती हो। अब अपना काज है, तो किसके भरोसे हाथ पर हाथ धरे बैठी हो ?"

रामदेई बोली—"मुझे तो ठाकुर जी का ही भरोसा है। वही हमेशा मेरी नैया पार लगाते हैं। हां, तुम अपने-अपने घर से मुझे कुछ परातें ला दो।"

देखते ही देखते अठारह-बीस परातें आ गईं। पर पड़ोसिनें यही सोच रही थीं कि रामदेई इनका करेगी क्या ! इसके घर में तो आटा, मैदा, चावल, चीनी, घी आदि कुछ भी नजर नहीं आ रहा।

उसी शाम को रामदेई ने मांज-धोकर परातें साफ कीं। फिर उनमें सूखे फूल छिटके। चरणामृत छिड़क दिया और लाल कपड़े से उन्हें ढक दिया। भीतर के कमरे में सब परातें रख दीं।

अगले दिन सवेरे ही भगवती ने कमरा खोला। लाल कपड़ा उठाया, तो देखती ही रह गई। किसी परात में जेवर जगमगा रहे थे, किसी में कीमती कपड़े। एक परात में चांदी के रुपए भरे थे। तरह-तरह की मिठाइयां-पकवान भी परातों में थे। एक कोने में गृहस्थी के नए-नए बर्तनों का ढेर लगा था। भगवती को आंखों देखे पर भी विश्वास नहीं हो रहा था। वह हर चीज को छू-छूकर देखने लगी। फिर यकायक जोर-जोर से बोली—"बड़ी मां, बड़ी मां, यहां आओ। देखो तो यहां क्या-क्या रखा है।"

रामदेई वहां आई। उसने हाथ जोड़ और आंखें

बंद कर ठाकुर जी को धन्यवाद दिया। पोती का ब्याह ऐसे ठाठ-बाट से किया कि लोग देखते ही रह गए। बारात की जोरदार आवभगत हुई।

पोती की विदाई का समय आ गया। रामदेई ने भगवती को गले लगाते हुए कहा—"बेटी, ठाकुर जी का नाम जपना न छोड़ना। तुलसी पर जल चढ़ाना और भजन-पूजन का नित-नियम न तोड़ना।"

भगवती बोली—"पर बड़ी मां, यहां तो तुम भजन-कीर्तन सुनती थीं। तुम पूजा-पाठ में विश्वास करती हो। सासरे में कोई सुने या न सुने। न जाने वहां काम-काज से फुर्सत मिले या न मिले।"

रामदेई बोली—"बेटी, तुलसी पर जल अवश्य चढ़ाना। वहीं एक लुटिया रख दिया करना। घर का काम-काज करते-करते उसी को भजन-कीर्तन सुनाती रहना।"

भगवती ससुराल में पहुंच गई। सचमुच ससुराल में वह हर समय काम-धंधे में लगी रहती। लेकिन दादी की सीख भी उसने याद रखी। वह हर रोज तुलसी जी के पौधे पर जल चढ़ाती। फिर वहां लुटिया रख देती। भजन और जाप करती रहती और घर के धंधे में लगी रहती।

परिवार के सभी लोग भगवती से खुश थे। एक दिन उसके ससुर ने सास से कहा—"क्यों भागवान, बहू कैसी है? दिन भर काम-काज तो खूब करती है।"

सास बोली—"वैसे तो सब ठीक है, पर उसकी एक खराब आदत है। हर समय कुछ बड़बड़ाती-सी रहती है। कुछ पूछो तो दो बार कहना पड़ता है। लगता है, मानो खोई हुई हो।"

ससुर बोली—"अरे, वह अच्छे घर की बेटी है। इतना दान-दहेज दिया है उसकी दादी ने! शायद अधिक काम करने की आदत न हो। कल से तुम भी उसका हाथ बंटा दिया करो।"

दूसरे दिन सास ने बहू से पहले उठकर सुबह ही काफी काम निबटा दिया। भगवती सोकर उठी और देखा, तो सास से बोली—"मां जी, मुझ से क्या गलती हो गई? आपने खुद सारा काम कर डाला।"

सास बोली—"बहू, काम करते-करते तू इतना बड़-बड़ किया करती है। मैंने सोचा, तेरा दिल क्यों दुखाऊं? मैं खुद ही काम कर लिया करूंगी।"

भगवती बोली—"मां जी, मैं किसी को कोई बुरा-भला नहीं कहती। मैं तो राम नाम लिया करती हूं।"

सास गुस्से से बोली—"अरी, मेरे यहां ईश्वर का दिया सब कुछ है। तुझे 'हे राम, हे राम' करने की क्या जरूरत है?"

भगवती चुप हो गई। वह चुप रहती। भजन छूट जाने से दुखी रहने लगी।

एक दिन रामदेई को सपना आया कि पोती ने भजन करना छोड़ दिया है। वह सूखकर कांटा हो रही है। बस, रामदेई ने दूसरे दिन ही पोते से कहा—"अरे, तेरी बहन को ससुराल गए बहुत दिन हो गए। उसे जाकर ले आ। कुछ दिन यहां रहेगी।"

अशोक बहन की ससुराल गया। वहां पहुंचा, तो सामने ही सास दिखाई दी। अशोक ने उसे राम-राम की। दूसरे लोगों को भी राम-राम की। सास शायद चिढ़-सी गई। बोली—"तुम्हारे घर में सब राम-राम की रट लगाए रहते हैं क्या? यह कैसा दिखावा करते हो?"

अशोक ने उत्तर नहीं दिया। वह भगवती को विदा

कराकर घर ले आया ।

भगवती दादी के पास रहकर पहले की तरह भजन-पूजन करने लगी । दादी खुश, पोती भी खुश ।

उधर भगवती की ससुराल में चोरी हो गई । जिस काम में भी हाथ डालते, उसी में घाटा हो जाता । घर में तंगी होने लगी । एक दिन भगवती के ससुर ने पत्नी से कहा—"अजी, देख रही हो, तुमने बहू को पीहर भेज दिया । वह तो लक्ष्मी थी । उसके साथ घर की बरकत ही चली गई ।"

सास ने लाला जी की हां में हां मिलाई । बोली—"गलती मेरी ही है ।" फिर आवाज देकर बेटे को बुलाया । बोली—"चरत बेटे, बहू को गए काफी दिन हो गए हैं । कल जाकर उसे ले आ ।"

चरत भगवती के मायके पहुंचा, तो वह अपनी दादी को भजन सुना रही थी । चरत को कुछ अच्छा न लगा ।

रामदेई ने दामाद का भरपूर स्वागत किया । भगवान की कृपा से अब घर में कोई कमी न थी । मगर चरत को कुछ अच्छा नहीं लग रहा था ।

दूसरे दिन रामदेई ने भारी मन से भगवती को विदा कर दिया । रास्ते भर चरत भगवती को नसीहतें देता रहा,भगवती चुपचाप सुनती रही । बोली कुछ नहीं । घर आ गया । चरत ने किवाड़ खटखटाए । भगवती की सास ने किवाड़ खोले । भगवती ने सास के चरण छुए और अंदर जाने लगी । सास ने पुकारा—"रुक तो जरा ।"

भगवती रुककर सास की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखने लगी ।

सास ने कहा—"पैर तो तूने छू लिए । मुंह से भी तो कुछ बोल !" फिर भगवती को असमंजस में पड़ी देख, स्वयं बोली—"मां जी, राम-राम नहीं कह सकती !"

भगवती ने अचरज से सास को देख, चरत को देखा । फिर दौड़कर सास के पैर एक बार फिर छूना चाहती थी, मगर सास ने उसे बीच ही में रोक, कलेजे से लगा लिया । ●

उतरी आकाश से

—जगमलसिंह

शरद ऋतु की चांदनी रात थी । आकाश में बादल नहीं थे । चंद्रमा अपनी किरणों से पृथ्वी पर प्रकाश बिखेर रहा था । चांदनी में नहाकर पृथ्वी की शोभा दुगनी हो गई थी । आकाश की एक छोटी-सी तारिका भी पृथ्वी के सौंदर्य को निहार रही थी । इस शोभा को देखकर, वह बहुत खुश हो रही थी । पृथ्वी पर घर-घर के खुले आंगन में, चबूतरों पर बच्चे दादा-दादी के पास बैठकर कहानियां सुन रहे थे । बालकों के प्रति बड़ों का दुलार-प्यार देखकर, तारिका के मन में भी पृथ्वी पर उतरने की इच्छा प्रबल हो उठी । वह अपनी इच्छा को दबा नहीं सकी । धीरे-धीरे वह गगन से उतरने लगी । एक बड़े से वृक्ष के ऊपर आकर वह रुक गई । सोचने लगी—'कहां उतरूं ?'

इधर पृथ्वी की ओर आती हुई तारिका को देखकर, मनुष्य आश्चर्य चकित थे । कोई कह रहा था— "यह तो अपशकुन है । कोई भारी संकट आने वाला है ।" कुछ लोग ऐसे भी थे जो कह रहे थे कि इसके पूंछ नहीं है, इसलिए यह अपशकुनी नहीं है । यह तो मंगल भविष्य का संकेत है, किंतु सभी को कौतूहल हो रहा था । सभी उसकी ओर देख रहे थे ।

कौतूहलवश सभी दौड़कर, वृक्ष के नीचे जाकर खड़े हो गए । आखिर तारिका ने धीमी, स्नेहपूर्ण आवाज में कहा—"भाइयो ! मुझे पृथ्वी पर बसने वाले लोगों से अपार स्नेह है । मैं आकाश से तुम्हें देखा करती थी । आज मन नहीं माना, तो मैं अपना तारा मंडल छोड़ आई हूं । मैंने अपना घर,आकाश भी त्याग दिया है । अब मैं पृथ्वी पर ही रहूंगी ।"

तारिका इतना कहकर चुप हो गई । सुनने वाले
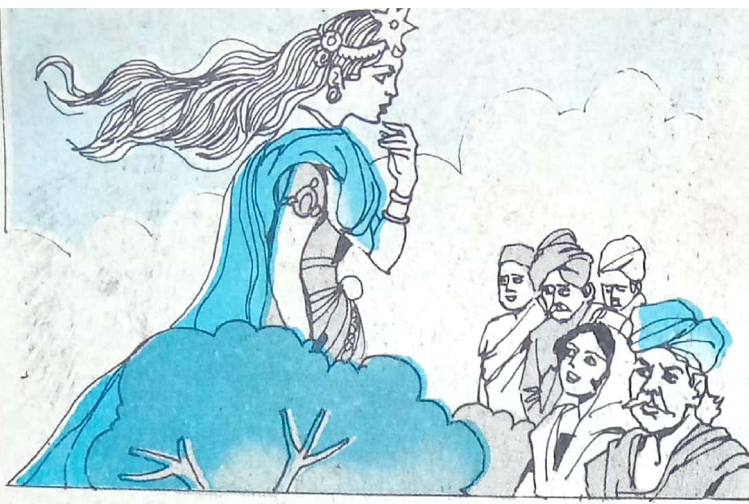
सभी लोग अवाक थे। उनकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि वे क्या कहें ? हां, सभी उसका स्वागत तो करना चाहते थे। उनके चेहरों पर हर्ष का भाव दिखाई दिया। उस भाव को तारिका ने भी पढ़ लिया।

वह फिर कहने लगी— "मुझे पृथ्वी पर चांदी की थाली-से चमकते पानी भरे जलाशय बहुत अच्छे लगते हैं। वनों की हरियाली देखकर मेरी आंखों को शीतलता मिलती है। पृथ्वी के खेतों, वनों और पर्वतों पर खिलने वाले अनगिनत फूलों की तरह-तरह की खुशबू से मेरा मन नाच उठता है। पक्षियों के मधुर गीत सुनने को मेरे कान आतुर रहते हैं। बालकों की मधुर-मधुर मुसकान पर मेरा हृदय न्योछावर है। बड़ों का बच्चों के प्रति प्रेम देखकर, मेरे मन में भी वैसा ही स्नेह पाने की हूक उठती है। अब मैं पृथ्वी पर उतरूंगी। आप लोग बताइए, मैं कहां रहूं !"

इतना सुनकर सब प्रसन्न हो गए। आपस में एक-दूसरे से विचार करने लगे। कौन-सी जगह बताई जाए। कोई कह रहा था कि तारिका के लिए सामने वाला पर्वत ठीक है। कोई कह रहा था कि इसको गांव में ही रहने को कहा जाए। कोई कह रहा था कि इसको वन प्रिय हैं। अतः यह निर्जन वन में रह ले। जितने मुंह उतनी बातें। बहस छिड़ गई थी। तारिका को उनकी यह बहस अच्छी नहीं लगी।

उसने कहा—"मैं निर्जन स्थान में रहने नहीं आई हूं। मैं आप लोगों के आस-पास रहना चाहती हूं। मैं बालकों को हंसते-खेलते देखना चाहती हूं। मैं बालकों में हिलमिल कर, उनके साथ आनंद मनाना चाहती हूं।"

यह सुनकर गांव के मुखिया के मन में विचार आया कि गांव की बगल में ही स्वच्छ पानी का सरोवर है। सरोवर का जल संगमरमर जैसा निर्मल है। इस सुंदर और मनोहर जलाशय की लहरों में, रात को चंद्रमा का प्रतिबिम्ब आंख-मिचौनी खेलता है। तारिका के निवास के लिए यह जलाशय उत्तम स्थान है। इसके किनारे के मैदान में बच्चे जैसे ही फुरसत पाते हैं, खेलते रहते हैं, भागते-दौड़ते हैं।

मुखिया ने तारिका से कहा—"तुम्हारे लिए मेरे विचार से गांव के जलाशय से अधिक उपयुक्त कोई स्थान नहीं हो सकता। तुम इसी में रहो। सभी लोगों को जलाशय पर नहाने-धोने तथा पानी भरने आते हुए देख सकोगी। बच्चे किनारे पर खेलते रहेंगे। तुम उनके आनंद में भागीदार हो सकोगी।"

यह कहकर मुखिया ने प्रश्न सूचक दृष्टि से तारिका की ओर देखा। तारिका को मुखिया का प्रस्ताव पसंद आया। वह बोली—"ठीक है, मैं सरोवर में रहूंगी।" यह कहकर वह सरोवर में उतर गई। सरोवर के जल में समाती हुई तारिका को सभी गांव वालों ने देखा। फिर सब अपने-अपने घर चले गए।

दूसरे दिन संध्या समय लोगों ने जलाशय में एक सुंदर सफेद-सफेद पंखुरियों वाला पुष्प देखा। सरोवर में फैले हरे पत्तों के पास ही ऊंची शाखा पर तब से कुमुदिनी के फूल खिलते हैं। इधर तारे आकाश में टिमटिमाते हैं और कुमुदिनी के फूल जलाशय में खिलते हैं। मंद हवा के झोंकों और लहरों के थपेड़ों से ये जलाशय में मस्त होकर नाचते हैं। तारिका पृथ्वी पर उतर तो आई परंतु चंदा मामा के प्रति उसका प्रेम कम नहीं हो सका। चंद्रमा के उदय के साथ ही ये फूल खिल उठते हैं। प्रातःकाल जब चंद्रमा विदा होता है, तो कुमुदिनी भी मुरझा जाती है। कृष्ण पक्ष में जब चंद्रमा शीघ्र चला जाता है, तो कुमुदिनी भी अपनी पंखुरियों को सिकोड़ लेती है। इसी प्रकार वर्षा ऋतु में जब कुमुदिनी का प्रिय चंद्रमा मेघों की ओट में छिप जाता है, तो वह भी बहुत दुखी हो जाती है और रात आने पर भी खिलती नहीं। ●

लाल ही लाल

— डा. ओमप्रकाश सिंहल

हजारों साल पुरानी बात है। चीन में नीआन नाम का एक राक्षस रहता था। उसके सिर पर एक सींग था। शक्ल एकदम डरावनी। यों तो वह सारा साल पाताल लोक में रहता, किंतु सर्दियां समाप्त होने के बाद और वसंत शुरू होने के समय वह पृथ्वी पर जरूर आता। आते ही तबाही मचा देता। आदमी या जानवर जो भी दिखाई देता, उसे मार डालता। फिर जोर से हंसता। अपना पेट भरता और डरावनी डकार लेता। गांव के लोग उस दिन से पहले वाली रात को बच्चों, बूढ़ों, स्त्रियों और ढोर-डंगरों को साथ लेकर पहाड़ों में जा छिपते।

एक बार की बात है। आड़ू वाले गांव के लोग राक्षस के आने के डर से पहाड़ पर जाने की तैयारी कर रहे थे। उस गांव में अचानक एक बूढ़ा भिखारी आ पहुंचा। चांदी-सी सफेद दाढ़ी और चमकती हुई आंखें। कंधे पर थैला, हाथ में लाठी। ठक-ठक करता और हाथ फैलाता गांव के एक कोने से दूसरे कोने तक भटक रहा था। लेकिन कोई उसकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देख रहा था। अगले ही दिन तो भयानक राक्षस आने वाला था। सब लोग गांव छोड़कर पहाड़ पर जाने की जल्दी में थे। कोई सामान बांध रहा था, कोई दरवाजे-खिड़कियां बंद कर रहा था। कोई ताला लगा रहा था, कोई पशुओं को हांक रहा था। कहीं घोड़े हिनहिना रहे थे। कहीं बैलगाड़ियां खड़ी थीं। कहीं लोग जोर-जोर से चिल्ला रहे थे— "जल्दी करो, जल्दी करो!" ऐसे में भला उस बूढ़े आदमी की ओर कौन देखता?

बूढ़ा आदमी इधर से उधर दौड़ता हुआ गांव के पूर्वी छोर पर बनी एक झोंपड़ी के पास आकर रुक गया। उस झोंपड़ी में एक गरीब बुढ़िया रहती थी, हमेशा दूसरों की चिंता करने वाली। उसने बूढ़े को खाने-पीने का सामान दिया। फिर कहा— "जल्दी से पी लो। फिर मेरे साथ पहाड़ पर चले चलो। कल यहां दुष्ट राक्षस आने वाला है। उससे बचने के लिए हम सब पहाड़ पर जा रहे हैं।"

बूढ़े ने अपनी सफेद दाढ़ी हिलाते हुए कहा— "अगर तुम मुझे रात भर अपने घर में टिकने दो, तो मैं उस राक्षस को मार भगाऊंगा।" बुढ़िया यह सुनकर चौंकी। फिर उस बूढ़े की ओर टकटकी लगाकर ऊपर से नीचे तक देखा। चेहरा खूब दमक रहा था। आंखों में अजीब-सी चमक थी। वह मामूली आदमी नहीं लगता था। फिर भी उसने बूढ़े से अपने साथ चलने का कई बार आग्रह किया। लेकिन बूढ़ा नहीं माना। उसने कोई जवाब भी नहीं दिया। बस, केवल मुसकराता रहा। बेचारी बुढ़िया क्या करती! वह उसे घर पर अकेला छोड़कर गांव के दूसरे लोगों के साथ पहाड़ पर चली गई।

आधी रात का समय था। सर्वभक्षी राक्षस गांव में

घुसा। उसने देखा कि पिछले सालों की तुलना में इस साल गांव का वातावरण कुछ अलग-सा था। पिछले सालों की तरह इस बार गांव में घुप अंधेरा न था। गांव के पूर्वी छोर पर एक घर में खूब रोशनी हो रही थी। यह देखकर उसे बड़ा अचम्भा हुआ। दिल में कुछ खुशी भी हुई। वह अजीब-सी आवाज में जोर से चीखा। फिर दहाड़ता हुआ उस घर की ओर पहुंचा।

उसने देखा कि दरवाजे पर कोई लाल-सी चीज चिपकी हुई थी। वह थोड़ा घबराया। पर उसने हिम्मत न हारी। दरवाजे पर हाथ रखा। अभी वह उसे धकेलने ही वाला था कि उसे अचानक कुछ जोरदार धमाके सुनाई दिए। वह डर से कांप उठा। एक भी कदम आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। अचानक दरवाजा अपने आप खुल गया। राक्षस ने देखा कि आंगन में एक अलाव जल रहा था। आग की जोरदार लपटें उठ रही थीं। अलाव के पास एक आदमी लाल रंग के कपड़े पहने बैठा था। लाल रंग, धमाकेदार आवाजों और आग की लपटों से उसे बेहद डर लगता था। इसलिए वह वहां से फौरन भागा।

अगला दिन नए साल के पहले महीने का पहला दिन था। लोगों को मालूम था कि राक्षस अब तक जा चुका होगा। वे अपने गांव लौट आए। सब कुछ ठीक-ठाक देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। किसी भी घर का कोई नुकसान नहीं हुआ था। बुढ़िया को सहसा उस बूढ़े आदमी का ध्यान आया। दिमाग में उसकी कही बातें घूम गईं। जब सब लोग अचरज में डूबे हुए थे, तब बुढ़िया ने उस बूढ़े आदमी की बात कह डाली।

सब लोग बुढ़िया के घर पहुंचे। उन्होंने देखा कि दरवाजे पर लाल रंग का कागज चिपका था। कमरे में मोमबत्तियां जल रही थीं। आंगन में जल रही आग में पड़े बांस के टुकड़ों से 'फटाक-फटाक' की आवाज आ रही थी। लोगों ने यह देखकर अनुमान लगाया कि वह बूढ़ा आदमी वास्तव में देवदूत था। ईश्वर ने उसे उनकी मुसीबतें दूर करने भेजा था। लाल कागज, लाल मोमबत्ती, लाल लपटें, 'फटाक-फटाक' बजने वाले बांस के टुकड़े राक्षस को भगाने के हथियार थे।

राक्षस को गांव से दूर भगाने की तरकीब जानने पर लोगों को बेहद खुशी हुई। उन्होंने तय कर लिया कि आगे से वे गांव छोड़कर पहाड़ों पर नहीं जाया करेंगे। राक्षस को भगाने के लिए इन हथियारों का प्रयोग किया करेंगे। राक्षस के भाग जाने की खुशी में सभी ने नए कपड़े पहने, नए टोप पहने, एक-दूसरे को बधाइयां दीं। धीरे-धीरे यह खबर आसपास के गांवों तक भी पहुंच गई। उन्होंने भी वैसा ही उत्सव मनाया।

तब से लेकर आज तक चीन के लोग चांद्र पंचांग के हिसाब से आने वाले पहले महीने की पहली तारीख को नए साल का त्योहार खूब धूमधाम से मनाते हैं। नए कपड़े पहनते हैं। घरों की सफाई करते हैं। सजाते हैं। रोशनी करते हैं। दरवाजों पर लाल कागज चिपकाते हैं। रात-रात भर पटाखे जलाते हैं। पड़ोसियों, दोस्तों और रिश्तेदारों को बधाई देते हैं, मिठाइयां खिलाते हैं।

(पेइचिंग से प्राप्त)
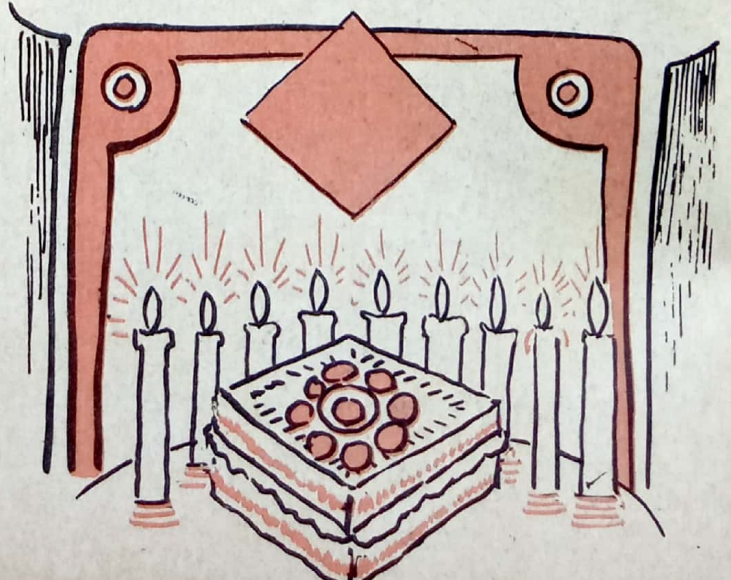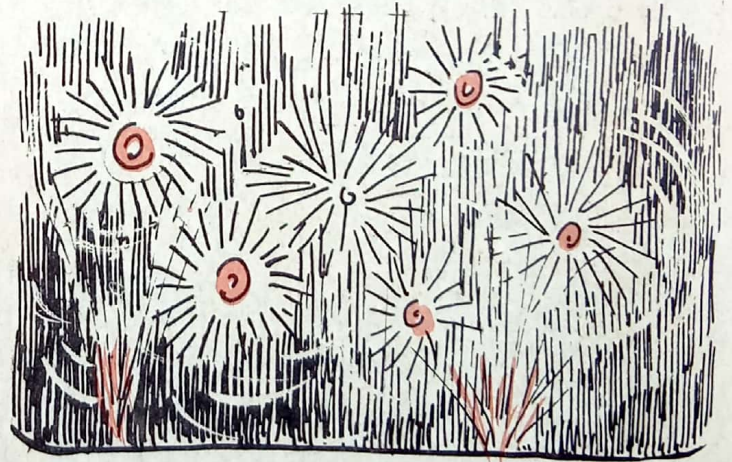
फिर-फिर पूछा

—रीता सतदेव

एक बार देवर्षि नारद भगवान विष्णु के निवास स्थान बैकुंठ गए। उन्हें आया देख, विष्णु बोले—"कहिए देवर्षि, कैसे आना हुआ ?"

"भगवन, मैं एक प्रश्न लेकर आया हूं। आपके सिवा कोई और मेरी जिज्ञासा शांत नहीं कर सकता।" —वह हाथ जोड़कर बोले। देवर्षि की बात सुन, भगवान विष्णु हंस पड़े। बोले—"आपका प्रश्न क्या है देवर्षि ?"

"भगवन, सत्संगति का फल क्या मिलता है ?"—नारद ने पूछा।

विष्णु भगवान कुछ क्षण नारद के चेहरे की तरफ देखते रहे। फिर कहा—"आप स्वयं इतने ज्ञानी हैं देवर्षि, इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।"

"मैंने बहुत विचार किया है भगवन ! पर किसी निश्चय पर नहीं पहुंच पाया। कृपया मेरे प्रश्न का उत्तर दें।" —नारद जी हाथ जोड़कर बोले।

"चलिए देवर्षि, आज मृत्युलोक घूम आएं। वहीं आपके इस प्रश्न का उत्तर भी खोज लेंगे।"—भगवान विष्णु मुसकरा उठे।

भगवान विष्णु और नारद जी दोनों मृत्युलोक आ गए। सारे रास्ते नारद जी सोचते आए कि इस बार भी विष्णुजी कहीं अपनी माया में तो नहीं उलझा देंगे। एकाएक भगवान विष्णु चलते-चलते रुक गए। नारद जी से बोले—"देवर्षि, वह सामने बहती नदी देख रहे हैं न ! उसके किनारे पर एक केकड़ा रहता है। आप यह प्रश्न उससे करें। आपको अपने प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।"

देवर्षि आश्चर्य चकित वहीं खड़े रह गए। समझ नहीं पा रहे थे कि प्रभु ने यह सब क्या कहा और क्यों कहा ? पर उनके इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए भगवान विष्णु कहां थे वहां ! कुछ सोच कर नारद जी आगे बढ़े। उस केकड़े से प्रश्न किया। पर यह क्या ! वह केकड़ा तो उनका प्रश्न सुनते ही उसी क्षण वहीं मर गया।

यह देख, नारद जी बहुत दुखी हुए। परेशान होकर वह पुनः भगवान विष्णु के पास गए। उन्हें सारी कथा सुनाई।

—"ठीक है, देवर्षि। आपने जिस जगह यह प्रश्न किया था, आज से ठीक छह मास पश्चात उसी जगह वृक्ष पर रहने वाले पक्षी से फिर यह प्रश्न करें। आपको अपने प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा।"

नारद जी भगवान विष्णु को प्रणाम कर लौट आए। छह मास बाद नारद जी ने वहीं जाकर उस वृक्ष पर बैठे पक्षी से वही प्रश्न किया। पर यह क्या ! नारद जी का प्रश्न सुन, वह पक्षी भी मर गया।

नारद जी यह देख, भगवान विष्णु के पास गए। बोले—"यह क्या पहेली है, प्रभु !"

—"क्या हुआ देवर्षि ? क्या आपको अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिला ?"

"भगवन, क्या कहूं ?" —नारद जी का स्वर पीड़ा से भरा हुआ था।

भगवान विष्णु मुसकरा उठे—"अरे देवर्षि, यह क्या ! अच्छा सुनिए, उसी नदी के किनारे एक गांव है। वहां सेठ गोपालदास के घर जाएं, मगर ठीक नौ मास पश्चात। उनके यहां जन्मा बालक ही आपकी

समस्या का समाधान करेगा।''

''जैसी प्रभु की आज्ञा।'' —देवर्षि प्रणाम कर लौट आए।

धीरे-धीरे समय बीत गया। देवर्षि नारद सेठ गोपालदास के यहां पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि पूरे घर में खुशी की लहर छाई हुई है। देवर्षि सोच में पड़ गए कि वह प्रश्न करें या न करें। कहीं फिर पहले वाली स्थिति हो गई तो? इतने में सेठ गोपालदास की नजर उन पर पड़ गई। वह उनके पास आए और हाथ जोड़कर बोले—''देवर्षि, हम कब से आपकी राह देख रहे थे। आप निःसंकोच बालक से अपना प्रश्न पूछ लें।''

नारद जी परेशान हो उठे। सोचने लगे—'सेठ गोपालदास को कैसे मालूम हुआ कि मैं आ रहा हूं उनके नवजात शिशु से प्रश्न करने?'

''इस तरह सोच-विचार न करें देवर्षि। जो प्रभु की इच्छा है, वही होगा। बालक उधर पालने में है।'' —सेठ गोपालदास ने एक तरफ इशारा किया।

नारद जी ने पालने में लेटे बालक की तरफ देखा। उसके चेहरे पर अनोखी चमक थी। नारद जी ने वही प्रश्न दोहराया, तो वह बालक बोला— ''देवर्षि, आप स्वयं इतने ज्ञानी हैं और इस छोटे से प्रश्न को नहीं समझ पाए? आपके इस प्रश्न में ही उत्तर छिपा हुआ है। आप जब पहली बार मुझसे मिलने आए, उस वक्त मैं केकड़ा था। आपके दर्शन मात्र से ही मुक्ति प्राप्त करके मैं पक्षी बना। फिर मुक्ति पाकर मैंने मनुष्य के रूप में जन्म लिया।''

बालक कुछ क्षण खामोश रहा, फिर बोला—''देवर्षि, आज पुनः आपके दर्शन पा, मैं मुक्त होकर सदा के लिए विष्णुधाम जा रहा हूं। मेरा प्रणाम स्वीकार करें।'' बालक के इतना कहते ही उसके शरीर से एक ज्योति निकली और आकाश में विलीन हो गई।

नारद जी मन ही मन भगवान विष्णु का स्मरण करते हुए, उनके दर्शन के लिए बैकुंठ की तरफ चल दिए। ●

खिली धूप

—सुनीति

बहुत समय पहले की बात है, तब सृष्टि भी नहीं बनी थी। सृष्टि का प्रारम्भ ही हुआ था। अग्नि, वायु, जल, आकाश और पृथ्वी थे। जल ने सूर्य की उपासना की। वह बहुत बरस तक सूर्य की उपासना करता रहा। अंत में सूर्य उससे प्रसन्न हो गए। उन्होंने जल से पूछा— ''कहो, तुम क्या चाहते हो?''

जल ने कहा— ''पहले आप वचन दीजिए कि जो मैं मांगूंगा, उसे आप पूरा करेंगे।''

सूर्य ने कहा— ''निस्संदेह, जो तुम मांगोगे, उसे मैं अवश्य पूरा करूंगा। तुम निर्भय होकर अपना वर मांगो।''

जल ने कहा— ''यदि ऐसा है, तो मुझे वर दीजिए कि मैं सारी पृथ्वी पर छा जाऊं।''

सूर्य ने कहा— ''तथास्तु, ऐसा ही होगा।''

तब से पृथ्वी पर जल बरसना शुरू हुआ। हजारों बरसों तक लगातार जल बरसता रहा। बरसा हुआ जल पर्वतों की छाती पर बर्फ बनकर बैठ गया। जहां अवसर मिला, वहां झरनों के रूप में फूट पड़ा। झरनों से नदियां बहने लगीं और नदियां समुद्र में जाकर गिरने लगीं। जगह-जगह झील, सरोवर और तालाब बन गए। बड़े-बड़े समुद्र बन गए। जहां देखो, वहां पानी ही पानी। सारे संसार में त्राहि-त्राहि मच गई।

यह देखकर सूर्य को गुस्सा आ गया। उनकी भृकुटि तन गई। जल ने फिर सूर्य की स्तुति करके उनको प्रसन्न किया। सूर्य की हंसी फूट पड़ी। फिर क्या था, सब जगह धूप खिल गई।

वृक्ष, वनस्पति, जलचर, थलचर, आकाशचारी सभी प्राणी जो भयंकर जलवृष्टि के कारण बेहाल हो गए थे, फिर से स्वस्थ हो गए।

सृष्टि प्रकृति के सुंदर रंगों-उमंगों के साथ, ठीक चलने लगी।

(टकाका)
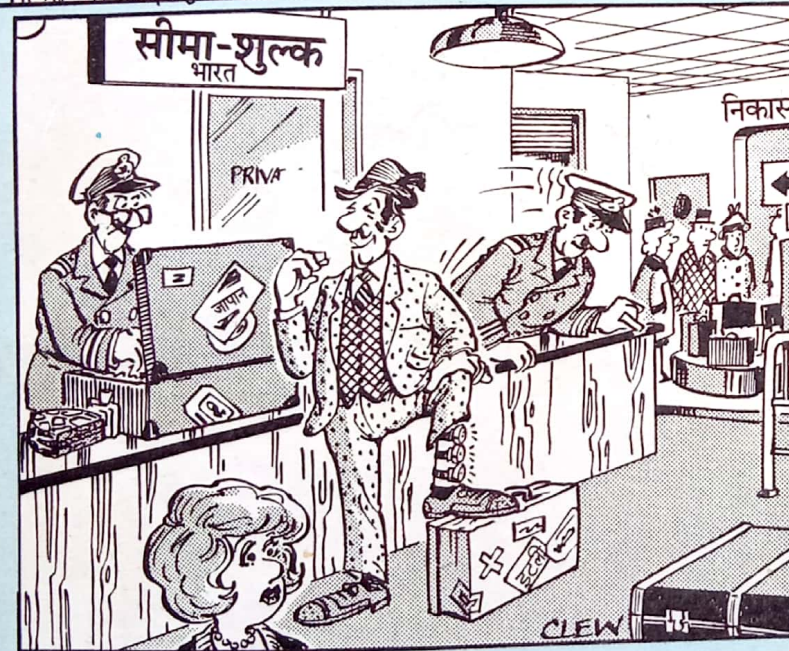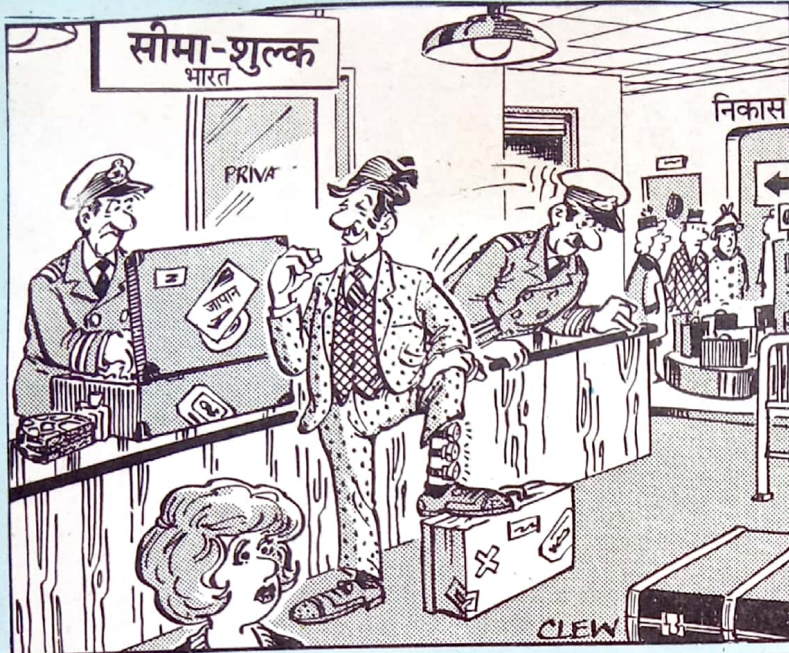
आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।

चित्र पहेली : १२२

हमने होली खेली : विषय पर चटक रंगों से एक चित्र बनाइए। उसके पीछे अपना **नाम, आयु** और **पता साफ-साफ लिखकर १५ जनवरी '९४** तक **नंदन कार्यालय**में भेज दीजिए। चुना गया चित्र प्रकाशित किया जाएगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : अप्रैल '९४ अंक

कहानी लिखो : १२२

सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे **१५ जनवरी** तक **कहानी लिखो-१२२, नंदन, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-१**के.पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी प्रकाशित होगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : मार्च '९४ अंक

दिल्ली में विश्व व्यापार मेला लगा। हमारे फोटोग्राफर ने विभिन्न मंडपों की बहुरंगी छवियों के चित्र लिए। उनमें से कुछ प्रस्तुत हैं—

ठाठ से जियो : **महाराष्ट्र**

सजावट के रंग

सीपियों के डायलवाली घड़ी : **प. बंगाल**

गुड़िया: **उड़ीसा**

शीशे पर राधा कृष्ण : तमिलनाडु

लोक कथाओं का नायक : लद्दाख
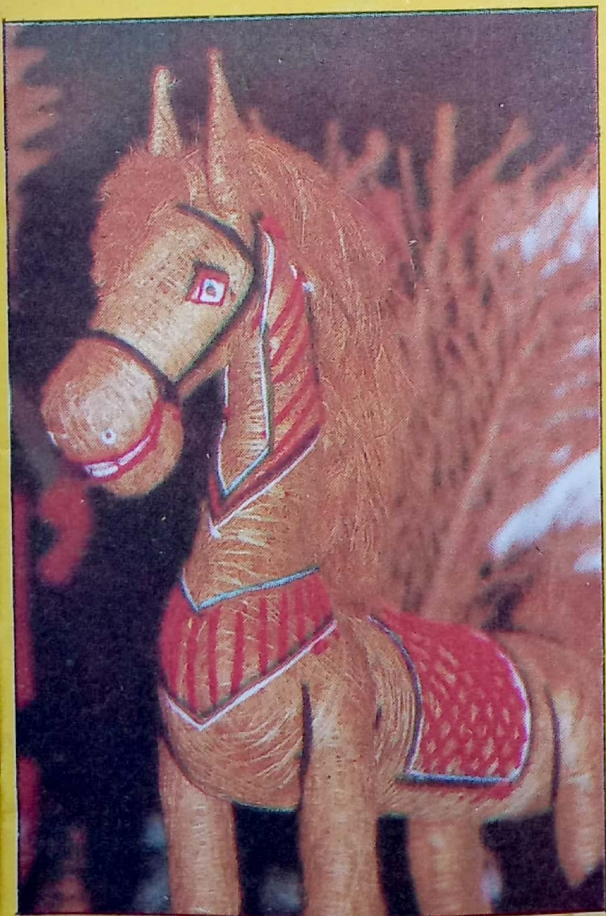
खर-पतवार से बना घोड़ा : मिजोरम

घुड़सवार : मणिपुर

चित्र : राजेन्द्र कुमार वधवा
शमशेर अ. खान
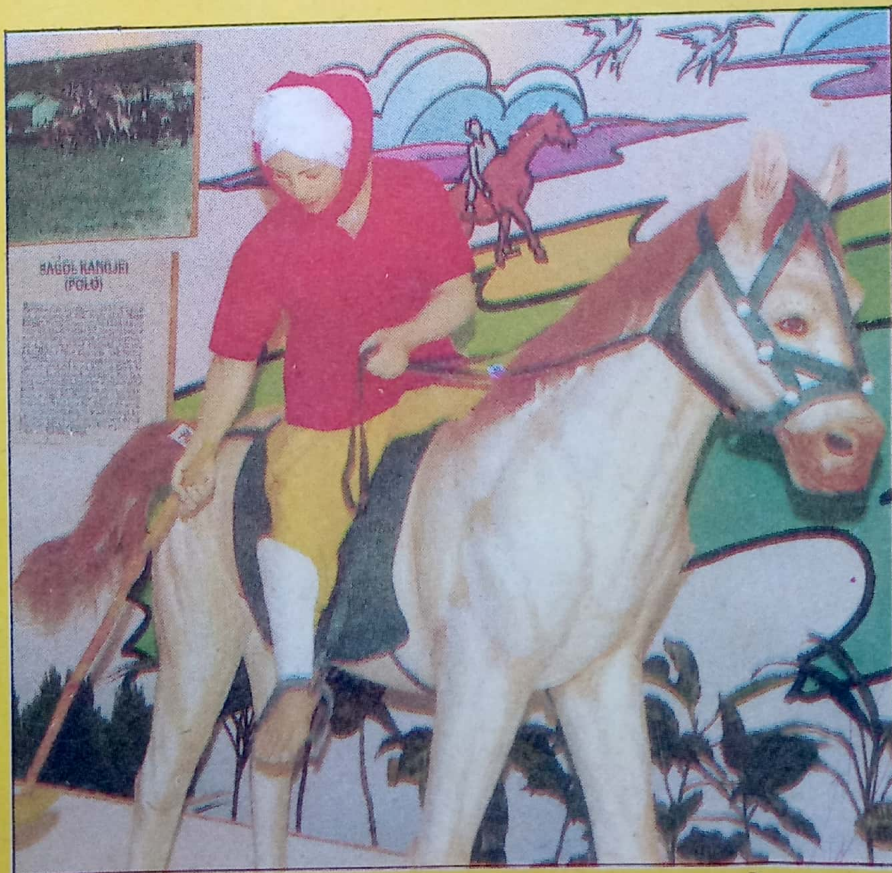
अकेला सफर

विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय

एक था शंकर। खेलकूद का शौकीन। पेड़ पर चढ़ने, तैराकी, घुड़सवारी सब में कुशल था। भूगोल की पुस्तकें पढ़ने का तो जैसे नशा था उसे। एक बार उसे एक पुस्तक हाथ लग गई। नाम था 'चांद पर्वत।' उसे लिखा था एक जर्मन सैलानी ने। शंकर ने पुस्तक को कई-कई बार पढ़ा। वह सोचता रहता— 'जब भी मौका मिलेगा,मैं भी 'चांद का पहाड़' देखने जाऊंगा। वह पर्वत अफ्रीका में कहीं था।

उन्हीं दिनों शंकर के पिता की तबीयत खराब हो गई। इलाज में काफी पैसा खर्च हो गया। घर की स्थिति बिगड़ गई। तब तक शंकर कुछ काम नहीं करता था। एक दिन मां ने कहा—"अब कोई नौकरी खोज लो।" शंकर भी घर की हालत समझता था।

शंकर के एक परिचित अफ्रीका के मोम्बासा में रहते थे। वहां रेलवे में नौकरी करते थे। वहां नई रेल लाइन बिछाई जा रही थी। शंकर ने उन्हें पत्र लिखा। उत्तर आया—'तुम यहां आ जाओ। नौकरी की व्यवस्था हो जाएगी।'

शंकर विदेश जाने की संभावना से खुश हो गया। माता-पिता ने भी उसे जाने की अनुमति दे दी। कुछ दिन बाद शंकर मोम्बासा जा पहुंचा। उसे रेलवे

कम्पनी में काम मिल गया। वहां उन लोगों को घने वन के बीच रहना पड़ता था। चारों ओर ऊंची-ऊंची घास उगी थी। कोई भी व्यक्ति वहां भटक जाए, तो प्यास से तड़पकर मर सकता था। वहां शेर भी थे। शंकर को बता दिया गया था कि वह अकेला न घूमे। और जब भी बाहर निकले, तो उसके हाथ में बंदूक जरूर हो।

शंकर की दोस्ती तिरुमल अप्पा से हो गई थी। दोनों साथ-साथ घूमते। पर एक दिन तिरुमल को शेर ने अपना शिकार बना लिया। एक बार शेर ने शंकर के घर में भी घुसना चाहा, पर शंकर ने सावधानी और साहस से काम लिया। शेर भाग गया। एक बार फिर शेर आया। इस बार भी शंकर बच गया, पर उसका घोड़ा मारा गया।

इसके बाद शंकर को एक छोटे से स्टेशन पर स्टेशन मास्टर बनाकर भेज दिया गया। वहां एक गाड़ी सुबह जाती थी और एक शाम को लौटती थी। शंकर ही वहां अकेला कर्मचारी था। पहली रात को शंकर ने स्टेशन के कमरे से बाहर एक शेर को घूमते हुए देखा। वहां विषैले सांप भी बहुत थे। एक दिन शंकर रसोईघर में एक सांप की चपेट में आते-आते बचा। रात में कोई आवाज सुनकर उसकी नींद टूट गई। उसने टार्च जलाई, तो दीवार पर एक भयानक विषधर दिखाई दिया। शंकर घबरा गया पर उसने साहस न छोड़ा और किसी तरह कमरे से बाहर निकल आया।

वहां पानी का संकट था। पीने का पानी सुबह की गाड़ी से मंगवाना पड़ता था। स्टेशन के आसपास वाले सारे कुएं सूखे हुए थे। शंकर को पता चला कि वहां से थोड़ी दूर एक तालाब है। एक दिन शंकर तालाब की ओर गया, तो उसे एक आदमी दिखाई दिया—वह भूख-प्यास से बेहाल भटक रहा था।

शंकर उसे अपने साथ ले आया। एक-दो दिन में वह भला-चंगा हो गया। पता चला-यह एक पुर्तगाली खोजी था। उसका नाम था ड्यूगो अल्बर्ज। वह एक अन्य खोजी के साथ चांद पर्वत के वनों में घूमता रहा था। फिर पता नहीं, उसका साथी कहां चला गया। अब अल्बर्ज अकेला था। उसे पहाड़ों में चांदी की खान का पता चला था, लेकिन वह रास्ता भूल गया था। अल्बर्ज ने शंकर से कहा—"आओ, हम दोनों चांदी की खान का पता लगाते हैं।"

साहसी और रोमांचप्रिय शंकर झट तैयार हो गया। उसने रेल कम्पनी की नौकरी छोड़ दी और अल्बर्ज के साथ चल दिया।

कुछ दिन पैदल यात्रा के बाद उन्होंने स्टीमर से टांगानिका नदी पार की। फिर रेल से काबालो पहुंचे। वहां एक पुर्तगाली बदमाश से शंकर की मुठभेड़ हो गई। वह नए आने वालों को लूट लेता था। लेकिन अल्बर्ज के कारण शंकर का बाल भी बांका नहीं हुआ।

रास्ते में एक स्थान पर उन्होंने तम्बू लगा लिया, फिर शंकर पानी की तलाश में निकल पड़ा। कुछ देर भटकने के बाद जब पानी नहीं मिला, तो वह लौट पड़ा। अब शंकर को पता चला कि वह रास्ता भूल गया है। पूरे चौबीस घंटे तक भूखा-प्यासा वन में भटकता रहा। तभी उसे अल्बर्ज ने देख लिया। वह शंकर की खोज में ही निकला था। अल्बर्ज ने कहा—"तुम भाग्यवान हो, जो बच गए।"

दो महीने तक वे अंगोला और रोडेशिया के वनों में यात्रा करते रहे। फिर एक पर्वत माला की तलहटी में जा पहुंचे। रास्ते में जंगली जानवरों और खूंख्वार आदिवासियों से कई बार मुठभेड़ें हुईं, पर दोनों जैसे-तैसे बच निकलते रहे। यह पर्वत था रिक्टसवेल्ड। इसी को चांद पर्वत के नाम से पुकारा जाता था।

विभूति भूषण वंद्योपाध्याय (१८९४-१९५०)। इनका जन्म चौबीस परगना के मुरातिपुर गांव में हुआ था। यह अध्यापक थे। 'पथेर पांचाली' सबसे लोकप्रिय रचना है। कई उपन्यास, कहानियां और बच्चों के लिए उपन्यास लिखा। कई राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। यहां चांदेर पहाड़' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं। —सं.

वहां दूर-दूर तक घने वन थे। वहीं अल्बर्ज को पिछली यात्रा में चांदी की खान का पता चला था, लेकिन अब अल्बर्ज भूल गया था कि वह स्थान कौन-सा था ?

दोनों चांदी की खान खोजते हुए भटक गए। उनका भोजन और पानी भी समाप्त हो गया। जैसे-तैसे वे समय बिताते रहे। जहां शाम हो जाती, वे तम्बू लगाकर आसपास आग जला देते। इस तरह खूंख्वार वन्य जीव तम्बू से दूर ही रहते थे। दोनों हर समय अपनी बंदूकें भरी रखते थे।

एक सुबह शंकर की आंख खुली, तो उसने पाया सब तरफ घना कुहरा छाया हुआ है। लगता था-जैसे आंखों के सामने सफेद परदा तन गया है। बाद में सूर्य निकला, तो कुहरा छंट गया। तभी सामने ऊंचा पर्वत शिखर दिखाई दिया। उसकी चोटी जैसे अकाश से बातें कर रही थी। अब समस्या उसे पार करने की थी। वे पर्वतमाला को पार करने के लिए पांच दिन तक भटकते रहे। तब कहीं जाकर रास्ता मिला।

शंकर ने महसूस किया, जैसे-जैसे वे आगे जा रहे थे, वन और भी घने होने लगे थे। ऊपर सूरज चमक रहा होता लेकिन वन में अंधेरा छाया रहता। घने पेड़ों के कारण धूप नीचे तक नहीं आ पाती थी। वहां चट्टानें गीली और काई से भरी थीं। रह-रह कर दोनों फिसल जाते। फिर उठकर बढ़ चलते। कहीं-कहीं रास्ते के दोनों ओर गहरी खाइयां थीं। वहां जरा-सा पैर फिसलते ही गहरे खड्ड में गिरने का डर था। वे बहुत धीरे-धीरे संभल–संभलकर बढ़ रहे थे।

शंकर को इतनी कठिन चढ़ाई का अभ्यास नहीं था पर अपना डर वह अल्बर्ज के सामने प्रकट नहीं कर रहा था। वह यही दिखाना चाहता था कि भारतवासी गोरों से किसी भी बात में पीछे नहीं थे।

उन वनों में शंकर ने दाढ़ी-मूंछ वाले विचित्र बंदर देखे। अल्बर्ज ने कहा—"ये बंदर नहीं, बंदरियां हैं। क्लोबस प्रजाति के नर बंदरों के मुंह पर बाल नहीं होते। हां, बंदरियों के चेहरे पर दाढ़ी-मूंछ होती हैं।" यह सुनकर शंकर हंस पड़ा।

एक शाम वन के बीच खुली जगह में शंकर ने तम्बू लगा दिया। रात में शंकर को लगा-जैसे कहीं ढोल बज रहे हैं। वह चकित हो उठा, तब अल्बर्ज ने उसे बताया कि यह वनमानुसों द्वारा छाती पीटने की आवाज है।

साढ़े सात हजार फीट की ऊंचाई पर उन्होंने एक विचित्र जीव को देखा। वह विशालकाय वनमानुस जैसा था। जमीन पर उसके पंजों के निशान देखने से पता चला, उसके एक पंजे में केवल तीन अंगुलियां थीं। अल्बर्ज हमेशा डरा-डरा रहता। उसने शंकर से कहा—"अगर उस जीव ने हमें देख लिया, तो फिर जीवित नहीं बच सकेंगे। मेरे एक साथी की मृत्यु इसी के हाथों से हुई थी।" पर सौभाग्य से वह भयानक वनमानुस उनके डेरे की तरफ नहीं आया। वे सकुशल आगे निकल गए।

एक दिन शंकर जंगल में शिकार की खोज में गया तो फिर रास्ता भूल गया। वहां पेड़ों के बीच एक मीठी सुगंध फैली थी। सूंघने से शंकर पर बेहोशी छाने लगी। वह एक जगह गिर पड़ा। इस बार भी अल्बर्ज ने उसे ढूंढ़ निकाला और सुरक्षित तम्बू में ले गया।

उसने कहा—"शंकर, वह जंगल विषैली लताओं का है। उन लताओं का रस आदिवासी अपने तीरों की नोक पर लगाते हैं। फिर शिकार करते हैं।"

एक बार वे जंगल की भूल भुलैया में फंस गए और कई दिन तक एक जगह घूमते रहे। उन्हें बाहर निकलने का रास्ता न मिला। उनका भोजन तथा कारतूस भी अब खत्म हो चले थे।

रात में एकाएक शंकर की नींद टूट गई। देखा बहुत सारे जंगली जानवर दौड़े जा रहे थे। तभी धरती कांप उठी और जगह-जगह दरारें पड़ गईं। उन्होंने देखा-पर्वत शिखर से आग निकल रही थी। हवा में गंधक की गंध थी। अल्बर्ज ने कहा—"तम्बू समेट कर भाग चलो। ज्वालामुखी फट रहा है।" तभी ऊपर से जलते हुए पत्थर गिरने लगे। चारों ओर आग की लपटें उठने लगीं। दोनों भागने लगे। दूसरे दिन भी ज्वालामुखी वैसे ही आग उगलता रहा, फिर एक भयानक आवाज हुई। शंकर ने देखा-पर्वत शिखर का एक हिस्सा उड़कर बिखर गया।

दोनों मित्र फिर भाग खड़े हुए। रात को सोते समय शंकर को अल्बर्ज की चीख सुनाई दी। फिर गोली चलने की आवाज आई। शंकर ने देखा-अल्बर्ज घायल पड़ा था। उसने बताया—"मित्र, मुझ पर उसी विशाल वनमानुस ने हमला किया था। मेरे गोली चलाने से वह भाग गया।"

शंकर ने देखा, अल्बर्ज बुरी तरह घायल था। सारे शरीर से खून बह रहा था। शंकर ने अल्बर्ज की मरहम पट्टी की, लेकिन वह अल्बर्ज के प्राण नहीं बचा पाया। अब वह उस बीहड़ और वन्य जीव प्रदेश में एकदम अकेला रह गया था।

वह सामान लेकर यात्रा पर निकल चला। रास्ते में वह एक गुफा में घुस गया। टार्च की रोशनी में बढ़ता गया। गुफा के अंदर कई रास्ते थे। काफी आगे बढ़ने के बाद जब वह लौटने लगा, तो पता चला कि रास्ता भूल गया है। उसे जोर की प्यास लग रही थी। डर भी सता रहा था। कई दिन बाद वह जैसे-तैसे गुफा से बाहर निकल सका।

आगे था नुकीली घास का मैदान। उसके बाद रेगिस्तान नजर आया। दूर-दूर तक कोई नहीं था। न पानी मिला, न भोजन। दिन में उसे भयानक गर्मी सताती, तो रात में बेहद ठंड पड़ती। वहीं एक गुफा में एक शव पड़ा मिला। शायद वह भी शंकर की तरह कोई खोजी रहा होगा। वहीं कुछ हीरे पड़े मिले। एक डायरी भी पड़ी थी।

शंकर ने हीरे उठा लिए, फिर डायरी लेकर बढ़ चला। अब वह बेहद थक चुका था। निराशा उसे घेर रही थी। शंकर सोच रहा था—'मैं कभी जीवित नहीं निकल सकूंगा यहां से।'

एक दिन उसने आकाश में वायुयान देखा। कपड़ा हिलाकर इशारा किया, पर वायुयान दूर चला गया। फिर एक गोली की आवाज आई। उत्तेजित होकर शंकर ने भी बंदूक की आखिरी गोली दाग दी। वहां आए वन विभाग के कुछ लोगों ने वह आवाज सुन ली और हैरान-परेशान शंकर को खोज निकाला।

शंकर को एक महीना शहर के अस्पताल में रहना पड़ा। अब उसके पास एक भी पैसा नहीं था। वहां के एक भारतीय दुकानदार ने उसकी सहायता की। शंकर ने एक समाचार-पत्र देखा—उसके बारे में उलटी-सीधी बातें छपी हुई थीं। शंकर स्वयं अखबार के दफ़्तर में गया। अपने अनुभव बताए। अखबार में उसकी यात्रा का विवरण छपा, तो वह मशहूर हो गया। शंकर ने हीरे बेचकर धन इकट्ठा किया और भारत के लिए चल दिया। पानी के जहाज में बैठे हुए वह सोच रहा था—'सबसे अच्छा अपना देश।'

प्रस्तुतः अमर गोस्वामी

मन की बात

— डा. रामकुमार तिवारी

बात उस समय की है, जब देश में अंग्रेजों का शासन था। छोटा नागपुर क्षेत्र के गोला परगना के अंतर्गत मधुकरपुर, चंडीपुर, कुरको सहित दस गांवों की तहसीलदारी गोला निवासी रामीसिंह और भागीसिंह को अंग्रेजों ने दी थी। दोनों भाई कुरको गांव को भंडार बनाकर रहते थे। तहसीलदारी का काम भी देखते थे।

रामीसिंह और भागीसिंह के पिता का नाम था बसावरसिंह। वह प्यार से इन्हें रामी और भागी ही कहते थे। रामीसिंह बड़ा भाई था और भागीसिंह छोटा था। भागीसिंह के दो पुत्र थे, किंतु रामीसिंह की कोई संतान नहीं थी।

दोनों भाइयों में बचपन से ही काफी मेल था। एक भाई जो कुछ कहता, दूसरा उसे आंख मूंदकर स्वीकार कर लेता था। दोनों साथ पढ़ते, साथ खेलते, साथ खाते और साथ-साथ सोते भी थे। दो शरीर एक प्राण थे। जब दोनों भाई बड़े हुए, तो दोनों का विवाह भी एक ही साथ हुआ। उनकी पत्नियां भी भाइयों का आपसी प्रेम देखकर खुश हुईं। वे भी आपस में प्यार से रहने लगीं।

दोनों भाइयों के आपसी प्रेम का ही परिणाम था कि उनका सब कारोबार, व्यापार आदि एक साथ चल रहा था। दोनों की तहसीलदारी भी ठीक चल रही थी।

उनकी एकता देखकर लोग जलने लगे। वे एक से दूसरे की बुराई करते। धीरे-धीरे दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए नफरत पैदा हो गई।

एक दिन किसी बात पर दोनों भाई उलझ गए। कुछ लोगों के बीच-बचाव करने पर दोनों अलग हुए। किंतु आपस में प्रेम तो था ही। रामीसिंह ने अपनी पत्नी को भाई के घर भेजा। भागीसिंह ने अपने पुत्र को भेजा कि देखो, मेरे भाई को कहीं ज्यादा चोट तो नहीं आई?

रामीसिंह ने भागीसिंह के बेटे को देखते ही गोद में

बैठा लिया और उसके पिता का हाल पूछने लगा। लेकिन जब पता चला कि उसके भाई को ज्यादा चोट नहीं आई है, तो तुरंत क्रोध से भरकर बोला— "बेटे, कह देना भागी को, मैं उसे नहीं छोड़ूंगा। छोटा होकर बड़े भाई पर हाथ उठाया है। कल उस पर जरूर मुकदमा दायर करूंगा।" भागीसिंह का बेटा यह सुनकर चुपचाप लौट आया।

उधर भागीसिंह भी अपनी भाभी से पूछ रहा था— "भैया को कहीं ज्यादा चोट तो नहीं आई?" उसकी भाभी ने कहा— "उन्हें तो चोट नहीं आई, किंतु उन्होंने तुम्हारा हाल पूछने के लिए मुझे भेजा है।"

यह सुनते ही भागीसिंह अपनी भाभी के सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते हुए बोला— "भाभी, मुझे बहुत दुःख है कि मैंने उन पर हाथ उठाया। मुझे माफ कर दो भाभी।" उसकी भाभी उसे शांत करते हुए बोली— "आप दोनों को यह शोभा नहीं देता। क्या कहेंगे लोग?"

भागीसिंह शांत तो हुआ, किंतु ऊपर के क्रोध ने मन के भीतर पनप रहे प्यार को दबा दिया। भागी बोला— "भाभी, अब मैं कभी इस कदर झगड़ा तो नहीं करूंगा, किंतु कल भैया पर मुकदमा जरूर दायर करूंगा।"

दूसरे दिन दोनों भाई हजारीबाग कोर्ट पहुंचे और

एक-दूसरे पर मुकदमा दायर कर दिया। सालों तक मुकदमा चलता रहा। धीरे-धीरे दोनों में बातचीत कम हो गई। तहसीलदारी बंट गई और घर भी बंट गया। दोनों का एक-दूसरे के यहां आना-जाना भी बंद हो गया।

दोनों भाइयों के बीच बढ़ती खाई को देखकर आस-पास के दुष्ट तहसीलदार खुश थे। उनकी योजना सफल हो गई थी। उन्होंने योजना बनाई कि इस बार शरद उत्सव पर सभी तहसीलदारों की बैठक कुरको मौजा में ही होगी। उस दिन जमकर आतिशबाजी की जाएगी। उसमें रामीसिंह और भागीसिंह को नहीं बुलाया जाएगा।

शरद उत्सव में सिर्फ एक सप्ताह का ही समय बचा था। भागीसिंह का पुत्र राजा जो दसवीं कक्षा में पढ़ता था, छुट्टी में घर आया हुआ था। उसे अपने पिता को ताऊ के साथ मुकदमा लड़ते देखकर बहुत बुरा लगता था।

एक दिन वह अपनी बड़ी मां के पास गया। वह घर में अकेली कपड़ों में फूल का डिजाइन बना रही थी। अचानक राजा को अपने घर आया देख, खुशी के मारे दौड़ पड़ी। राजा भी अपनी बड़ी मां से बहुत दिनों के बाद मिल रहा था। वह अपनी बड़ी मां से लिपट गया। दोनों की आंखें नम हो गईं। राजा बोला— "बड़ी मां, मैं यह कहने आया हूं कि इस बार शरद उत्सव वैसे ही मनाया जाना चाहिए, जैसे पहले हम लोग मनाते थे। पहले की तरह आप लोग मेरे माता-पिता के साथ शरद उत्सव नहीं मनाएंगे, तो मैं कुछ नहीं खाऊंगा। मैं स्कूल जाना छोड़ दूंगा। नए कपड़े भी नहीं पहनूंगा। जब से मेरे पिता जी ने आप लोगों से मुकदमा लड़ना शुरू किया है, तब से मेरा पढ़ने में मन नहीं लगता है।" यह कहते हुए राजा सिसकने लगा।

राजा की बड़ी मां के कोई संतान नहीं थी। वह राजा को कलेजे से लगाकर रखती थी। किंतु झगड़े के बाद से वह दूर से देखकर ही संतोष कर लेती थी। आज उसे करीब पाकर ममता छलक पड़ी। वह आंसू

पोंछते हुए बोली— "बेटे, तू जो कहता है, वही होगा। तू तो मेरे मन की बात कह रहा है। मैं तुम्हारे पिता जी को समझाऊंगी।"

— "नहीं, समझाने की कोई जरूरत नहीं है। मैं समझ चुका हूं। इतने दिनों तक मैं इसी भूल-भुलैया में फंसा हुआ था। आप सबका दिल दुखाया।"

भागीसिंह राजा के पीछे-पीछे उसी समय यहां आया था, जब राजा चुपके से बड़ी मां के घर में घुसा था। वह उनकी सारी बातें भी सुन चुका था। हाथ जोड़ते हुए विनती के स्वर में बोला— "भाभी, मैं कई दिनों से भैया से कहना चाहता था कि मुझे माफ कर दें, किंतु कह नहीं पाता था। आज राजा की बात सुनकर लगा कि वह मेरे मन की ही बात कर रहा है।"

अपने पिता को ऐसी बातें करते देख, राजा दौड़कर अपने पिता के पास गया। पूछा— "सच पिता जी, हम लोग एक साथ उत्सव मनाएंगे?"

रामीसिंह ने उत्तर दिया— "हां बेटे, जाओ अपनी मां को भी बुलाकर यहां ले आओ। आज से हम लोग अब वैसे ही रहेंगे, जैसे पहले रहते थे।"

दोनों भाइयों ने अपना मुकदमा वापस ले लिया। आखिर उनके मन में छिपा स्नेह कितने दिनों तक दबा रहता! दोनों फिर से एक हो गए। ●

युवराज ने कहा

—संतोष

बहुत समय पहले की बात है। सराय नामक राज्य पर हुकुमदेव का शासन था। राजा हुकुमदेव बड़े दयालु एवं न्यायप्रिय राजा थे। उनके राज्य में प्रजा बड़ी खुश थी। चारों तरफ खुशहाली तथा शांति थी।

सराय काफी बड़ा राज्य था। राजा हुकुमदेव ने अपने पराक्रम से आसपास के कई राज्यों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था। इससे उनका राज्य और भी बड़ा हो गया था।

लेकिन एक मुश्किल भी थी। अब राजा हुकुमदेव को प्रजा के दुःख-सुख के बारे में पता नहीं चल पाता था। वह चिंतित रहने लगे। हर समय यही सोचते रहते थे कि कैसे अपनी प्रजा की अच्छी तरह देखभाल करें।

एक दिन राजा हुकुमदेव ने अपने मंत्रियों को बुलाया। उनसे पूछा—''कोई उपाय बताइए, जिससे पूरी प्रजा की देखभाल अच्छी तरह हो सके। किसी को कोई कष्ट न हो।''

राजा की बात सुनकर मंत्री सोच में डूब गए। सब अपनी-अपनी राय देने लगे। मगर राजा को किसी का सुझाव पसंद नहीं आया। तब प्रधानमंत्री ने कहा—''महाराज, मेरे मन में एक विचार आया है। हम अपने राज्य को पांच प्रदेशों में बांट दें। प्रत्येक प्रदेश के लिए एक प्रमुख नियुक्त कर दें। प्रमुख उसी प्रदेश का निवासी होना चाहिए। प्रमुख प्रजा के दुःख-सुख का ध्यान रखेगा। अपने प्रदेश की समस्याएं आपको बतलाएगा। तब आप उन्हें सरलता से दूर कर देंगे। अपनी प्रजा का अच्छी तरह ध्यान रख सकेंगे।''

राजा को यह सुझाव पसंद आया। उसने अपने राज्य को पांच प्रदेशों में बांट दिया। उनके नाम रखे गए—पूरनपुर, हुरमतपुर, नौरंगपुर, जयपुर तथा छोटेपुर। राजा ने पांच विश्वासपात्र आदमी छांटे। उनको उसने इन प्रदेशों का प्रमुख नियुक्त कर दिया।

कुछ समय तक सब कुछ ठीक चलता रहा। पांचों प्रमुख अपने-अपने प्रदेश की खुशहाली के लिए काम करने लगे। धीरे-धीरे उनमें ईर्ष्या पैदा हो गई। पांचों प्रमुख केवल अपने-अपने प्रदेशों की चिंता करने लगे। उनकी यह कोशिश रहती कि उनका प्रदेश दूसरों से ज्यादा खुशहाल रहे।

कुछ समय बाद हालत और बिगड़ गई। पांचों प्रमुख अपने को ज्यादा योग्य सिद्ध करने की होड़ में लग गए। वे सब राजा हुकुमदेव के सामने अपनी योग्यता साबित करने का कोई मौका नहीं छोड़ते थे। उनकी कोशिश रहती कि राजा केवल उनकी ही प्रशंसा करें। इसीलिए वे दूसरों की आलोचना में लगे रहते।

राजा समझ रहे थे कि उनका राज्य खूब प्रगति कर रहा है। चारों तरफ खुशहाली है। प्रजा बड़ी खुश है। मगर हकीकत कुछ और थी। एक दिन राजा ने प्रजा से मिलने की सोची। राजा पहले पूरनपुर प्रदेश गए। वहां के प्रमुख व प्रजा ने अपने प्रदेश की खूब प्रशंसा की। प्रगति के गुण गाए। बाकी चारों प्रदेशों की प्रजा को भला-बुरा कहा। उन्हें कामचोर और झगड़ालू बताया। अन्य प्रमुखों को स्वार्थी कहा।

फिर राजा हुरमतपुर प्रदेश गए। वहां भी सबने अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निंदा की। इसके बाद राजा नौरंगपुर, जयपुर तथा छोटेपुर गए। वहां भी सबने सिर्फ अपने को योग्य व परिश्रमी बताया। अन्य प्रदेशों की घोर निंदा की। उनके बारे में कटु वचन भी कहे।

इससे राजा को बड़ा दुःख हुआ कि उसकी प्रजा स्वार्थी हो गई। सिर्फ अपने बारे में सोचने लगी। पांचों प्रदेश अपनी-अपनी बात कर रहे हैं। प्यार और मेलजोल की भावना खत्म हो गई। राजा की समझ में कुछ न आया। वह फिर सोच में डूब गए।

राजा को उदास देखकर युवराज ने पूछा—"पिता जी, क्या बात है ? आप इतने उदास क्यों हैं ?"

राजा ने उसे सारी बात बता दी। युवराज समझदार था। वह सारी बात समझ गया। उसने कहा—"पिता जी, बड़े राज्य को पांच प्रदेशों में बांटना एक अच्छा काम था। मगर आपने उसी प्रदेश के व्यक्ति को प्रमुख बनाकर ठीक नहीं किया।"

"तो फिर क्या किया जाए ?"—राजा ने पूछा।

—"पांचों प्रदेश प्रमुखों का स्थान बदल दीजिए। यह भी घोषणा कर दीजिए कि प्रमुखों का स्थान कभी भी बदला जा सकता है। इससे प्रमुखों को केवल अपने प्रदेश की चिंता नहीं रहेगी। वे दूसरे प्रदेशों की भी चिंता करेंगे। उन्हें डर रहेगा कि कभी भी दूसरे प्रदेश में भेजा जा सकता है। वे दूसरे प्रदेश को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेंगे। सम्पूर्ण राज्य की प्रजा के बारे में सोचेंगे। तब प्रजा भी अपने को एक ही राज्य का नागरिक मानकर चलेगी।"

युवराज की बात राजा की समझ में आ गई। उसने अगले दिन ही पांचों प्रमुखों का स्थान परिवर्तन कर दिया। यह घोषणा भी करवा दी कि किसी भी प्रमुख का स्थान कभी भी बदला जा सकता है।

पांचों प्रमुख अन्य प्रदेशों में नियुक्त कर दिए गए। अब उनके मन से केवल अपने प्रदेश की भावना गायब हो गई। उन्हें लगा कि अगर वे दूसरे प्रदेश के विकास को रोकेंगे, तो आगे मुश्किलें आएंगी।

युवराज के सुझाव से राज्य एक बार फिर से खुशहाल और समृद्ध हो गया। राजा हुकुमदेव की चिंता मिट गई। लोग युवराज की बुद्धि की प्रशंसा करने लगे। ●

चमके सूरज

स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा ।
आओ लेकर नूतन आशा
उठे हृदय में नव अभिलाषा,
खोलो नया मार्ग उन्नति का
बहे निरंतर सुख की धारा ।

बीती बातों को हम भूलें
आगे बढ़ें, हर्ष से फूलें,
बाधाओं से हार न मानें
लें साहस का सदा सहारा ।

नई धरा हो, नई दिशाएं
नव किरणें प्रकाश फैलाएं,
चमके सूरज नया गगन में
हो मंगलमय जीवन सारा ।

—विनोदचंद्र पाण्डेय 'विनोद'

चिड़िया

आंगन में आ जाती चिड़िया,
मीठा गाना गाती चिड़िया ।
आंगन में बिखरे दानों को
फुदक-फुदककर खाती चिड़िया ।
पल में उड़ मुंडेर पर जाती,
फिर धरती पर आती चिड़िया ।
मन करता है, इसे पकड़ लूं,
फिर पिंजड़े में पालूं चिड़िया !
चुपके-चुपके पास पहुंचता,
झट 'फुर' से उड़ जाती चिड़िया !
नन्ही है, पर बड़ी सयानी,
नहीं पकड़ में आती चिड़िया ।
देखो, कैसे फुदक रही है,
नन्ही-नन्ही प्यारी चिड़िया ।

—चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक'

यदि होता मैं पक्षी

यदि होता मैं पक्षी, उड़कर
आसमान में जाता,
अपने चंचल पंख हिलाकर
दूर देश हो आता ।
पेड़-पेड़ पर, डाल-डाल पर
जाता, फिर उड़ जाता,
कहीं घने पत्तों में अपना
सुंदर नीड़ बनाता ।
कौए सी चतुराई होती
तोते सा बतियाता,
गौरैया संग खेल खेलता
कोयल जैसा गाता ।
बगुले जैसा ध्यान लगाता
मुर्गे संग उठ जाता,
दिन भर धमा-चौकड़ी करता
शाम ढले घर आता ।

—अमिताभ मिश्र

कुहरा छाया

सूरज दादा नजर न आए
कौए राजा हैं झुंझलाए,
पता चला न, दिन चढ़ आया
कुहरा छाया, कुहरा छाया !
गलियां और मुहल्ले डूबे
चहल-पहल, सब हल्ले ऊबे,
धुआं-धुआं मौसम न भाया
कुहरा छाया, कुहरा छाया !
दबे पांव चुपके से आता
सबके ऊपर धाक जमाता,
कोई कुछ भी कर ना पाया
कुहरा छाया, कुहरा छाया !

—डा. हरीश निगम

नटखट

नटखट-नटखट कहती अम्मां !
किससे जी बहलाएगी,
जब मैं पढ़ने जाऊंगा मां !
किसको गोद बिठाएगी ?
और अकेली,निपट अकेली
जब घर में रह जाएगी,
सच कहता हूं अम्मां ! तुमको—
मेरी याद सताएगी ।
फिर जब पों-पों करती मेरी
'बस' नुक्कड़ पर आएगी,
तब तू दौड़ी-दौड़ी अम्मां !
पहुंच वहां झट जाएगी ।
आ गए 'बबलू', आ गए 'राजा'
कहकर मुझे बुलाएगी ।

—कमला ओबराय

वामदेव के घोड़े

एक बार राजा परीक्षित शिकार खेलने वन में गए। वहां . . .
अद्भुत ! रानी बनने योग्य . . .

परीक्षित ने उसकी यह शर्त मानकर कि वह पानी से दूर रहेगी, उससे विवाह कर लिया। किंतु . . .

सुना है, नई रानी बिना पानी जीती है। . . .

वह मानवी नहीं, तभी तो . . .

परीक्षित ने यह सुना तो . . .
सब कहते हैं, तुम पानी से डरती हो। इसीलिए यहां . . .
आप कहें, तो सरोवर में जाऊं ?

परीक्षित के 'हां' कहने पर रानी सरोवर में उतरी, मगर गुम हो गई। परेशान परीक्षित ने . . .
सरोवर का सारा पानी निकाल दो। रानी को ढूंढ़ो . . .

सरोवर खाली हुआ , तो . . .
ये ही रानी को खा गए राज्य के सारे मेंढ़कों को मार डालो !
टर्र !
टर्र!!टर्र !

मेढ़कों को मारा जाने लगा, तो वे घबराकर अपने राजा के पास पहुंचे . . .
मैं स्वयं दुखी हूं। परीक्षित से मिलूंगा !
दुहाई !
दुहाई !!

मेंढ़कराज एक दिन गुम हुई रानी को ले . . .
यह मेरी बेटी है राजन। विष भरा है इसमें। छल करती है। इसकी संतान भी ऐसी ही होगी . . .
कुछ भी हो। मैं इसे स्वीकार करता हूं।

उस रानी के तीन पुत्र हुए—शल, दल और बल। तीनों ही क्रूर स्वभाव के थे . . .

एक दिन शल रथ पर बैठ शिकार करने वन में गया . . .
घोड़े तेज भगाओ । हिरन से भी . . .
इतना तेज तो वाम्य घोड़ों के अलावा कोई नहीं दौड़ सकता राजन् ।
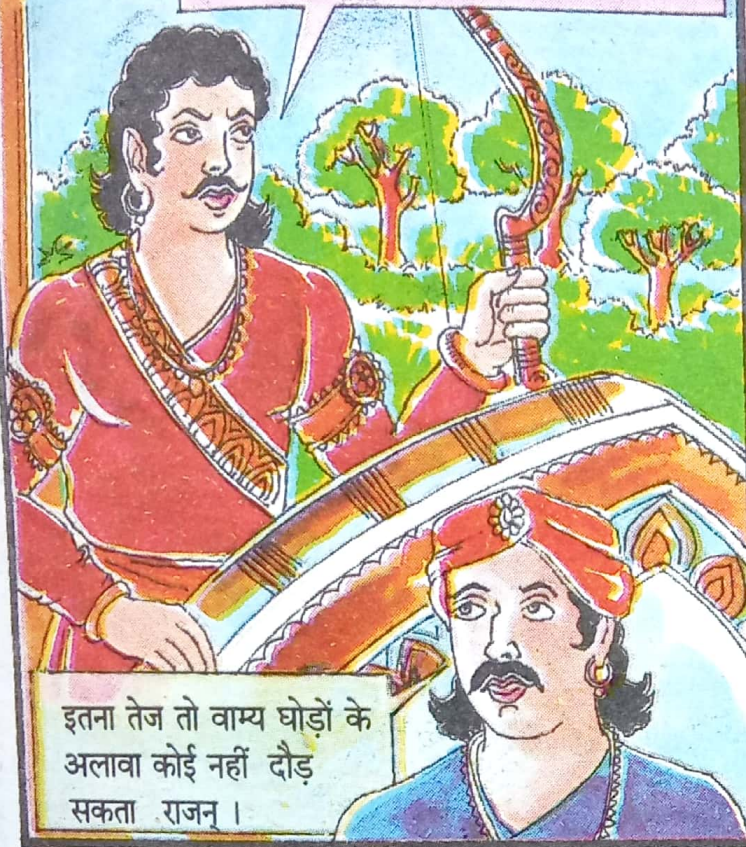
वाम्य घोड़े मुनि वामदेव के पास थे । शल उनके आश्रम में पहुंचा . . .
महामुने, आपके घोड़े चाहिएं . . . कुछ देर के लिए . . .
ले जाओ । शीघ्र वापस कर देना . . .

शल घोड़ों पर लट्टू हो गया । वापस न दे अपने साथ ले गया । वामदेव उन्हें लेने शल के पास गए तो . . .
वायदे के अनुसार मेरे घोड़े वापस लाओ राजन्
नहीं । वे तुम्हारे किस काम के ! बदले में गधे, खच्चर, ऊंट जो चाहो, ज़ितने चाहो . . .
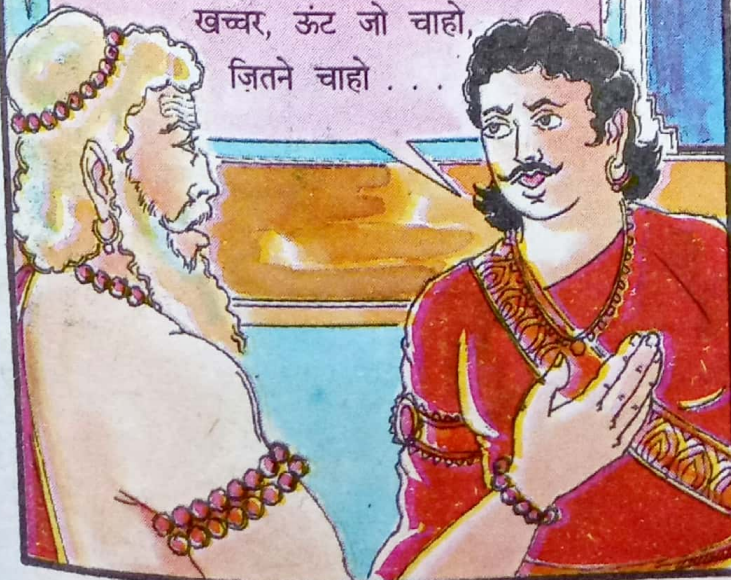
वामदेव क्रोधित हो उठे । मंत्र पढ़कर जल धरती पर छिड़का, तो . . .
सैनिको !
दुष्ट शल को उठाकर ले जाओ । . . . मार डालो . . .
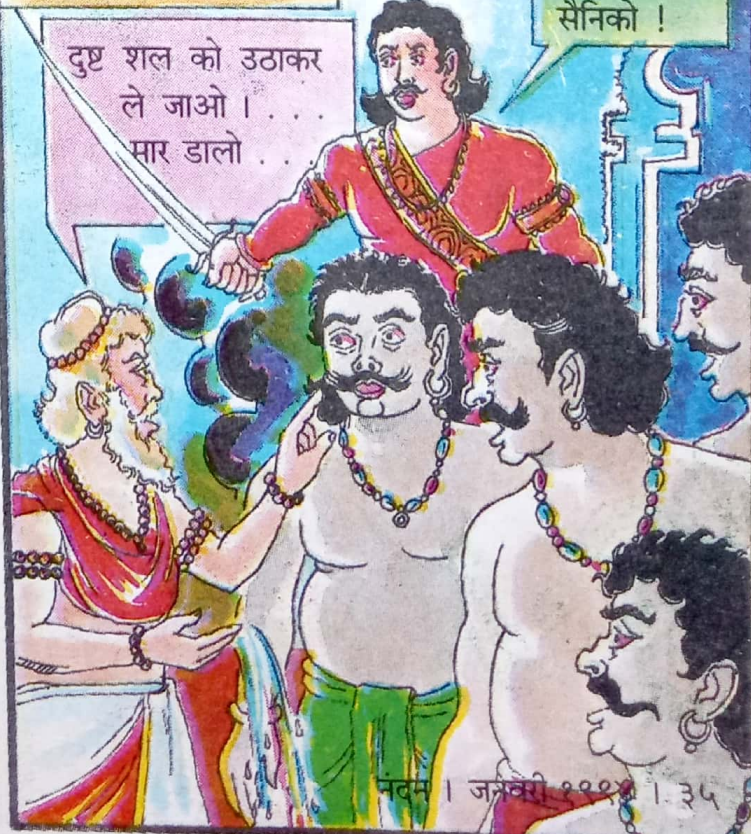
शल के बाद दल राजा बना। वामदेव ने उससे भी...
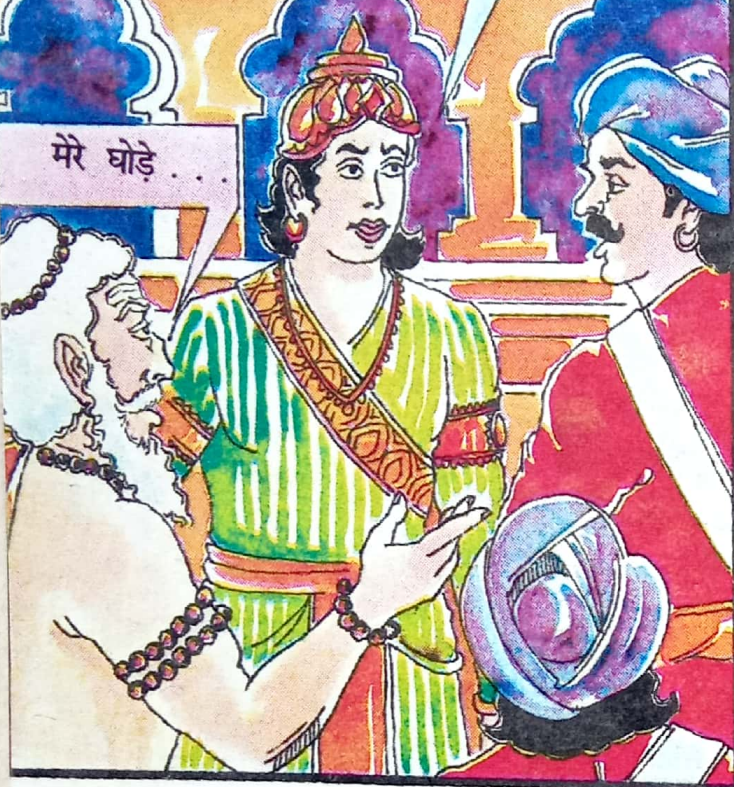
किंतु मुनि के प्रभाव से वे वाण दल के संबंधियों को ही लगे। भयभीत हो दल...

दल विष बुझा वाण ले मां के पास गया...

दल ने वाण की नोंक मां से छुआ ही दी। तुरंत सारे परिवार के मन निर्मल हो उठे। दल ने...

(महाभारत से)

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ५० रुपए
दो वर्ष : ९५ रुपए

वर्ष : ३० अंक : ३, जनवरी '९४, नई दिल्ली; पौष-माघ, शक सं. १९१५

दिल्ली में नई सरकार बनी

दिल्ली में भारत की सरकार है। मगर कई वर्षों बाद राजधानी दिल्ली की अपनी सरकार बनी है। श्री मदनलाल खुराना इसके मुख्यमंत्री बने हैं। उनके मंत्रिमंडल में छह मंत्री हैं। ये हैं— सर्वश्री साहिबसिंह वर्मा, जगदीश मुखी, सुरेंद्रपाल रातावाल, लालबिहारी तिवारी, डा. हर्षवर्धन और सरदार हरशरण सिंह बल्ली।

श्री खुराना बच्चों के बारे में सबसे पहले कुछ निर्णय करना चाहते हैं। वह कहते हैं कि पढ़ाई-लिखाई ऐसी हो जो बच्चों को भारत के बारे में सही जानकारी दे सके। शिक्षा ऐसी हो जो बच्चों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाए, राष्ट्रभक्त बनाए। श्री खुराना का यह भी मानना है कि स्कूलों में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य कर देना चाहिए। बच्चों का सर्वांगीण विकास हो, तभी वे देश के अच्छे नागरिक बन सकते हैं।

श्री खुराना खुद शिक्षक रह चुके हैं। इसलिए वह शिक्षकों की समस्याओं पर भी ध्यान देना चाहते हैं। प्राइवेट स्कूलों में बच्चों से मनमानी फीस वसूल करने के भी विरुद्ध हैं वह।

नेताओं का पार्क

मास्को। यहां एक 'राजनीति पार्क' बनाया जा रहा है। इस पार्क में उन नेताओं की मूर्तियों को रखा जाएगा जो अब तक व्यस्त चौराहों, सड़कों या इमारतों की शोभा बढ़ा रही थीं। अधिकारियों का कहना है कि भूतपूर्व सोवियत संघ में ऐसी बहुत-सी मूर्तियां लगी हुई थीं जो नेताओं की हैं। कला की दृष्टि से यह बहुत अच्छी भी नहीं हैं। अब सब जगहों से हटाकर इन्हें एक पार्क में रख दिया जाएगा।

सत्रहवीं सदी का जहाज

पेरिस। 'ला लुने' नाम का जहाज १६६४ में समुद्र में डूब गया था। अब गोताखोरों ने इस जहाज का पता लगा लिया है। इस जहाज में बहुत-सी बंदूकें, तांबा, इस्पात और कांच भरा है। बहुत अधिक सामान भरा होने के कारण ही यह जहाज डूब गया था।

दो पलंगों पर

दुबई। मोहम्मद आलम खान की लम्बाई आठ फीट तीन इंच है। हाल ही में वह बीमार पड़ा। डाक्टरों को उसके लिए दो पलंग जोड़कर एक पलंग बनाना पड़ा। तब वह सीधा लेट सका।

पड़दादी और लुटेरा

शिकागो। ९२ वर्ष की एक महिला अपने घर में अकेली रहती है। उसके पैर खराब हैं। वह पहिएदार कुर्सी पर बैठकर चलती-फिरती है। एक दिन एक लुटेरा उसके घर में घुस आया। महिला से सारा पैसा मांगने लगा। महिला ने छिपाई हुई पिस्तौल से गोली चला दी। लुटेरा मारा गया। पुलिस आई। सारी बात पता चलने पर पुलिस ने कहा कि महिला पर हत्या का मुकदमा न चलाया जाए। उसने जो कुछ किया, लाचारी और अपनी रक्षा करने के लिए किया।

हाथी दांत की चीजें

नई दिल्ली। उच्च न्यायालय ने दुकानों पर हाथी दांत की चीजें प्रदर्शित करने पर रोक लगा दी है। भारत में हाथी दांत की चीजों पर पहले से प्रतिबंध है। लेकिन अब भी दुकानों पर ये मिलती थीं। हाथी दांत प्राप्त करने के लिए बड़ी संख्या में हाथियों को मारा जाता है।

चमगादड़ों को बचाया

श्रीरंगम्। पास के एक गांव में चमगादड़ों की बड़ी बस्ती थी। गांव वाले इस बस्ती को देवता की कृपा मानते थे और किसी को भी इधर नहीं आने देते थे। एक रात शिकारी आ धमके और गोलियों से चमगादड़ों का शिकार करने लगे। तभी कुछ लड़कों ने ये आवाजें सुनीं। वे उधर दौड़े। कुछ और लोग भी उनके साथ गए। शिकारियों ने गांव वालों को आते देखा तो भाग गए।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

धर्म से ही मानव सब कुछ पाता है। —वाल्मीकि रामायण

फिल्मों का मेला

बच्चों के लिए कुछ होना चाहिए, इसलिए हो जाता है। उदयपुर में बाल फिल्मों का उत्सव हुआ, हो गया। उससे कितने बालक जुड़े? बालक से जुड़े पत्रकार-लेखक कहां जुड़े? बाल फिल्मों के प्रचार-प्रसार में उससे क्या मिला? बच्चे हर रोज स्टार टी.वी. और जी टी.वी. देख रहे हैं। स्वस्थ फिल्मों की बात होती है पर इक्का-दुक्की बन पाती हैं।

बरसों से बाल चित्र समिति थी। उसमें अब युवा और जुड़ गया। भला वह बच्चों के लिए कितना काम करेगी? किशीनेव (मोल दाविया) की एक महिला बच्चों को चित्रकला सिखाती थी। बच्चों की मदद से बाल फिल्में बनाने लगी। घर को स्टूडियो बना डाला। स्टूडियो फ्लोरीचका (नन्हा फूल) ने डेढ़ सौ से ऊपर बाल फिल्में बनाईं। अंग्रेजी के फेर में हम रहते हैं। विदेशी फिल्में ही बच्चों को दिखाया करते हैं।

इनसे मिलिए

टेलीफोन है तो बार-बार घंटी बजेगी। बेवक्त बजे तो परेशानी, बिल्कुल न बजे तो परेशानी। हाल ही में महानगर टेलीफोन निगम के मुख्य महाप्रबंधक श्री एल. सी. अग्रवाल बने हैं। वह कुशल इंजीनियर माने जाते हैं। दूरसंचार के विशेषज्ञ हैं। भारत-पाक युद्ध दो बार हुआ— श्री अग्रवाल ने सेना को पश्चिम सेक्टर में संचार सुविधा जुटाने की जिम्मेदारी उठाई।

श्री एल. सी. अग्रवाल का विभाग ऐसा है जिसमें शिकायत करने वाले और अक्सर झुंझलाए हुए लोग आया करते हैं। श्री अग्रवाल उनकी बात सुनते हैं और सही आदमी की मदद करने में झिझकते नहीं। 'नंदन' देखते ही बोले— "मेरे भतीजे-भतीजी इसे बहुत पसंद करते हैं। बहुत अच्छी पत्रिका है।"

अश्वमेध यज्ञ

लखनऊ। शरद पूर्णिमा के दिन यहां अश्वमेध यज्ञ हुआ। यह यज्ञ पांच दिन चला। इसमें लाखों लोगों ने भाग लिया। यज्ञशाला में एक सौ आठ कुंड बनाए गए थे। दो लाख से अधिक लोगों ने हवन किया। इस अवसर पर डा. प्रणव पंड्या ने कहा कि अश्वमेध का अर्थ लोगों को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करना है। शांति कुंज हरिद्वार की ओर से यज्ञ किया गया था।

मरी भैंस की कीमत

रोपड़। गोपाल की भैंस घास चर रही थी। बिजली का एक तार उसके ऊपर आ गिरा। भैंस मर गई। गोपाल ने बिजली बोर्ड के खिलाफ शिकायत कर दी। अब बिजली बोर्ड उसे भैंस की कीमत, सात हजार रुपए देगा।

एक लाख सिक्के

जयपुर। राजस्थान सरकार के पुरातत्व संग्रहालय ने प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से १९३ सिक्के इकट्ठे किए हैं। ये तेइस सौ वर्ष पुराने हैं। ये सभी सिक्के तांबे और चांदी के हैं। पुरातत्व निदेशालय के अधिकारी विजयशंकर श्रीवास्तव का कहना है कि राजस्थान में अब तक देश के सबसे पुराने सिक्के भी मिले हैं। निदेशालय को अब तक एक लाख से अधिक सिक्के मिल चुके हैं।

इस तरह बचेंगे

लंदन। पर्यावरण पर काम कर रही पचीस संस्थाओं ने गैंडे के समर्थन में आवाज उठाने का फैसला किया है। इन संस्थाओं का कहना है कि यदि हमारे बच्चे गैंडों को देखना चाहते हैं तो अभी से गैंडों को बचाना होगा। दुनिया में सिर्फ कुछ हजार गैंडे ही बचे हैं। कभी भारत में गंगा के किनारे बड़ी संख्या में गैंडे पाए जाते थे।

बालक के लिए

हैदराबाद। युनिसेफ के प्रतिनिधि श्री सुरेश भार्गव का कहना है कि विकास के सभी काम बच्चों को ध्यान में रखकर किए जाने चाहिएं। बच्चे को बड़े होने का सिर्फ एक मौका होता है। बच्चा ठीक से बढ़े, इसके लिए बड़ों को पूरा ध्यान रखना होगा।

हवाई जहाज पानी में

हांगकांग। ताइवान का एक हवाई जहाज समुद्र में जा गिरा। इसमें तीन सौ यात्री थे। लेकिन सभी यात्री सुरक्षित बचा लिए गए। सारे यात्रियों को निकालने के बाद सुरक्षा कर्मचारी एक बच्चे को बहुत देर तक ढूंढ़ते रहे। बाद में पता चला कि उसे तो पहले ही अस्पताल में भर्ती करा दिया गया है। जब तक अंतिम व्यक्ति को निकाला गया, जहाज में पानी भर गया था।

जिंदा डायनोसोर

लासएंजिल्स। इन दिनों 'जूरासिक पार्क' नामक फिल्म ने धूम मचा रखी है। इस फिल्म में एक वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में डायनोसोर विकसित करता है। उनका एक पार्क बनाता है। फिर ये डायनोसोर मानवभक्षी हो जाते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि फिलहाल यह फिल्म कोरी कल्पना लगती है। मगर तीस-चालीस वर्षों में प्रयोगशालाओं में डायनोसोर को विकसित किया जा सकता है।

आंखें लगाईं

नई दिल्ली। विश्राम विश्वकर्मा साइकिल पर जा रहा था। ट्रक ने उसे टक्कर मार दी। विश्राम की मृत्यु हो गई। उसका भाई रामराज बहुत दुखी था। लेकिन दुःख के समय में भी उसने अनोखा काम किया। उसने नेत्र बैंक को फोन किया। नेत्र बैंक की मदद से विश्राम की आंखें दो नेत्र हीन व्यक्तियों को लगा दी गईं। रामराज खुश है कि आज उसका भाई दो लोगों की आंखों से देख रहा है।

सांस ले

मनीला। जब कोई नया ह्वेल शिशु जन्म लेता है तो उसके पास बहुत-सी ह्वेलें इकट्ठी हो जाती हैं। वे उसे बार-बार सहारा देकर पानी की सतह पर लाती हैं, जिससे कि वह ठीक से सांस ले सके।

नन्हा सम्पादक

बम्बई। मिलिंद देसाई की उम्र बारह वर्ष है। उसे ब्लड कैंसर है। मगर वह अपने अस्पताल के बिस्तर से एक पत्रिका निकालता है—मंथन। मिलिंद के पिता पत्रकार हैं। बेटे को पत्रिका निकालने की सलाह उन्होंने ही दी थी। मंथन गुजराती भाषा की पत्रिका है। इसमें चालीस पृष्ठ हैं और मूल्य पांच रुपए।

सवा फुट का करेला

कैथल। सवा फुट का एक करेला! जाजनपुर गांव के किसान रणधीर सिंह ने अपने खेत में इतने बड़े करेले उगाए। रणधीर चार फीट की लौकी, आधा किलो का लहसुन और एक किलो साढ़े तीन सौ ग्राम की अरबी उगा चुके हैं। उन्हें बहुत-सी प्रतियोगिताओं में इनाम भी मिल चुके हैं।

अंतरिक्ष स्टेशन से बाहर

मास्को। दो रूसी अंतरिक्ष यात्री पाचवीं बार अपने अंतरिक्ष स्टेशन 'मीर' से बाहर आए। वे चार घंटे तक 'मीर' का निरीक्षण करते रहे, ताकि यदि यान में कोई कमी आ गई हो, तो उसे ठीक कर सकें।

लकड़ी नहीं जलेगी

रुड़की। यहां के केंद्रीय भवन अनुसंधान के वैज्ञानिकों ने नई लकड़ी तैयार की है। इसमें आग नहीं लगती। वैज्ञानिकों के अनुसार कच्ची लकड़ी में हवा-पानी होता है। सूखने पर पानी उड़ जाता है। मगर छिद्रों में हवा रह जाती है। छिद्रों में से हवा निकालकर वहां अग्नि रोधी रसायन भर दिया जाता है। फिर इसमें आग नहीं लगती।

चारपाई के नीचे शेर

जार्ज टाउन। जेम्स पीटर की सुबह आंख खुली तो बिस्तर के नीचे से अजीब-सी आवाज आ रही थी। नीचे झुककर देखा तो शेर नजर आया। पीटर के होश उड़ गए। उसे लगा, कमरे में रहा तो शेर जरूर मार देगा। हो सकता है, भागने से जान बच जाए। वह धीरे से उठा और बाहर जाकर दरवाजा बंद कर दिया। पड़ोसियों ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। पुलिस आई और शेर को मार दिया।

नन्हे समाचार

☐ वैज्ञानिकों का कहना है कि इस वर्ष जुलाई में अंतरिक्ष में आतिशबाजी होगी। बृहस्पति से एक विशाल धूमकेतु के टुकड़े टकराएंगे।

☐ यदि मनुष्य कोयल की बोली बोलने लगें! इंडोनेशिया में एक आदिवासी कबीले के लोग कोयल की तरह बोलते हैं।

☐ दिल्ली में लगे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में नई कार प्रदर्शित की गई। नाम है—जैनस। उसकी कीमत पचास हजार रुपए है। यह एक लिटर पेट्रोल में तीस कि. मी. चलती है।

☐ उदयपुर में अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव हुआ। जंगल बुक को हिंदी में प्रस्तुत करने वाले लेखक-निर्देशक गुलजार का कहना था कि बाल फिल्मों को मनोरंजन कर से छूट मिलनी चाहिए।

☐ नई दिल्ली में कुतुब मीनार परिसर में दो दिन का 'कुतुब समारोह' हुआ। पूरी कुतुब मीनार रोशनी से जगमग थी। अब यह समारोह हर साल हुआ करेगा।

☐ गुयाना के शहर जार्ज टाउन में शैतान बंदर जैको को पकड़ ही लिया गया। इन महाशय को घर की चीजें इधर-उधर लुढ़काकर बहुत आनंद आता है। मक्खन तो बहुत ही प्रिय है और शीशे के सामने बैठकर लिपिस्टिक लगाने का खास शौक।

☐ एक खबर के अनुसार प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या बढ़ी है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय जहां एक करोड़ बच्चे पढ़ते थे, अब इनकी संख्या दस करोड़ है।

☐ न्यूयार्क में 'मौत की घड़ी' लगाई जाएगी। यह बताएगी कि कितने लोगों के पास बंदूकें हैं और कितने लोग अब तक गोलियों के शिकार हुए हैं। उद्देश्य लोगों को हथियारों से दूर करना है।

सचित्र समाचार

चेक गणराज्य के राष्ट्रपति श्री वात्स्लाव हावेल को इंदिरा गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

बाल कल्याण परिषद ने बाईस बच्चों को साहस और वीरता के लिए पुरस्कृत किया है । ये बच्चे हैं—

१. प्रदीप दीपक; २. सुधीरकुमार; ३. मानवकृष्ण (दिल्ली); ४. प्राची साबान, ग्वालियर; ५. एम. पवित्रा, भोपाल; ६. अखिलेशकुमार शांडिल्य, खुरई (म. प्र.); ७. नीलेश साहिबराव, अकोला; ८. वीरेन मधुकर, पुणे; ९. परमेश्वर शिवाजी राव, उडगीर; १०. कविता गोवंडे, बारामती; ११. संभाजी देवचंद, जलगांव (महा.); १२. लोपामुद्रा पटनायक, बेरहामपुरगंजम्; १३. प्रदोषकुमार मिश्रा, राऊरकेला (उड़ीसा); १४. मोहम्मद मुर्तजा, कुसुंडा (बिहार); १५. भूमिका, कलकत्ता (प. बं.); १६. बिप्लब चक्रवर्ती, सालबागान (त्रिपुरा); १७. क्योथोंगो कीकोन, कोहिमा (नागालैंड); १८. अरविंदकुमार पांडेय; १९. कृष्णकुमार पांडेय, प्रतापगढ़ (उ. प्र.); २०. विजय भास्कर, नेक्कोंडा; २१. डी. सूरी बाबू, विजयनगरम्; २२. पी. एस. अनुरागमूर्ति (फोटो नहीं), हैदराबाद (आं. प्र.) ।

मेरा नाम तेरा

मंगू खतरनाक अपराधी था। उस दिन बच्चे खेल के मैदान में मिले तो...

मेरा नाम तेरा

पुलिस कमिश्नर वर्मा कई दिन से बड़े परेशान थे।
पापा, आप इतने परेशान !!
परेशान... हां विवेक, वह मंगू... बार-बार बच निकलता है...

मंगू खतरनाक अपराधी था। उस दिन बच्चे खेल के मैदान में मिले तो...
मेरा बस चले, तो मंगू को पकड़कर...
बस, बस ! बरसों से वह पुलिस को चकमा दे रहा है। तू तो...
चुप रहो ! आओ खेलें...
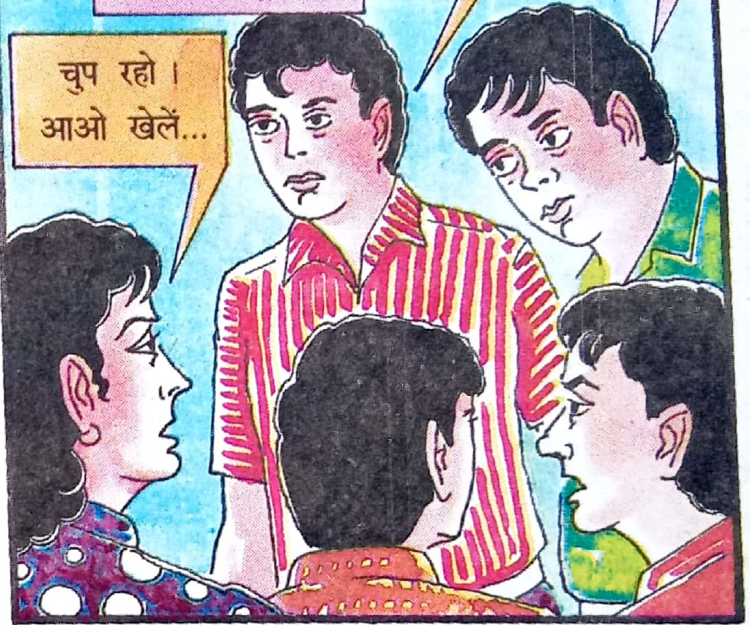
वे आपस में नामों की, अदला-बदली करके दो टीमें बनाते। बीच में एक गेंद रखकर...
मनोज, गेंद उठाओ !
तू क्यों भागा ? तेरा नाम तो मेरा है। तू विवेक, मैं मनोज ..
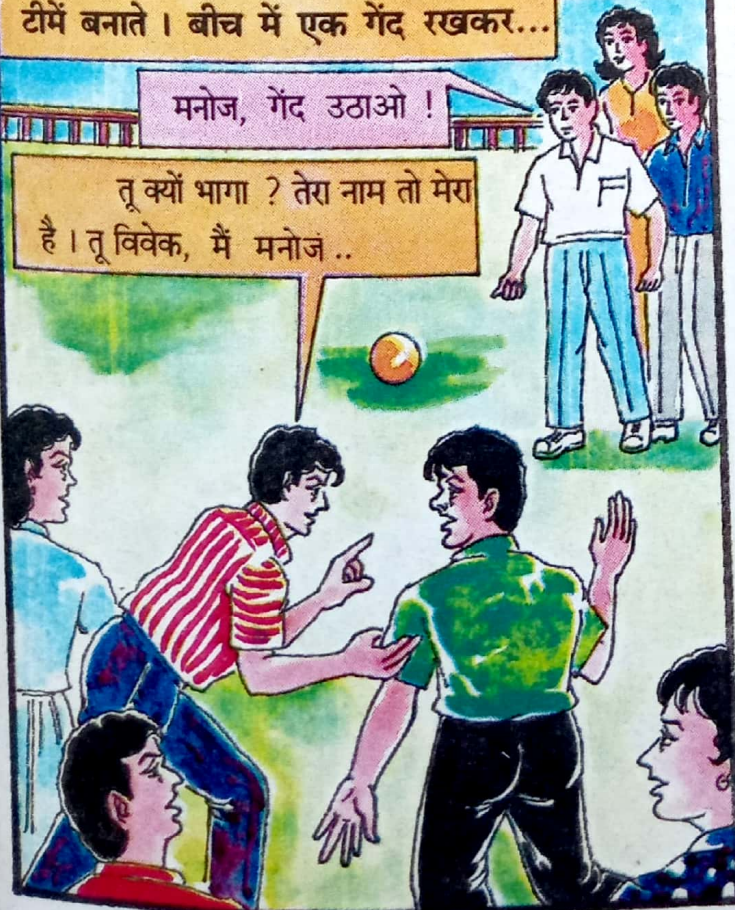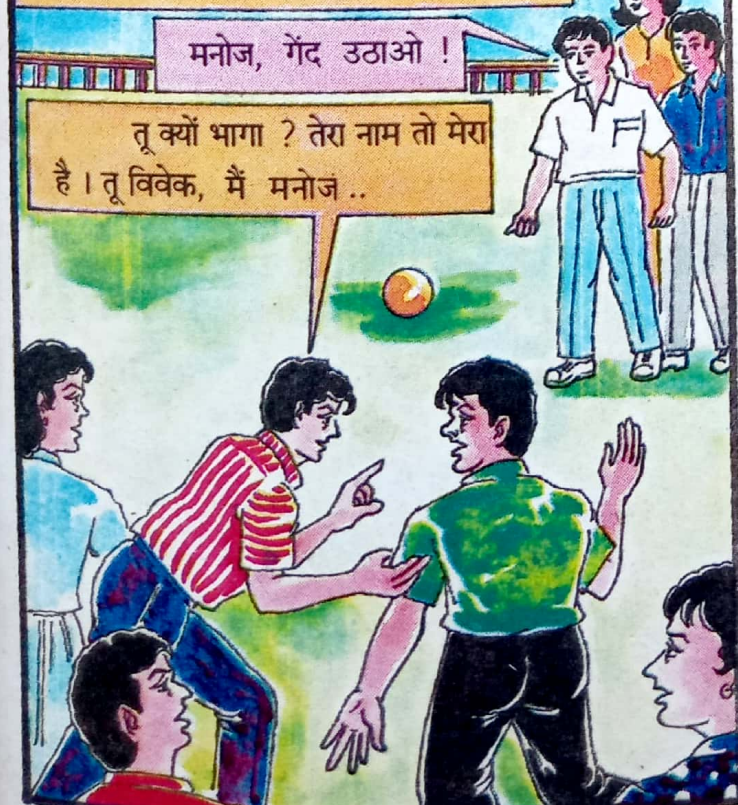
एक दिन बच्चे यही खेल खेल रहे थे कि...
सुना... यही विवेक है। कमिश्नर का बेटा। इसे तुरंत लाल बंगले में पहुंचाओ...
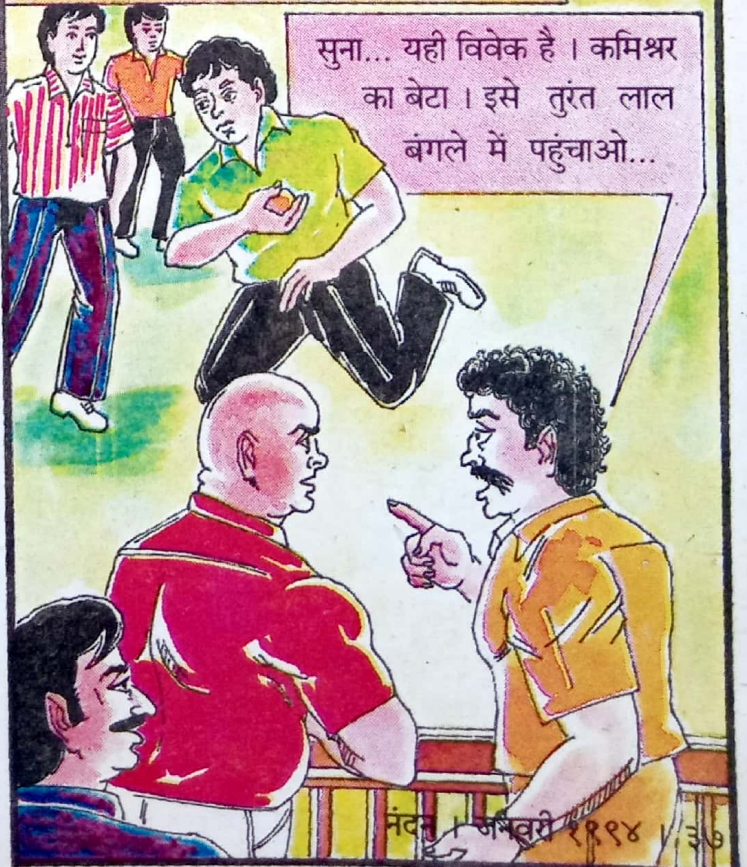
मौका पा, रास्ते ही में से गुंडे मनोज को उठाकर लाल बंगले में...
हा... हा... हा... इसे मेरे कमरे में बंद कर दो। यह पत्र कमिश्नर को भिजवा दो...
छोड़ दो मुझे...

इस घटना के दो घंटे बाद...
आपका बेटा विवेक हमारे कब्जे में है। हमारे दोनों साथियों को छोड़ दो, वर्ना... उफ !!
मंगू की धमकी !
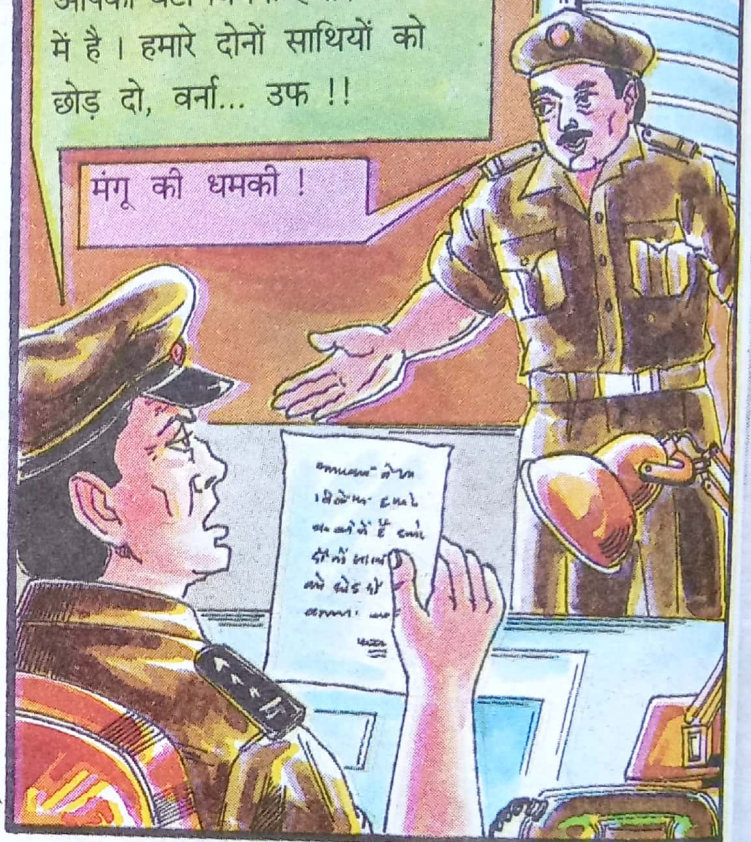
सारी पुलिस हरकत में आ गई। उधर लाल बंगले में...
मंगू सरदार, यह विवेक नहीं, उसका दोस्त मनोज है। हम धोखा खा गए...
क्या ?? उफ ! बेहोश करके इसे गन फैक्ट्री के पास फेंक दो... सब गड़बड़...
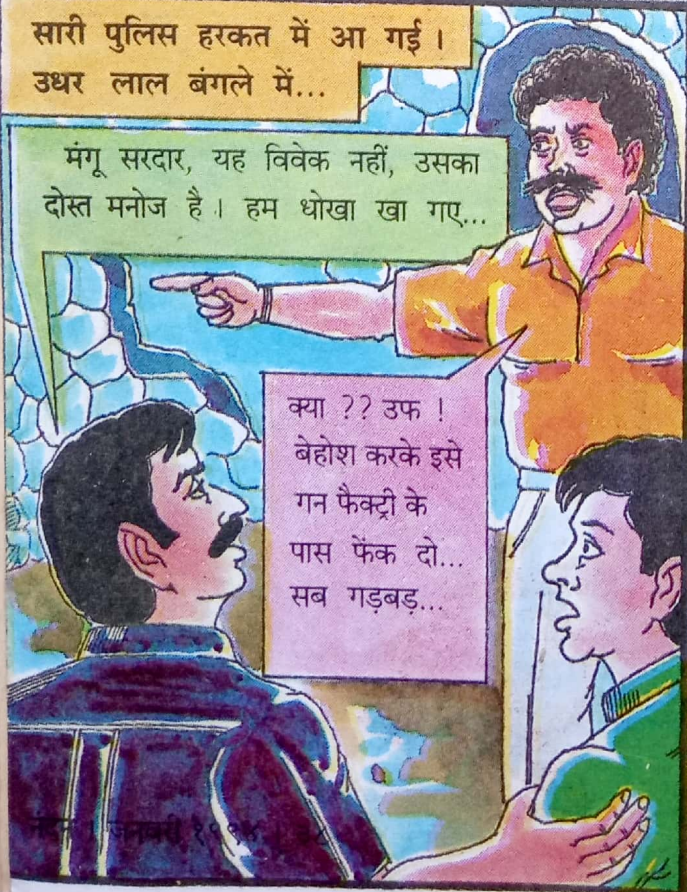
कमिश्नर वर्मा परेशान हो घर पहुंचे। वहां विवेक को देख हैरान रह गए। तभी...
मनोज तुम्हारे साथ खेलने गया था... कहां है !
अभी तक घर नहीं पहुंचा...
वह तो 'मेरा नाम तेरा' खेलकर सीधा घर गया था !
माजरा क्या है ?

कमिश्नर समझ गए कि बच्चों के नाम-बदल से मंगू धोखा खा गया है । वह तुरंत कार्यालय पहुंचे । वहां...
सर, यह हमें रात में गन फैक्ट्री के पास...
अरे, यह तो मनोज है !... मगर बेहोश...
तुरंत अस्पताल ले चलो...

अस्पताल में...
कहां था बेटे ? बेहोश कैसे...
याद करो । कौन थे वे लोग ! कहां ले गए थे ?
मंगू के गुंडे तो नहीं थे ?
मुझे कुछ याद नहीं...

इस घटना के तीसरे दिन, सवेरे की सैर पर...
मुझे मंगू के गुंडे ले गए थे । सच बताता, तो पापा-मम्मी परेशान हो जाते ।... मंगू के पास सोने के बर्तन... यह चम्मच... मैं ले आया...
चुराकर... देखूं
हमें अब घर में ही खेलना चाहिए...

चम्मच देख विवेक की आंखें चमक उठीं । अगले दिन लौटाने को कह वह उसे ले घर पहुंचा और...
मं...ग...त...रा...म... याने वह सर्राफ..., चम्मच पर उसकी मुहर... उसने बनाई...
भैया, तब तो मंगत राम मंगू को जानता होगा !

कमिश्नर समझ गए कि बच्चों के नाम-बदल से मंगू धोखा खा गया है । वह तुरंत कार्यालय पहुंचे । वहां...
सर, यह हमें रात में गन फैक्ट्री के पास...
अरे, यह तो मनोज है !... मगर बेहोश...
तुरंत अस्पताल ले चलो...

अस्पताल में...
कहां था बेटे ? बेहोश कैसे...
याद करो । कौन थे वे लोग ! कहां ले गए थे ?
मंगू के गुंडे तो नहीं थे ?
मुझे कुछ याद नहीं...

इस घटना के तीसरे दिन, सवेरे की सैर पर...
मुझे मंगू के गुंडे ले गए थे । सच बताता, तो पापा-मम्मी परेशान हो जाते ।... मंगू के पास सोने के बर्तन... यह चम्मच... मैं ले आया...
चुराकर... देखूं
हमें अब घर में ही खेलना चाहिए...

चम्मच देख विवेक की आंखें चमक उठीं । अगले दिन लौटाने को कह वह उसे ले घर पहुंचा और...
मं...ग...त...रा...म... याने वह सर्राफ..., चम्मच पर उसकी मुहर... उसने बनाई...
भैया, तब तो मंगत राम मंगू को जानता होगा !

चम्मच ले विवेक सीधा मंगतराम सर्राफ की दूकान पर पहुंचा...
यह चम्मच बेचनी है।
यह इसके पास कैसे
थोड़ा बैठो। जांचकर बताऊंगा...

जैसे ही सर्राफ चम्मच ले बराबर वाले कमरे में गया...
यह चम्मच तो हमारे गुट की पहचान है। इसे कैसे मिली ?
सरदार, यही है कमिश्नर का बेटा विवेक...
बापरे ! मामला यह है।
पकड़ो इसे। ले जाओ तहखाने में !

विवेक एकदम वहां से भागा। सर्राफ के आदमी उसे पकड़ने लपके। कुछ ही दूर गए थे कि...
ठहरो ! तुम चारों ओर से पुलिस के घेरे में हो !
!!!
पुलिस ! कैसे ? पापा !
!?!
जनवरी १९९४ । ४०
कुलदीप

उसी दिन रात को...
मंगू पकड़ा गया... चैन की नींद आएगी। मगर विवेक, तुमने भी कमाल कर दिया...
पापा, आपको पता कैसे लगा कि मैं...
तुम्हारे जाते ही मैंने पापा को फोन पर सब कुछ बता दिया था न...
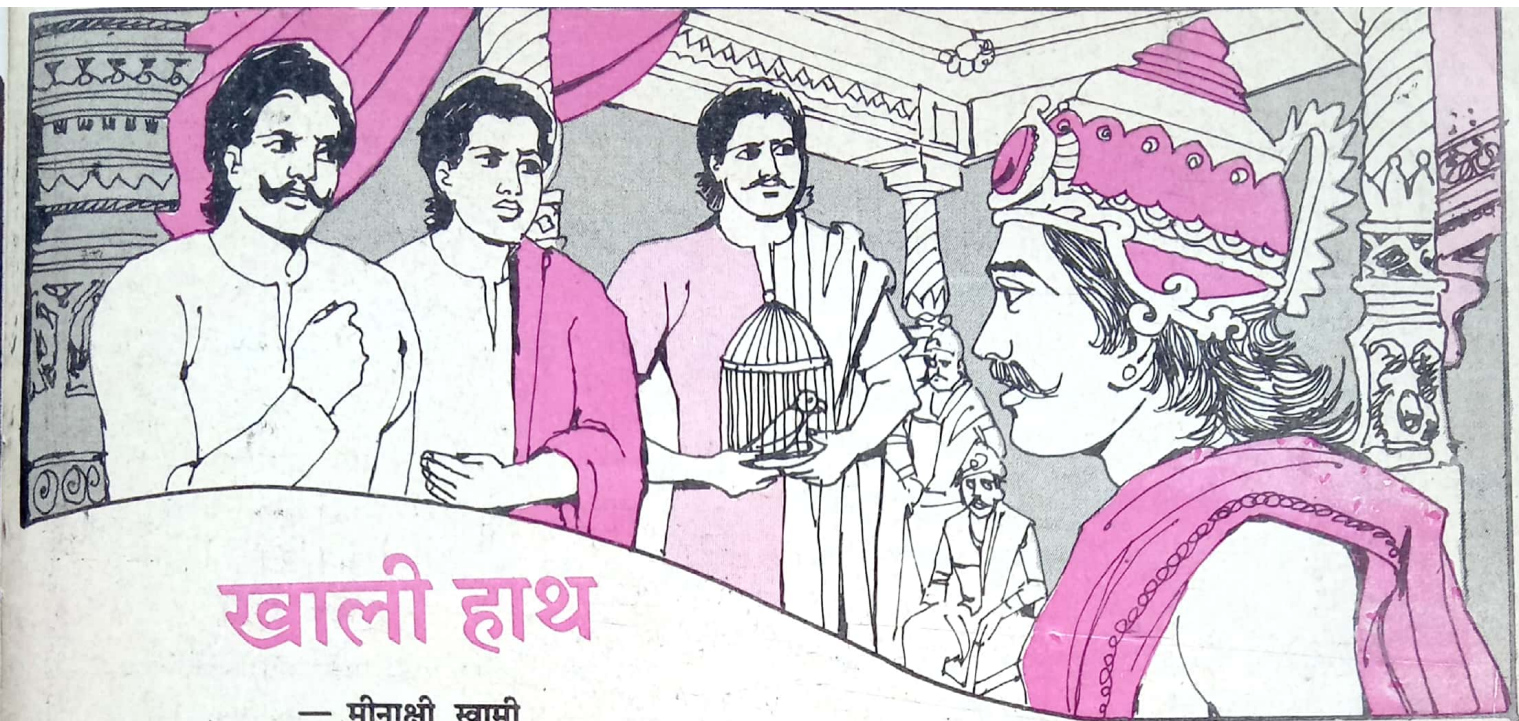
खाली हाथ

— मीनाक्षी स्वामी

बहुत वर्ष पहले अवंतिपुर में न्यायमित्र नाम का एक राजा राज्य करता था। वह न्यायप्रिय था। राज्य में खुशहाली थी। नागरिक राजा का बहुत सम्मान करते थे।

राजा जनता की भलाई के कामों पर बहुत ध्यान देता था। जन कल्याण के कार्यक्रमों की देखभाल के लिए राजा ने एक व्यक्ति को नियुक्त करने का विचार किया। इस पद के लिए योग्य व्यक्ति की तलाश की जाने लगी। एक दिन तीन युवक धनपत, विजयसेन और जनार्दन दरबार में आए। तीनों ही होनहार एवं बुद्धिमान थे। राजा ने उन सब से अलग-अलग बात की। पर उन तीनों में से कौन अधिक योग्य है, यह तय कर पाना राजा के लिए कठिन हो गया। अब उसने तीनों युवकों की परीक्षा लेनी चाही।

राजा ने तुरंत तीन तोते मंगवाए। तोते अलग-अलग पिंजरों में बंद थे। राजा ने तीनों को एक-एक पिंजरा देते हुए कहा— "तुम तीनों को एक-एक माह का समय दिया जाता है। जो अपने तोते को सबसे ज्यादा उपयोगी और परोपकारी बनाएगा, उसे ही जनकल्याण-अधिकारी का पद दे दिया जाएगा।"

तीनों युवक अपना-अपना पिंजरा लेकर चले गए।

एक माह बाद राजा का दरबार लगा। मंत्री पुष्पमित्र ने कहा— "महाराज, आज एक माह बीत गया, वे तीनों युवक आते ही होंगे।"

दरबारियों को भी उत्सुकता थी। तभी धनपत ने तोते के साथ प्रवेश किया। प्रवेश करते ही उसके तोते ने कहा— "राम-राम राजन्!" राजा ने भी राम-राम कहकर जवाब दिया।

धनपत तोते को राजा के पास ले गया। धनपत ने तोते को कुछ भजन याद करवाए थे। तोता मधुर स्वर में गाने लगा—

"गोपाला गोपाला रे। प्यारे नंदलाला, प्यारे नंदलाला हो बांसुरीवाला।"

तोते को ऐसे बोलता देख, सभी दरबारी दंग रह गए। उन्होंने धनपत की बहुत प्रशंसा की।

राजा भी 'वाह-वाह' कहे बिना न रह सका। उसने कहा— "वाह धनपत। तुमने तो बड़ी जल्दी तोते को पंडित बना दिया। तुमने यह कठिन काम कैसे किया?"

अपनी प्रशंसा सुन, धनपत फूलकर कुप्पा हो गया। बोला— "महाराज, मैंने शुरू में काफी कोशिश की, पर कोई परिणाम न निकला। तब मैंने तोते को भूखा रखा, फिर सिखाया। भूख से परेशान और भोजन के लालच में यह भजन सीखता गया।"

तभी द्वार पर 'महाराज की जय हो' का मधुर स्वर गूंजा।

सबकी निगाहें द्वार की ओर उठी। यह स्वर विजयसेन के तोते का था। वह द्वार पर अपने तोते के साथ खड़ा था। विजयसेन भी तोता लेकर दरबार में पहुंचा। उसके इशारे पर तोते ने अच्छी-अच्छी एक-दो नीति कथाएं सुनाईं। विजयसेन के तोते की भी दरबारियों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

राजा ने विजयसेन से पूछा— "एक महीने में तोते को विद्वान बना देना, बहुत मेहनत का काम है। यह काम तुमने कैसे किया ?"

विजयसेन ने गर्व से सीना ताना। मूंछ पर हाथ फेरते हुए कहा— "महाराज, भय के बिना तो प्रेम भी नहीं होता, फिर ज्ञान कहां से आएगा ? मैंने तो बचपन में ही सुना था— 'छड़ी पड़े छम-छम, विद्या आए झम-झम।' अतः मैंने तोते को मार-मारकर सारी बातें रटाई हैं।"

तभी सहसा जनार्दन ने भी खाली हाथ दरबार में प्रवेश किया। उसको खाली हाथ देखकर दरबारी चकित हो गए। वे खुसुर-फुसर करने लगे।

परंतु जनार्दन के चेहरे पर न तो खीज थी, न भय। उसने राजा को प्रणाम किया।

राजा ने जनार्दन से पूछा— "कहो युवक, तुम्हारा तोता कहां है ?"

जनार्दन ने हाथ जोड़कर कहा— "क्षमा करें महाराज। मैंने तो उसी दिन उसे नील गगन में विचरने के लिए छोड़ दिया। अब आजाद होकर, वह किसी जंगल में सुख से घूम रहा होगा।"

राजा ने पूछा— "क्यों, तुमने ऐसा क्यों किया ?"

जनार्दन ने जवाब दिया— "महाराज, जंगल का प्राणी जंगल में ही प्रसन्न रहता है। फिर प्रकृति ने भी तोते को आजाद विचरण करने के लिए बनाया है।"

यह उत्तर सुन, राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा— "शाबाश युवक, तुम परीक्षा में सफल हुए। किसी प्राणी को भूखा रखकर या दंड देकर ज्ञानी बनाना उचित नहीं है। प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखने से ही समाज का भला होता है। तुम इस पद के लिए योग्य हो।" ●

लौटी खुशी

—शम्सुद्दीन

मैं उन दिनों अमेरिका के लास वेगास नामक शहर में लेफ्टिनेंट कर्नल फिलिप्स के यहां अतिथि के रूप में रह रहा था। फिलिप्स मिलनसार और हंसमुख थे। उनकी पत्नी भी उदार और धार्मिक थीं। फिलिप्स की लड़की का नाम पेम और लड़के का नाम पाल था। पूरा परिवार सुखी था।

एक बार फिलिप्स को कार्यवश इटली जाना था। हम सब उन्हें छोड़ने गए। उन्होंने शीघ्र ही लौटने का वायदा कर, हमसे विदा ली। उनकी गैरहाजिरी घर में हर कदम पर महसूस होती थी। इससे बचने के लिए हम सब अपने को किसी न किसी काम में व्यस्त रखते। इस तरह दिन बीतने लगे। सभी फिलिप्स की वापसी का इंतजार कर रहे थे।

एक दिन शाम पेम दौड़ती हुई आई। उसने कहा—"आज रात हमें दूध नहीं मिल सकेगा। कारण दूध की बाल्टी उलटने से सारा दूध गिर गया है।" तभी पाल ने आकर खबर दी कि ड्रेसिंग टेबिल का आइना टूट गया है।"

आधी रात को हमने देखा कि श्रीमती फिलिप्स बेचैन-सी इधर-उधर टहल रही हैं। पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्हें नींद नहीं आ रही है। वह बेचैनी महसूस कर रही हैं। तभी उन्होंने बाइबिल खोली, तो वह 'समुद्र पर' प्रार्थना वाला पृष्ठ था। उन्होंने वही प्रार्थना की। फिर वह बिस्तर पर चली गईं। उन्हें नींद नहीं आई। रात किसी तरह घबराहट में बीती।

सुबह हम सब नाश्ते की टेबिल पर इकट्ठे हुए। वहां हमें फिलिप्स का पत्र मिला। उसमें उन्होंने लिखा था कि नेपिल्स में उनका काम समाप्त हो गया है और वह अटलांटा नामक जहाज से वापस घर आ रहे हैं। फिर श्रीमती फिलिप्स ने पूरा पत्र हम सबको पढ़कर सुनाया। फिलिप्स साहब की वापसी की खुशखबरी से हम सब प्रसन्न थे। हमलोग नाश्ता कर रहे थे। सहसा दीवार घड़ी नीचे गिरकर टूट गई।

हम सब उलझन में थे। तभी हम सभी 'लास ऐंजलिस पोस्ट' दैनिक अखबार पढ़ने लगे। उसके पहले ही पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—अटलांटा जहाज नेपिल्स से आते समय एटलांटिक समुद्र में डूब गया। पढ़कर हम सब हैरान थे। सबने इस समाचार को बार-बार पढ़ा। मृत व्यक्तियों की हमने सूची भी पढ़ी। उसमें लेफ्टिनेंट कर्नल फिलिप्स का नाम पढ़, हमारे चेहरे पीले पड़ गए। श्रीमती फिलिप्स की आंखों से आंसू बहने लगे। पेम और पाल चीख-चीख कर रोने लगे।

मुहल्ले-पड़ोस के लोग श्रीमती फिलिप्स को सांत्वना देने के लिए आने लगे। मित्र और रिश्तेदार भी पहुंचे। चर्च में सूचना पहुंचते ही फिलिप्स साहब के लिए विशेष प्रार्थना का आयोजन किया गया। सभी ने उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

दूसरे दिन श्रीमती फिलिप्स उस बैंक में गईं, जहां फिलिप्स का खाता था। वह रुपए निकालना चाहती थीं। फिलिप्स ने कोई वसीयत नहीं छोड़ी थी। खाता भी उनके ही नाम पर था। बैंक के अधिकारियों ने श्रीमती फिलिप्स को रुपए देने से मना कर दिया। एक अधिकारी ने श्रीमती फिलिप्स को 'उत्तराधिकार प्रमाणपत्र' लाने की सलाह दी। वह निराश होकर घर पहुंचीं। अब मैं और उनके बच्चे श्रीमती फिलिप्स को लेकर 'उत्तराधिकार प्रमाणपत्र' के लिए बाहर जाने की तैयारी करने लगे।

सहसा हमने देखा-फिलिप्स घर में प्रवेश कर रहे हैं। भरोसा नहीं हो रहा था। हम सब उन्हें निहारे जा रहे थे। वह कुर्सी पर बैठ गए। हम सबको चुप देख, वह आश्चर्य में थे। उन्होंने हमसे चुप रहने का कारण पूछा। उत्तर में मैंने 'लास ऐंजलिस पोस्ट' अखबार उनके सामने बढ़ा दिया। उसे देख फिलिप्स ने सिर हिलाया। अब तो हमलोग और आश्चर्य में पड़ गए।

थोड़ी देर बाद फिलिप्स ने कहा—"मैं नेपिल्स से अटलांटा पर सवार हुआ। एक रात जहाज समुद्र में डूबने लगा। बचने का कोई रास्ता न देख, मैं समुद्र में कूद पड़ा। मैं सारी रात तैरता रहा, किंतु किनारा नहीं मिला। सुबह होते-होते मैं पूरी तरह थक चुका था। सुबह मुझे लगा कि अब मैं डूब जाऊंगा। किंतु तभी टूटे हुए जहाज का एक तख्ता मेरे हाथ लग गया। एक बार फिर मैंने साहस बटोरा और तख्ते के सहारे तैरने लगा।

अचानक एक बचाव करने वाली नौका मेरे पास आई। मैं किसी तरह उसमें बैठ गया। नौका तट पर लगी। मैं हवाई जहाज से लास वेगास आया। और अब आप सबके सामने मैं सही-सलामत खड़ा हूं।" कहकर वह मौन हो गए। यह सुनकर घर में एक बार फिर खुशी की लहर दौड़ गई। ●

पंच का फैसला

— डा. भगवतीशरण मिश्र

वे दोनों मित्र थे। एक-दूसरे के बिना वे पहर भर भी मुश्किल से रह पाते थे।

दोनों का नाम भी मिलता-जुलता था। एक था सुखदेव दास। दूसरा महादेव दास। गांव में रहते थे। खेती-बाड़ी उनका पुश्तैनी पेशा था।

खेती के दिनों में वे अपने-अपने हल और बैलों को लेकर साथ-साथ निकलते। बारी-बारी से अपनी बुद्धि की पिटारी खोलते जाते।

''बोलो, आज वर्षा होगी कि नहीं ?''— सुखदेव पूछता।

''नहीं।''— महादेव छूटते ही बोलता।

''क्यों ? आसमान में तो काले-काले बादल घुमड़ रहे हैं। ये बादल बरस कर ही रहेंगे।''— सुखदेव अपना तर्क देता।

''ये उमड़ते बादल हवा के एक झोंके से दूर उड़ जाएंगे। यहां तो ये अभी बरसने से रहे।''— महादेव अपनी बात पर अड़ा रहता।

''तुम्हारे इस विश्वास का आधार ?''— सुखदेव पूछता।

महादेव जवाब देता—''घाघ का कहा-लोट-पोट बहे पुरवाई, तब जानो बरसा घहराई।''

''पुरवइया हवा का तो कहीं पता नहीं। पछवा डोल रही है। फिर वर्षा किधर से होगी ?''— महादेव फिर सुखदेव से सवाल भी करता।

सुखदेव, महादेव के इस तर्क पर चुप हो जाता। वर्षा भी कई दिनों तक नहीं होती थी। काले-काले मेघ हवा की सवारी पर न जाने किस दिशा को चल देते।

महादेव अपनी बुद्धि पर गर्व करता और सुखदेव को कई दिनों तक चिढ़ाता रहता— ''देखा मेरी बुद्धि का कमाल ! खेती-बाड़ी की बात तो कोई मुझसे पूछे ! तुम तो इसमें निरे अनाड़ी हो।''

सुखदेव चुप रहता और अपनी बारी की प्रतीक्षा करता। महादेव को सबक सिखाने की ताक में रहता।

धान पकने का समय आता। खेत में पीले-पीले पौधे झूम उठते। उनकी फुनगियों पर पके धानों की बालियां लहरा उठतीं। गांव में खुशी छा जातीं। पर सुखदेव हवाओं को सूंघता और बेचैन हो जाता।

रोज की तरह दोनों दोस्त खेतों की ओर जाते। खेतों पर पहुंचते ही महादेव की बांछें खिल जातीं। धानों की झूमती बालियां उसके मन को मोह लेतीं। महादेव बीस बीघे का खेतिहर था। सुखदेव पांच बीघे का। चकबंदी ने दोनों के खेतों को एक साथ और आस-पास कर दिया था।

महादेव दूर-दूर तक फैले अपने खेतों को देखता। धान की पकी फसल उसको खुश कर देती। वह बोल पड़ता— ''भइया, इस बार तो खेत धान से भर जाएगा ! तुम्हारे पांच बीघे भी सोना उगलेंगे।''

सुखदेव बोलता— ''इस बार खेत खाली ही रहेंगे ! तुम्हें हानि अधिक होगी, पर मुझे भी दाने के लाले पड़ जाएंगे। इस बार तो किस्मत ने भी साथ नहीं देने की कसम खा ली है।''

महादेव कहता— ''सामने धान के रूप में दमकता सोना फैला पड़ा है और तुम मायूसी की बातें करते हो ? दो-चार दिनों में तुम धान की बोरियों के मालिक होंगे।''

''पर दो-चार दिनों में ही प्रलय आ जाएगी।''— सुखदेव फिर हवाओं को सूंघता और कह देता।

" क्या कह रहे हो भाई ? इस शुभ घड़ी में यह अशुभ बात ?"— महादेव अपने खेतों की ओर गर्व से निहारता हुआ बोलता ।

"मैं ठीक कह रहा हूं । दो-चार दिनों में घनघोर वर्षा होगी । आलुओं के बराबर ओले पड़ेंगे । फसल नष्ट हो जाएगी । धान का एक दाना भी नहीं बचेगा ।"— सुखदेव की आंखों में पानी भर आता ।

"यह तुम किस आधार पर कह रहे हो ? आसमान तो साफ है । किसी कोने में बादल का एक टुकड़ा तक नहीं । तुम यह बरसात और हिमपात की बात कहां से ले उठे ?"— महादेव, सुखदेव की हंसी उड़ाते हुए कहता ।

"मैं अपनी समझ के आधार पर बोल रहा हूं महादेव । चलो, घर लौट चलें । जिस बात पर कोई अधिकार नहीं, उसको लेकर क्या रोना ?"— सुखदेव बोलता और खेतों पर नजर डालते हुए लौट पड़ता । महादेव को भी उसका साथ देना पड़ता ।

ठीक दो-तीन दिनों के अंदर ही आकाश काले-काले, भयानक मेघों से भर जाता । जोर की हवाएं बहतीं । सफेद ओले फसल को नष्ट कर देते ।

महादेव इस बात पर सिर पीट लेता । सुखदेव भी कम दुःखी न रहता था । महादेव को भी सुखदेव की चिंता सताती थी । महादेव धनी किसान था । उसके पास अभी पिछले साल का ही धान पड़ा था । अगली उपज तक वह उसी से काम चला लेता । पर अपनी हार और सुखदेव की जीत उसे सालती ।

एक बार जब बात बर्दाश्त के बाहर हो गई, तो उसने सुखदेव से कहा — "हम दोनों मित्र हैं, मित्र ही बने रहेंगे । धान की फसल पिट गई, तो कोई बात नहीं । मैं तुम्हें अनाज उधार दे दूंगा, पर एक बात का फैसला हो जाना चाहिए ।"

"किस बात का ?"— सुखदेव ने पूछा ।

–"इसी बात का कि हम दोनों में अधिक बुद्धिमान कौन है ? मैंने जब कहा था कि वर्षा नहीं होगी, तो नहीं हुई । तुमने कहा कि फसल पिट जाएगी, तो फसल पिट गई । दोनों की बातें सही हुईं । अब यह तय हो ही जाना चाहिए कि हम में कौन अधिक बुद्धिमान है ?"

सुखदेव मुसकरा कर कहता— "हम दोनों मित्र हैं । मैं तुम्हें अपने से अधिक बुद्धिमान समझता हूं ।"

पर महादेव इससे संतुष्ट नहीं हुआ । उसने सुखदेव से कहा— "चलो गांव के सरपंच के पास । वहीं सरपंच से यह फैसला करा लेते हैं ।"

"किसका ?"— सुखदेव ने पूछा ।

"यही कि हम दोनों में कौन अधिक बुद्धिमान हैं ?"— महादेव को विश्वास था कि गांव का धनी आदमी होने के कारण सरपंच उसी का पक्ष लेगा ।

"इसकी तो कोई आवश्यकता नहीं । पर तुम चाहते हो,तो चलो ।"— सुखदेव बोला। उसे सरपंच के न्याय पर विश्वास था ।

सरपंच ने दोनों की बातें सुनीं । फिर अपना फैसला सुना दिया— "महादेव, तुम धनवान हो सकते हो, पर बुद्धिमान तुमसे अधिक सुखदेव ही है । तुमने घाघ की कहावत का सहारा ले कर अपनी बात कही और वह सही हो गई । पर सुखदेव ने जो कुछ कहा, अपनी बुद्धि के बल पर और वह भी सही हो गया । तुम्हारी बुद्धि उधार की है । लेकिन इसके पास अपनी बुद्धि है ।"

दोनों ने सरपंच के न्याय को सिर झुकाकर स्वीकार किया और हाथ में हाथ मिलाकर वहां से लौट चले । उनकी मित्रता में इस फैसले से कोई अंतर नहीं आया । ●

साधु की बात

—फिगार बुलंदशहरी

वीरदेव शंकरगढ़ का राजा था। वह बहुत बहादुर और पराक्रमी था। उसने अपने पराक्रम के बल पर बहुत से राज्यों को जीता। प्रजा उसका सम्मान करती थी, लेकिन धीरे-धीरे वीरदेव में अहंकार की भावना आने लगी। उसे अपने पराक्रम पर घमंड होने लगा। उसने प्रजा के सुख-दुःख का ध्यान रखना बंद कर दिया। वह राजमहल से प्रजा के हालचाल की खबर लेने भी बाहर न निकलता।

पड़ोसी राज्य राजगढ़ का राजा देवधर बड़ा चालाक था। उसने मौके का फायदा उठाकर शंकरगढ़ पर आक्रमण कर दिया। देवधर की सेना शंकरगढ़ की सेना को परास्त करती हुई आगे बढ़ने लगी। शंकरगढ़ की प्रजा भयभीत हो, इधर-उधर भागने लगी, लेकिन राजा वीरदेव राजमहल में पड़ा सुख की नींद सोता रहा।

अंत में राज्य की प्रजा की हालत देखकर, एक साधु राजा के पास गया और बोला—"राजन, सत्य को पहचानो। इस तरह कायरतापूर्ण जीवन बिताने से अच्छा है, रणक्षेत्र में हंसते-हंसते प्राण दे देना।" यह कहकर साधु वहां से चला गया।

अगले दिन राजा ने अपने सेनापति को बुलवाया। बोला—"सेनापति जी, राज्य में मुनादी करवा दो। जो मेरे प्रश्नों का सही उत्तर देगा, उसे एक लाख स्वर्ण मुद्राएं प्रदान की जाएंगी।"

सेनापति ने राजा की आज्ञा का तुरंत पालन किया। राज्य में तत्काल मुनादी करवा दी गई।

निश्चित समय पर राजा दरबार में पहुंचा। दरबार में बड़े-बड़े ज्ञानी व्यक्ति उपस्थित थे। सभी ने खड़े होकर राजा के प्रति सम्मान व्यक्त किया। राजा ने सिंहासन पर बैठते हुए उनसे बारी-बारी से प्रश्न पूछे—"सत्य क्या है? असत्य क्या है?" लेकिन कोई भी राजा के प्रश्नों का सही उत्तर न दे सका। आखिर में एक बालक राजा के सम्मुख आया। राजा ने उससे पूछा—"क्या तुम मेरे प्रश्नों का उत्तर दोगे?"

"अवश्य।"—बालक ने गम्भीरता से कहा।

"ठीक है, पहले यह बताओ सत्य क्या है?"—राजा ने पूछा।

—"दुनिया में केवल दो ही सत्य हैं, जीवन और मृत्यु। जिस प्रकार मृत्यु को नहीं टाला जा सकता, उसी प्रकार जीवन को भी रोका नहीं जा सकता।"

"और असत्य?"—राजा ने फिर प्रश्न किया।

—"दुनिया की सभी चीजें। क्योंकि किसी भी चीज का कभी भी विनाश हो सकता है।"

"मेरे राज्य का भी?"—राजा ने चिंतित स्वर में पूछा।

"अवश्य, एक दिन आपके राज्य का भी विनाश हो सकता है। राज्य तो अवश्य रहेगा, लेकिन वह आपका राज्य न होगा।"—बालक ने निर्भीकता से कहा।

राजा ने बालक को एक लाख स्वर्ण मुद्राएं प्रदान कर, विदा कर दिया।

सबेरा होते ही राजा अपनी सेना के साथ पूर्व की ओर चल दिया, जहां देवधर की सेना शंकरगढ़ की प्रजा को मारती-काटती आगे बढ़ रही थी। वीरदेव मरते हुए लोगों को देख, क्रोध से पागल हो उठा। उसने अपनी तलवार निकाल ली और देवधर को ललकारते हुए कहा—"देवधर, इस तरह निहत्थी प्रजा को मारना बहादुरी नहीं है। अगर तुझमें हिम्मत है, तो मेरी तलवार से टक्कर ले।"

वीरदेव और देवधर की तलवारें आपस में टकरा गईं, लेकिन पराक्रमी और बहादुर राजा वीरदेव के आगे देवधर ज्यादा देर न टिक सका।

देवधर के मरते ही सेना में खलबली मच गई। जिसको जिधर सूझा, उधर ही अपनी जान बचाकर भाग लिया।

वीरदेव विजयी होकर लौटा। राजा का जगह-जगह स्वागत किया गया। कवियों द्वारा उसकी वीरता के गीत गाए गए। ●

भागा खरगोश

—डा. वीरेंद्र शर्मा

एक गांव में माली और उसका परिवार रहता था। एक बार उसके खेत में बहुत अच्छी फसल हुई। तरह-तरह की सब्जियां और पीले बड़े-बड़े काशीफल। काशीफल बहुत अधिक थे। उसने उन्हें बाहर बेचने का विचार किया।

एक दिन प्रातःकाल ही अपनी गाड़ी, सब्जियों से लादकर वह मंडी की ओर चल पड़ा। काफी दूर चलने के बाद, वह एक किसान के घर के सामने से गुजरा। इस किसान के पास कोई घोड़ा नहीं था। गाड़ी को देखकर किसान ने माली को रुकने का संकेत किया। किसान की पत्नी ने पूछा—''इस गाड़ी में क्या भरा है ?''

माली ने मजाक में उत्तर दिया—''इस में घोड़ी के अंडे हैं।''

किसान की पत्नी घर के अंदर गई। किसान से सलाह करके उसने एक बड़ा पीला काशीफल खरीद लिया। माली के चले जाने के बाद, किसान की पत्नी काशीफल को खलिहान में ले गई। घास-फूस-पत्तियों के बीच में रख दिया, जिससे अंडे में से घोड़ी का बच्चा निकल आए। अब दिन-रात वह इसी की देखभाल करती रहती। घर का सारा काम किसान करता था।

तीन सप्ताह हो गए। किसान की पत्नी खेतों के बीच खलिहान से अभी नहीं लौटी थी। किसान घर में काम करते-करते तंग हो गया था। वह पत्नी के पास खलिहान में पहुंचा। उसने देखा वह बहुत थकी और चिंतित लग रही थी। किसान ने उसे समझाया। कहा—''चलो, घर लौट चलो। यह सब झमेला छोड़ो। इसमें कुछ होने वाला नहीं है।''

लेकिन पत्नी नहीं मानी। उसने कहा—''घोड़ी का बच्चा अवश्य मिलेगा।'' बहुत समझाने-बुझाने पर भी पत्नी नहीं मानी, तो किसान ने घास-फूस, पत्ती-टहनी के ढेर में जोर से ठोकर लगाई, जिससे काशीफल टुकड़े-टुकड़े हो, इधर-उधर फैल गया। इसी बीच भूसे के अंदर से एक खरगोश निकलकर भागा।

किसान की पत्नी ने सोचा—'अवश्य ही यह घोड़ी का बच्चा है।' वह उसके पीछे भागने लगी। लेकिन काफी दौड़ने के बाद भी, जब वह उसे नहीं पकड़ पाई, तो हताश हो लौट आई। वह किसान के पास आकर बोली—''अगर आपने कुछ और इंतजार किया होता, तो हमें घोड़ी का बच्चा अवश्य मिल जाता।''

(कनाडा की लोककथा)
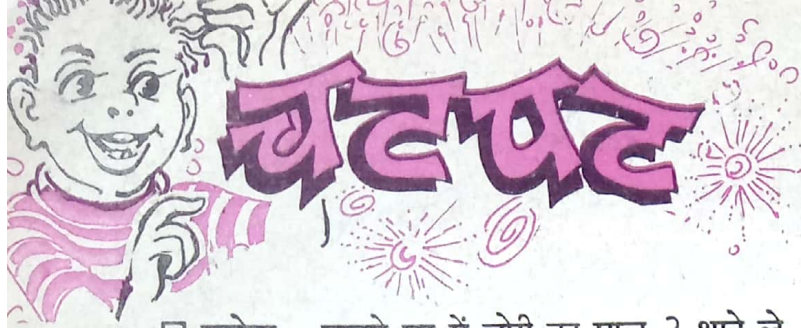
☐ दारोगा—तुम्हारे घर में चोरी का माल ? थाने ले जाऊंगा ।
चोर—मुझे या माल को ?

☐ मालकिन—रामू, मेहमान आने वाले हैं । ऐसी खातिरदारी करना कि सब याद रखें ।
रामू—ठीक है मालकिन ! बस यह पता चल जाए कि वे अपना सामान कहां रखेंगे ?

☐ मां—बेटा, आज तो छुट्टी है, स्कूल जाकर क्या करोगे ?
बेटा—ऐसे ही दिन तो स्कूल जाने की इच्छा होती है ।

☐ पर्यटक—वाह ! क्या होटल है ? आपके यहां तो पानी भी चांदी के गिलास में मिलता है ।
वेटर—हां साहब, इन्हें बार-बार धोना नहीं पड़ता ।

☐ एक शिकारी—पास में बंदूक है, फिर भी डर रहे हो । क्यों ?
दूसरा शिकारी—गोलियां घर पर जो भूल आया हूं ।

☐ सर्जन (अपने सहायक से)—बड़ा खतरनाक डाकू है । जैसे ही होश में आए, मुझे तुरंत खबर करना ।
सहायक—जी जरूर...अगर मैं होश में रहा ।

☐ अभियुक्त—जज साहब, अनजाने में हुई गलती के लिए पांच साल की सजा ?
जज—हां, अनजाने में इतनी ही तो मिल सकती है ।

☐ दुकानदार— भाईसाहब ! यह संदूक बड़ा मजबूत है, तोड़ने से भी नहीं टूटेगा ।
ग्राहक—इसे रहने दीजिए, चाबियां खो गईं तो...

☐ एक आदमी—लोग मेरी इतनी इज्जत करते हैं । मुझे देखते ही सिर झुका लेते हैं ।
दूसरा आदमी—ऐसा तो वे नाई के साथ भी करते हैं ।

☐ दारोगा—तुमने कभी मुझे दौड़ते देखा है ?
पुलिस वाला—जी कभी नहीं । क्योंकि आप हमारे पीछे रहते हैं ।

☐ राहगीर—मैं इस शहर में नया-नया हूं । कोई अच्छा होटल बता दीजिए ।
आदमी—किसी में भी ठहर जाइए । हर होटल के पास डाक्टर की दुकान है ।

☐ कोतवाल—जब तुम्हारी जेब कटी, तो उसमें कितने रुपए थे ?
राहगीर—याद नहीं । हां, जेब कतरे से आप पूछ सकते हैं ।

☐ एक मित्र—तुम ऐसी गंदी जगह रहते हो ? यहां तुम्हें देखकर तो मेरा रोने को मन करता है ।
दूसरा मित्र—ठीक है, जब तक चाहो, तुम रोओ । मैं बगल में बैठा हूं । जब रोना बंद कर दोगे, मैं आ जाऊंगा ।

☐ एक व्यक्ति (चित्रकार से)— क्या आप बीस मिनिट में कुत्ते का चित्र बना सकते हैं ?
चित्रकार—क्यों नहीं । उस स्टूल पर बैठ जाइए । कोशिश करता हूं ।

तेनालीराम ३०६

थैली किसकी

एक बार विजयनगर में अकाल पड़ा । उस पर काबू तो पा लिया गया, किंतु खजाना खाली हो गया । कृष्णदेव राय परेशान हो उठे । क्या करें, क्या न करें ।

एक दिन दरबार में एक किसान आया । उसके पास बड़ी-सी थैली थी । थैली राजा के सामने रखकर वह बोला— ''महाराज, यह मुझे रास्ते में मिली । भारी है, इसलिए इसमें अवश्य सोने की मुहरें हैं । इसे इसके मालिक के पास पहुंचा दिया जाए ।''

राजा ने थैली खुलवाई । उसमें सोने की एक हजार मुहरें थीं । अब सवाल यह उठा कि थैली असली मालिक के पास कैसे पहुंचाई जाए ? मंत्री ने कहा— ''सारे राज्य में मुनादी करा देते हैं ।'' मगर मुनादी पर होने वाला खर्च भी काफी बैठता था ।

राजा ने कहा— ''ऐसा उपाय बताओ, सांप भी मर जाए, लाठी भी न टूटे ।''

सभी ने दिमाग दौड़ाए, मगर कुछ सूझा नहीं । तेनालीराम मुसकरा रहा था उसे देख मंत्री-पुरोहित बोले— ''उपाय तेनालीराम बताए, तो जानें ।''

राजा ने तेनालीराम की ओर देखा । तेनालीराम बोला— ''ऐसा उपाय मैं राज्य के जन-प्रतिनिधियों के सामने ही बताऊंगा ।''

मंत्री और पुरोहित यह सोचकर कि अब तो सारे राज्य के सामने तेनालीराम की किरकिरी होगी और खुश हो गए । उन्होंने निजी तौर पर सारे प्रतिनिधियों को आने की सूचना भेज दी ।

राज्य के सारे प्रतिनिधि विजयनगर में इकट्ठे हो गए । उनके सामने राजा ने तेनालीराम से उपाय पूछा । तेनालीराम हाथ जोड़कर बोला— ''यही उपाय है महाराज । आप इनसे राज्य का आर्थिक संकट हल करने के साथ-साथ अपने-अपने क्षेत्र में थैली का मालिक ढूंढ़ने के लिए भी कहें ।''

राजा का चेहरा खिल उठा । सबके सहयोग से खजाना तो भरा ही, थैली के मालिक का भी पता चल गया ।
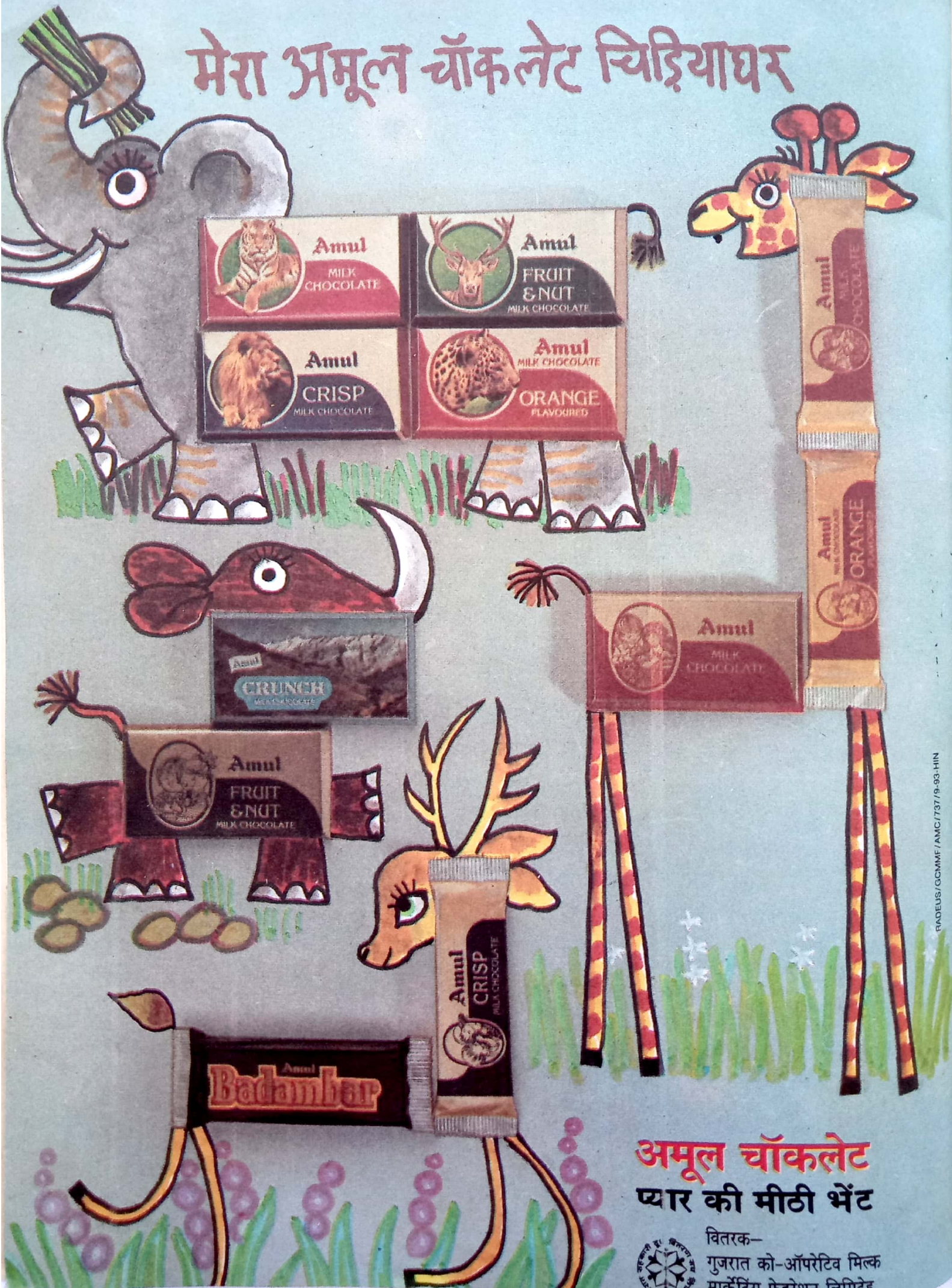
मेरा अमूल चॉकलेट चिड़ियाघर
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
FLAVOURED
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
MILK CHOCOLATE
ORANGE
Amul
MILK CHOCOLATE
Amul
CRUNCH
Amul
FRUIT & NUT
MILK CHOCOLATE
Amul
CRISP
MILK CHOCOLATE
Amul
Badambar
RADEUS/GCMMF/AMC/737/9-93-HIN
अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट
वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव मिल्क
मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड

अदल-बदल

— श्रीनिवास वत्स

महाराज हेमचंद्र चित्रनगरी के दयालु शासक थे। उनके राज्य में प्रजा सुख से रह रही थी। लेकिन कुछ दिनों से डाकू महासिंह के गिरोह ने नगर में आतंक फैला दिया था। डाकू रूप बदलने में माहिर थे। कभी भिखारी, तो कभी सेठ-साहूकार बनकर नगर में घुस आते। मौका पाते ही लोगों को लूट लेते और कभी-कभी हत्या भी कर देते।

एक बार राजसेवकों ने नगर में घूमते महासिंह और उसके साथियों को पहचान लिया। वे उनके पीछे दौड़े, पर महासिंह अपने साथियों सहित भागकर जंगल में छिप गया। सूचना राजा तक पहुंची। महाराज हेमचंद्र ने अपने सैनिकों के साथ जंगल को घेर लिया। राजकुमार भानुविक्रम भी उनके साथ था।

जंगल में एक महात्मा मौन होकर पेड़ के नीचे तपस्या कर रहे थे। उसी वृक्ष पर दो गरुड़ बैठे थे। राजसैनिकों की चौकसी के कारण भागने की कहीं कोई गुंजाइश नहीं थी। तभी महासिंह को एक उपाय सूझा। उसने साथियों से कहा— ''शीघ्र ही इस महात्मा के कपड़े उतार दो।''

साथियों ने वैसा ही किया। महासिंह ने साधु के कपड़े स्वयं पहन लिए और अपने कपड़े मौनी साधु को पहना दिए।

दोनों गरुड़ यह सब देख रहे थे। साधु को बचाने के लिए वे डाकुओं पर झपटे। परंतु डाकुओं ने डंडे मार-मारकर उन्हें घायल कर दिया।

महासिंह ने चुपके से अपने साथियों से कहा— ''अब यह बाबा डाकू के रूप में पकड़ा जाएगा। इसने मौन व्रत धारण कर रखा है, अतः यह तो खुद बोलेगा नहीं। तुम सब कहना, यही हमारा सरदार है। तब इसके साथ-साथ राजा तुम्हें भी कैद में डालेगा। फिर एक दिन मैं साधु वेश में राज दरबार जाकर तुम्हें छुड़वा दूंगा।''

कुछ देर बाद राजा एवं सैनिक वहां पहुंच गए।

सैनिकों ने डाकुओं को घेर लिया।

राजकुमार ने घायल गरुड़ों को देखा, तो गोद में उठा लिया। अपने हाथों से उन्हें पानी पिलाया। मरहम-पट्टी की। अब वे धीरे-धीरे उड़ सकते थे।

राजा ने डाकुओं से पूछा— ''तुम्हारा सरदार कौन है ?''

गिरोह के सदस्यों ने साधु की ओर इशारा किया। कहा— ''यही हमारा सरदार है।''

राजा ने कहा— ''इसे हम स्वयं बेड़ियां पहनाएंगे। तुम जूतों की माला इसके गले में डाल दो। नगर में जलूस की शक्ल में घुमाते हुए इसे कैदखाने तक ले चलो।'' सैनिकों ने वैसा ही किया।

अगले दिन राजा सोकर उठे तो देखा, हाथ, पैर और गर्दन पर छोटे-छोटे सफेद दाग उभर आए हैं। हेमचंद्र को बहुत आश्चर्य हुआ। राजवैद्य को बुलाकर दिखाया, पर किसी को कुछ समझ नहीं आया। एक सप्ताह बाद ही उन सफेद दागों से दुर्गंध आने लगी। दरबारी आपस में कानाफूसी करने लगे कि राजा को कोढ़ हो गया है।

महारानी सुखवंती के दुःख का तो पार न था। राजकुमार भानुविक्रम पिता के पास बैठकर खाना खाता था। लेकिन अब तो दुर्गंध के कारण कोई राजा के पास दो पल भी नहीं ठहर सकता था। राजा महल के सबसे ऊपर वाले कमरे में अकेले बैठे रहते।

एक दिन साधु के वेश में महासिंह राजदरबार में

आया। उसने राजा से मिलने की इच्छा प्रकट की। राजसेवक उसे महाराज के पास छोड़ आए। महासिंह ने कहा— ''राजन, डाकू गिरोह के सदस्यों ने अपने सरदार के कहने पर पाप किए हैं। इसलिए सजा सरदार को ही मिलनी चाहिए। उसके साथियों को आप क्षमा कर दें। सम्भव है, उनकी दुआ से आप ठीक हो जाएं।''

साधु का कहा मान, राजा ने डाकू गिरोह के अन्य सदस्यों को छोड़ दिया। महासिंह और उसके साथी अपनी चाल पर खुश थे।

पिता की बीमारी से भानुविक्रम परेशान रहने लगा। एक दिन उसके मित्र प्रियशील ने कहा— ''कुमार, यूं कब तक उदास बैठे रहोगे? मौसम अच्छा है, चलो शिकार खेलने चलें।''

मित्र की बात मान, राजकुमार तैयार हो गया। दोनों अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो, जंगल की ओर चल दिए।

अचानक काले बादल घिर आए और जोरों की वर्षा होने लगी। भागकर दोनों ने नदी किनारे बने एक मंदिर में शरण ली। तूफान काफी देर चलता रहा। अंधेरा बढ़ने लगा। ठंड के कारण दोनों दुबककर मंदिर के कोने में बैठ गए। उन्होंने पास पड़े मृगचर्म ओढ़ लिए।

अभी कुछ ही क्षण बीते थे कि उन्हें पक्षियों की फड़फड़ाहट सुनाई दी। तभी दो पक्षियों ने मंदिर में प्रवेश किया।

'अरे, ये तो वही गरुड़ हैं।'— भानुविक्रम ने देखते ही पहचान लिया। वह कुछ बोलता, इससे पहले ही उसने देखा— दोनों पक्षी धीरे-धीरे अपना रूप बदलने लगे। कुछ ही देर में वे स्त्री-पुरुष के वेश में आ गए।

पुरुष ने कहा— ''भद्रे, लगता है, अब हमें शेष जीवन यूं ही पक्षी रूप में बिताना पड़ेगा।''

स्त्री बोली— ''देव, हम कर भी क्या सकते हैं? राजा ने मौनी साधु को महासिंह डाकू समझ, कैद में डाल दिया। इसलिए अब इस शाप से मुक्ति भी सम्भव नहीं।''

पुरुष ने कहा— ''दुष्ट महासिंह मौनी साधु बनकर राजा को धोखा दे रहा है।''

स्त्री बोली— ''महाराजा को कोढ़ हो गया है। राजमहल में उदासी छाई हुई है। लगता है, यह सब मौनी साधु के साथ किए बुरे बर्ताव का फल है!''

भानुविक्रम उनका वार्तालाप सुन रहा था। एकदम उठ खड़ा हुआ। उसके साथ-साथ प्रियशील भी खड़ा हो गया। मंदिर में अन्य पुरुषों को देख, दोनों स्त्री-पुरुष चौंककर बाहर भागने लगे।

तभी भानुविक्रम बोला— ''आप घबराइए मत। मैं राजकुमार भानुविक्रम हूं और यह मेरा मित्र प्रियशील है। हमने आपकी बातें सुन ली हैं। आप हमें पूरा वृत्तांत बताएं। सम्भव है, हम आपकी मदद कर सकें।''

भानुविक्रम से आश्वासन पाकर वे स्त्री-पुरुष रुक गए। पुरुष बोला— ''मैं शुभांग नामक गंधर्व हूं और

'यह है मेरी पत्नी श्वेता। एक बार हम दोनों जंगल से गुजर रहे थे। मौनी साधु अपनी तपस्या में लीन थे। हमने उनकी ओर ध्यान नहीं दिया। हमारी बातचीत से उनकी तपस्या भंग हो गई। तब क्रुद्ध होकर उन्होंने हमें शाप दे दिया कि तुम्हें एक साल तक मौन रहकर इसी पेड़ पर पक्षी रूप में निवास करना होगा। एक वर्ष बाद मैं यज्ञ करूंगा। उसके पवित्र धुएं से तुम शाप मुक्त हो सकोगे।

"शाप की बात सुन,. हम बहुत गिड़गिड़ाए। तब उन्होंने इतना ही कहा-'सिर्फ संध्या के समय मंदिर में पूजा हेतु तुम मानव रूप धारण कर सकते हो। मंदिर से बाहर निकलते ही पुनः पक्षी बन जाओगे।' हम तभी से उस पेड़ पर पक्षी बनकर निवास कर रहे हैं। उस दिन दुष्ट महासिंह ने साधु बाबा को डाकू के कपड़े पहनाकर पकड़वा दिया और स्वयं साधु का वेश बनाकर बैठ गया।"

राजकुमार ने पूछा— "लेकिन महाराज को कोढ़ क्यों हुआ?"

शुभांग बोला— "महाराज ने साधु बाबा के हाथों में हथकड़ियां डाली थीं, इसलिए उनके हाथों पर भी कोढ़ हो गया। पैरों में बेड़ियां डालीं, इसलिए राजा के पैरों में कोढ़ हो गया। बाबा के गले में जूतों की माला डाली, तो राजा की गर्दन पर भी घाव हो गए।"

प्रियशील ने पूछा— "इनका इलाज क्या हो सकता है?"

श्वेता ने बताया— "राजा मौनी साधु से क्षमा मांगे। उनके चरण धोकर उस पानी को अपने घावों पर डाले, तो सब ठीक हो सकता है।"

पिता जी स्वस्थ हो जाएंगे, यह जानकर भानुविक्रम खुशी से उछल पड़ा।

बिना ज्यादा समय गंवाए, दोनों मित्र अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो, महल में लौट आए। राजकुमार पिता जी के कक्ष में पहुंचा। जाकर सारा वृत्तांत कह सुनाया।

राजा को अपनी भूल का पता चला। नंगे पैर ही बाबा से क्षमा मांगने चल पड़ा। महारानी को पता
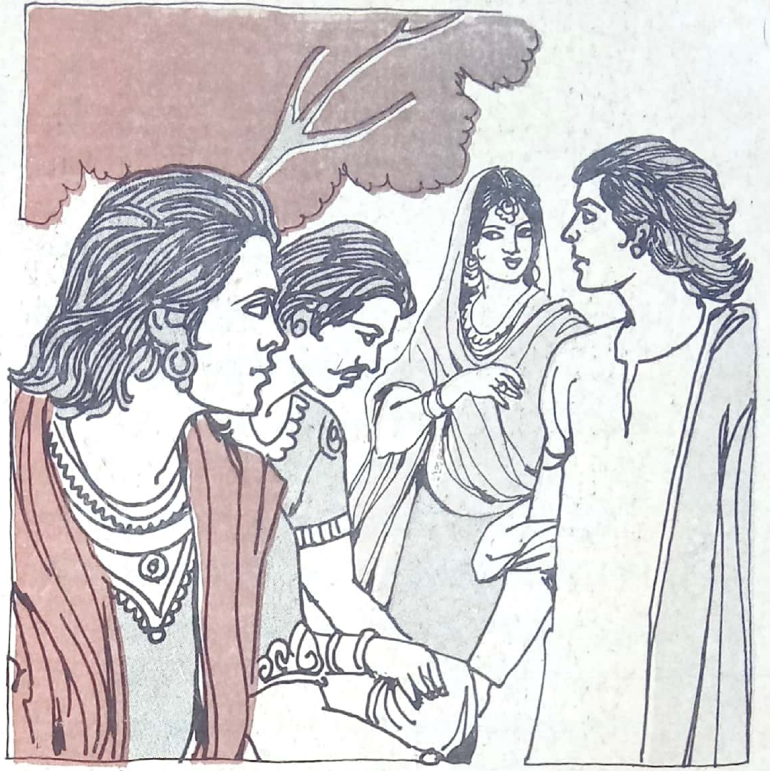
चला, तो वह भी कारागृह में पहुंच गई। बाबा अभी भी मौन होकर तपस्या में लीन थे। राजा ने स्वयं उनकी बेड़ियां खोलीं। फिर पैरों में गिरकर उनसे क्षमा मांगने लगे।

साधु ने एक नजर उठाकर राजा को देखा, जैसे कह रहे हों— 'जाओ, मैंने तुम्हें माफ कर दिया।'

राजकुमार ने बाबा के पैर धोए। उस पानी को अपने पिता के घावों पर छिड़क दिया। पानी लगते ही घावों से दुर्गंध बंद हो गई। वे धीरे-धीरे ठीक हो गए।

जब महासिंह को पता चला कि उसकी कलई खुल गई है, तो अपने साथियों सहित वह भागने लगा। पर तभी प्रियशील और राजसेवकों ने उसे घेर लिया। पकड़कर राजा के सम्मुख पेश किया गया। राजा के आदेश पर सैनिकों ने वही बेड़ियां महासिंह के पैरों में डालकर उसे कारागार में बंद कर दिया। उसके साथी भी कैद में डाल दिए गए।

अगले दिन सभी नगरवासियों ने मिलकर धूमधाम से बाबा को उनके आश्रम पहुंचाया। साधु बाबा आश्रम में पहुंचे, तो दोनों गरुड़ खुशी से फुदकने लगे। उन्हें लगा, शीघ्र ही बाबा यज्ञ करेंगे और यज्ञ के पवित्र धुएं से वे पुनः गंधर्व रूप में आ जाएंगे। ●

कौन सुनेगा

—ईश्वरलाल प. वैश्य

समुद्र के किनारे एक नगर था। वह नगर व्यापार का बड़ा केंद्र था। देश-विदेश के व्यापारी वहां आते थे। रोज लाखों रुपयों का लेन-देन और क्रय-विक्रय होता था।

नगर के मध्य में चौराहे पर एक विशाल घंटा लगा था। किसी नागरिक की मृत्यु होने पर उसकी प्रतिष्ठा के अनुरूप घंटनाद किया जाता था। सामान्य नागरिक के लिए एक बार, नगर सेठ अथवा किसी उच्च अधिकारी के मरने पर पांच बार और राजा के मरने पर दस बार घंटनाद किया जाता था।

एक बार विदेश से कोई बड़ा सौदागर पहली बार वहां आया। सौदा करने से पहले वह नगर का भ्रमण कर बाजार को समझ लेना चाहता था। अतः उसने एक प्रतिष्ठित व्यापारी के यहां अपना सामान रख दिया। उसका धन भी उसी सामान में बंधा था। बस सोने की मुहरों से भरी एक थैली अपने पास रखी।

शाम को बाजार लौटा। उसने अपना सामान देखा, तो उसका धन उसमें नहीं था। सौदागर ने व्यापारी से बात की। व्यापारी सौदागर को उस पर झूठा आरोप लगाने के लिए डांटने लगा और वहां से भाग जाने को कहा।

विदेशी सौदागर तो एकदम हैरान था। उसको नगर में कोई पहचानता भी नहीं था। जब उसने व्यापारी के यहां सामान रखा, तब दूसरा कोई वहां था भी नहीं। अब वह अपना धन चोरी जाने की फरियाद करता है, तो उसकी फरियाद सुनेगा भी कौन? कौन उस पर विश्वास करेगा? अपने को सच्चा साबित करने के लिए वह कोई प्रमाण भी नहीं दे सकता था।

आखिर उसको एक उपाय सूझा। वह नगर के चौराहे पर घंटा बजाने वाले के पास गया और उसको बीस बार घंटनाद करने को कहा। घंटावादक चक्कर में पड़ गया। बोला—"बीस बार क्यों?"

सौदागर के बार-बार आग्रह करने पर घंटावादक घंटा बजाने लगा। पहला घंटनाद होते ही नगरवासी चौंक पड़े—'कोई मर गया लगता है।' लेकिन ज़ब दूसरा घंटनाद हुआ, तो लोग अनुमान लगाने लगे कि कौन मर सकता है। लेकिन उसके बाद भी जब घंटनाद चालू ही रहा, तो नागरिक वास्तविकता जानने के लिए धीरे-धीरे चौराहे के इर्द-गिर्द इकट्ठे होने लगे।

जब घंटनादों की संख्या पांच से भी आगे बढ़ गई, तब सभी अधिकारी और मंत्री चौराहे की ओर आने लगे। चौराहे के चारों ओर भीड़ इकट्ठी थी। लेकिन घंटनाद अभी भी हो रहा था। घंटनादों की संख्या दस से भी आगे बढ़ गई।

घंटनाद सुनकर राजा भी वहां उपस्थित हो गया। वह भी जानना चाहता था, राज्य का नियम आज क्यों तोड़ा गया है? विदेशी सौदागर ने राजा से कहा—"महाराज! घंटवादक का कोई अपराध नहीं है। मेरे कहने से ही उसने इतने घंटनाद किए हैं।"

"लेकिन क्यों? तुम कौन हो और क्या चाहते हो?" —राजा ने सौदागर से पूछा।

—"महाराज! प्रजा-पालक और न्यायप्रिय राजा के रूप में आपकी ख्याति दूर-दूर तक फैली है। मैं विदेशी सौदागर हूं और आपसे इतना ही जानना चाहता हूं कि राजा और न्याय में बड़ा कौन है?"

"इसमें पूछने की क्या बात है? न्याय हमेशा बड़ा होता है। अपराध करने पर राजा को भी दंड दिया जाना चाहिए।" —राजा ने अपना मत प्रकट किया।

"महाराज! आज इस नगर में न्याय की मौत हो गई है। मौत की सूचना देने के लिए इतने घंटनाद करवाने पड़े।"— सौदागर ने कहा।

सौदागर ने पूरी घटना राजा को सुना दी। राजा ने तुरंत व्यापारी को बुलवाया। उसके घर की तलाशी करवाई। सौदागर का धन व्यापारी के गोदाम में मिल गया।

व्यापारी को कारावास में डाल दिया गया। विदेशी सौदागर को उसके मूलधन से दोगुना धन व्यापारी से दिलवाकर विदा कर दिया।

नंदन ज्ञान पहेली

१००० रु॰ पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
- **सम्पादक, 'नंदन' (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. आज तो फूलों-पत्तों में भी—उत्साह छलका पड़ता है। (नव/नया)

२. सब जग सुंदर, पर सबसे सुंदर—हमारी! (नानी/नाव)

४. तुम जगह-जगह—क्यों देखते फिरते हो? (मेले/मेवे)

८. —को अपना वचन याद दिला दीजिए मंत्री जी! (रानी/राजा)

९. —भी मुझे आना ही था। (तो/यूं)

११. लो, अब दिखाई दिया—! (हीरा/तारा)

१२. एक नदी जिसके किनारे गांधी जी ने आश्रम बनाया।

ऊपर से नीचे

३.—का घर देखने कब चलोगे भैया? (बया/माया)

५. कितने अच्छे—हैं तुम्हारे! (मित्र/नेत्र)

६. पलक झपकते ही वे सारे के सारे—गायब हो गए। (मोर/मोती)

७. जी, सुबह से वही—तो ढूंढ़ रहा हूं। (तोते/पते)

१०. प्रसिद्ध लेखक जो राजा हर्षवर्धन के समय हुए थे।

नंदन ज्ञान-पहेली : ३०१

नाम ____________________

उम्र ______ पता ____________________

____

नं. ज्ञा. प. ३०१

इतना सुंदर गांव

—योगिता त्रिवेदी

ताच्चाओ पर्वत की तलहटी की एक झोंपड़ी में डाबू नामक बुढ़िया रहती थी। डाबू के पति की मृत्यु हो गई थी। उसके तीन लड़के थे। बड़ा लमो, मंझला लेत्वी और छोटा लेरा।

डाबू कढ़ाई के काम में बहुत कुशल थी। वह रेशमी कपड़ों पर कमाल की कढ़ाई करती थी। बेलबूटे और पशु-पक्षी सजीव लगते थे। लोग पोशाकों और रेशमी चादरों पर कढ़ाई करवाकर बहुत खुश होते थे।

एक दिन डाबू ऐसी ही एक सुंदर चादर लेकर नगर में बेचने गई। एक दूकान पर उसने एक चित्र देखा। वह उसके मन को भा गया। चादर बेचने से जो पैसे मिले, उनसे उसने चावल कम खरीदे और वह चित्र भी खरीद लिया।

घर जाते हुए उसने कई बार उस सुंदर चित्र को देखा। सोचा— 'काश, मैं इस प्यारे गांव में होती।' घर पहुंचकर चित्र बेटों को दिखाया। उन्हें भी खूब पसंद आया। छोटे बेटे ने कहा— "मां, क्यों न यह चित्र चादर पर उतार लो।"

मां को सुझाव पसंद आया। उसने कढ़ाई शुरू की। कई दिन बीत गए, लेकिन वह पूरा नहीं हुआ। लमो और लेत्वी ने एक दिन कह ही दिया— "मां, आखिर कितने दिन और कढ़ाई करती रहोगी? हम चावल खरीदने के लिए लकड़ी काटकर बेचते-बेचते थक गए हैं।"

इस पर लेरा ने कहा— "मैं चावल खरीदने के लिए काम करूंगा। मां को कढ़ाई करने दो।" इस प्रकार दिन भर मेहनत करके वह घर का खर्च चलाने लगा। उधर डाबू दिन-रात कढ़ाई करने में लगी रही। रात को चीड़ की लकड़ी की रोशनी में काम करती। उसके धुएं से आंखों से आंसू बहकर चादर पर जहां-तहां गिरने लगते। उन स्थानों पर वह स्वच्छ जल की नदी, तालाब काढ़ देती। इस तरह तीन साल में चादर तैयार हुई।

तीनों बेटों ने उस सुंदर चादर की खूब प्रशंसा की। डाबू ने जरा कमर सीधी की। उसी समय पश्चिम दिशा से जोरदार हवा का झोंका आया और देखते ही देखते चादर उड़ गई। डाबू चीखती-चिल्लाती उसके पीछे भागी और बेहोश होकर दरवाजे के बाहर गिर पड़ी।

बेटों ने उसे उठाकर खाट पर लिटाया। डाबू ने होश में आने पर बड़े बेटे से चादर खोज लाने को कहा। लमो तुरंत रवाना हो गया।

एक माह की यात्रा के बाद वह पर्वत के दर्रे तक पहुंच गया। वहां एक मकान के पास पत्थर का घोड़ा खड़ा था। उसका मुंह खुला था, जैसे वह पास के बेरी के लाल फल खाना चाह रहा हो। मकान के बाहर एक बुढ़िया बैठी थी। उसके पूछने पर लमो ने खूबसूरत चादर के बारे में बताया। बुढ़िया ने कहा— "वह चादर तो सूर्य पर्वत की परियों के पास है। लेकिन वहां जाना बड़ा कठिन है।"

लमो के पूछने पर बुढ़िया ने कहा— "अपने दो दांत तोड़कर इस घोड़े के मुंह में लगाने से यह हरकत में आ जाएगा। जब यह बेरी के दस फल खा लेगा, तब इसकी पीठ पर बैठ जाना। यह सूर्य पर्वत पहुंचा देगा।"

यह सुनकर लमो घबरा गया। बुढ़िया ने उससे कहा— "यह तुम्हारे बस का काम नहीं है। मैं तुम्हें एक डिब्बा सोना देती हूं। घर जाओ और आराम से दिन गुजारो।"

लमो सोने को लेकर घर रवाना हो गया। लेकिन रास्ते में उसने अकेले ही एक नगर में रहकर मौज करने की सोची। घर न जाकर वह नगर को चला गया।

उधर डाबू दुःख और बीमारी के कारण बहुत कमजोर हो गई। दो माह तक लमो के वापस न आने पर उसने लेत्वी को चादर व भाई को खोजने भेजा। लेकिन वह भी लमो की तरह बुढ़िया से सोना लेकर बड़े नगर को चला गया।

दो माह प्रतीक्षा के बाद आखिरकार लेरा ने अपनी मां से कहा— "मां, मैं अपने भाइयों और चादर को

खोजकर लाऊंगा।"

लेरा फूस के जूते पहनकर बुढ़िया के घर पहुंचा। उसे भी सोने का लालच दिया गया। लेकिन वह तैयार नहीं हुआ। बिना डरे उसने एक पत्थर से दो दांत तोड़ लिए और घोड़े को लगा दिए। घोड़ा चल पड़ा। बेरी के दस फल खाते ही वह उस पर सवार हुआ। घोड़ा और जोर से हिनहिनाया और पूर्व की ओर सरपट दौड़ चला।

तीन दिन और तीन रात के बाद लेरा धधकते पर्वत पर पहुंचा। आग की लपटों और तपन से चमड़ी भी झुलस गई, लेकिन उसने उफ नहीं की। आधे दिन के बाद विशाल सागर के किनारे पहुंच गया। तूफानी लहरों व बर्फीले टुकड़ों के भीषण आघातों को भी चुपचाप सह लिया। आधे दिन के बाद वह समुद्र के पार पहुंच गया। सूर्य पर्वत पहुंचते ही सूर्य की रोशनी उसे अच्छी लगी।

फिर लेरा सूर्य पर्वत की चोटी से सुनहरे महल के पास गया। वहां भीतर से परियों के हंसने की आवाजें आ रही थीं। उसने घोड़े को एड़ लगाई। घोड़ा महल के बड़े हाल में पहुंच गया। वहां परियों को मां की चादर की तरह कढ़ाई करते देखकर आश्चर्य और खुशी हुई। चादर दीवार पर टंगी थी। सभी परियां उसकी नकल कर रही थीं।

लेरा को वहां देखकर परियां हैरान रह गईं। लेरा ने सारी बात बताई। परियों ने एक दिन की मोहलत मांगी। लेरा मान गया। उसे स्वादिष्ट फल और रहने को खूबसूरत कक्ष दिया। रात को मणियों के प्रकाश में परियां चादर बुनती रहतीं।

लाल परी ने सबसे पहले कढ़ाई कर ली। उसने डाबू की चादर से उसकी तुलना की। लेकिन डाबू की चादर बहुत अच्छी थी। उसमें लाल सूरज व फूल सच्चे दिखते थे। नदी-तालाब में साफ पानी भरा दिखता था। उस परी का मन भी उस गांव में रहने को हो आया। उसने देखा, अन्य परियों ने अभी चित्र नहीं बनाया है। उसने एक तालाब के पास अपनी कढ़ाई की हुई चादर रख दी।

अचानक रात में लेरा की नींद खुली। तब परियां अपने कमरे में सोने चली गई थीं। उसने सोचा—'यदि सुबह परियां चादर नहीं देंगी तो?' उसने चुपचाप चादर को लपेटा और कुर्ते में छिपा लिया। अपने घोड़े पर सवार हो, रातों-रात समुद्र व धधकते पर्वत को पार कर बुढ़िया की झोंपड़ी तक पहुंच गया।

बुढ़िया ने उसका स्वागत किया। उसके दांत घोड़े के मुंह से निकालकर लेरा के मुंह में लगा दिए। दांत पहले जैसी मजबूती से लग गए। बुढ़िया ने हिरण की खाल के जूते पहनाकर उसे विदा किया।

जल्दी ही वह घर पहुंचा। वहां उसकी मां बेहाल थी। थोड़ा अंधेरा होने के कारण वह मां को बाहर ले गया। चादर फैलाई। मां उसे देखकर बहुत अधिक खुश हो रही थी। तभी अचानक हवा का एक झोंका आया। चादर धीरे-धीरे फैलने लगी। हवा में एक खुशबू आई। चादर फैलते-फैलती दूर तक बिछ गई।

उधर डाबू की झोंपड़ी गायब हो गई। कई शानदार इमारतें, फल-फूलों के बाग और खेत नजर आ रहे थे। हरे-भरे मैदानों में पशु चर रहे थे। हू-ब-हू चादर पर कढ़ा हुआ दृश्य साकार हो गया।

अचानक डाबू ने देखा कि फूलों के बाग के तालाब के किनारे लाल पोशाक पहने एक युवती खड़ी है। डाबू ने उसके पास जाकर पूछा, तो उसने कहा—"मैं लाल परी हूं। चूंकि मेरा चित्र चादर पर बन गया है और मैं भी ऐसी जगह रहना चाहती थी, अतः इसके साथ यहां आ गई हूं।"

डाबू उसे अपनी इमारत में ले गई और अपने साथ रख लिया। कुछ दिनों के बाद लेरा से उसका विवाह हो गया। वे दोनों सुखमय जीवन बिताने लगे। फिर डाबू ने अपने पड़ोसियों को भी वहां रहने के लिए बुला लिया। कुछ दिन बाद लमो और लेत्वी वहां आए। इनके पास बुढ़िया का दिया सोना खत्म हो गया था। इसलिए भीख मांगकर अपना पेट भर रहे थे। डाबू ने उन्हें क्षमा कर दिया और वे भी साथ रहने लगे।

(च्याङ· लोककथा)

फोन तो डैड हो गया..

चलो रामू की साइकिल उधार लेते हैं

नया वर्ष मंगलमय हो रामू, जरा थोड़ी देर के लिए अपनी साइकिल..

नौसिखिए को साइकिल दे दी तो हो गया नया वर्ष मंगलमय...

सिर्फ बधाई नहीं दोस्त, कुछ मुंह भी तो मीठा...

तो आ जाना घर पर शाम को, बाकी दोस्तों को भी खबर कर देना

आइसक्रीम फ्रिज में और गुलाब जामुन दुछत्ती पर रख देते हैं, और चलते हैं बाकी मित्रों के घर...

सारी आइसक्रीम पिघल गई..

..और गुलाब जामुन चूहे खा गए। मित्रों के आने से पहले चलो छिप जाएं, कहीं साल के पहले दिन ही

शीर्षक बताइए

सो जा मेरी प्यारी गुड़िया : इस चित्र के ऐसे ही अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० जनवरी, १९९४ तक **शीर्षक बताइए, नंदन मासिक, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर नकद पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : मार्च '९४ अंक

पुरस्कृत चित्र

सुनीता मेथवानी, आयु ११ वर्ष, ७९ दीक्षित बाड़ी, जिल्हापेठ (सिविल अस्पताल के सामने), जलगांव, (महाराष्ट्र)

इनके चित्र भी पसंद आए—प्रियंका गोविल, चंदौसी; शुजाउद्दीन, चम्पानगर, भागलपुर; कुंतेश अम्बवानी, नई दिल्ली; अंशुल सक्सेना, सागर; श्वेता कुमारी द्वारा ५६ ए.पी.ओ; मोंटू शर्मा, धर्मशाला (हि. प्र.); सारिका धीमान, सहारनपुर।

बाल सभा
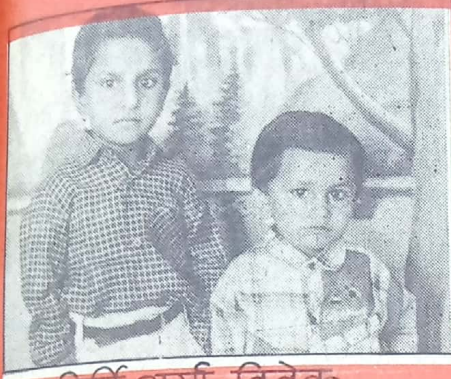
कीर्ति शर्मा, विवेक   नेहा   शेखर   विजयकुमार पंचोली

पत्र मिला

□ उपहारों से सजा 'नंदन' का नवम्बर अंक प्राप्त हुआ। इसकी कहानियां विशेष प्रशंसनीय थीं। राष्ट्रपति जी का चित्र बहुत पसंद आया। एलबम में छापे गए महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बारे में चित्र के साथ जानकारी भी छापा करें।

—रवींद्रमोहन कंठ, दलसिंह सराय (बिहार)

□ मैं 'नंदन' का पांच साल से नियमित पाठक हूं। नवम्बर अंक तो बहुत अच्छा लगा। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि पत्रिका सालों-साल प्रगति करे।

—श्रीनिवास रेड्डी, पहाड़ी शरीफ, हैदराबाद

□ 'लोभीलाल', 'साधु गायब', 'अंधा चोर', 'मेहनत का फल', 'दो में एक' तथा 'खोट में चोट' कहानियां बहुत अच्छी लगीं। 'शिव का वरदान', 'भागा जमींदार' तथा 'पांच हीरे' चित्र-कथाएं विशेष पसंद आईं।

—भूपेश खत्री, बुढ़लाडा (पं.)

□ पत्रिका का नया पाठक हूं। 'पटाखों का त्योहार' तथा 'दो में एक' कहानियां बहुत अच्छी लगीं। 'चीटू-नीटू' ने खूब मनोरंजन किया।

—बलजीत शर्मा, गुड़गांव (हरि.)

□ याद रही कथाओं ने मन मोह लिया। कविताएं भी बहुत मजेदार थीं। मेरे घर में सब लोग 'नंदन' पढ़ते हैं। मैंने अपने कई दोस्तों को भी इसका पाठक बनाया है।

—उमेश नेगी, कोटद्वार

□ नवम्बर अंक पढ़ा। उपहारों की चमक से आंखें चौंधिया गईं। ढेर सारे उपहार, सभी मन मोहक, लुभावने। बालभवन के बारे में जानकारी बहुत रोचक थी। 'लालबाग' खेल भी मजेदार था।

—अभिषेक रंजन, गिरिडीह।

□ 'नंदन' ज्ञान का भंडार है। हम सब मित्रों ने अपने क्लब का नाम 'नंदन क्लब' रख लिया है। 'हर घर जगमग', 'नहीं चाहिए सोना' बहुत ही आदर्श कहानियां थीं।

—संतोष साहू, खड़गपुर (प. बं.)

□ जिस तरह नवम्बर अंक में आपने अपने पाठकों की इच्छाएं पूरी की हैं, उसी तरह आगे भी करते रहेंगे। इस अंक की कहानियां, कविताएं, चित्र-कथाएं, चित्र सभी अनोखे थे।

—राबर्ट, जालंधर कैंट

□ इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री बच्चों के विकास में विशेष सहायक है। बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने में भी इसका हाथ है।

—विपिन मल्होत्रा, दिल्ली।

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : सुरुचि सिंगला, लुधियाना; शादाब शमशाद, गंजडुडवारा; आकाशदीप देशपांडे, पंचकुला; नरेंद्रसिंह सोनगरा, जोधपुर।

आगामी अंक

फूलों का मौसम लाया नंदन का बहुरंगा अंक

● एलबम में नेताजी सुभाष चंद्र बोस का सुंदर रंगीन चित्र। फ्रेम कराने योग्य

● **चीटू-नीटू लगाने चले फूलों के पौधे, मगर...**

● अजब-अनोखी दुनिया—जिसमें पौधे चमक रहे हैं जुगनू की तरह और रोटियों को महीनों बाद खाया जा सकता है।

● **उसने अर्जुन को बचाया! रोमांच से भरपूर चित्र-कथा 'हिडिम्बा का बेटा।'**

● वह कौन था जो पूरी दुनिया को धमकियां दे रहा था। कुछ लोग उससे जूझने के लिए चल पड़े। **'विश्व की महान कृतियां'** में पढ़िए जूले वर्न की रचना 'द मास्टर आफ द वर्ल्ड' की संक्षिप्त कथा।

हार की कीमत

—रूपक प्रियदर्शी

तानसेन मुगल बादशाह अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक थे। वह बहुत सुंदर गाते थे। अकबर तो उनसे इतने प्रभावित थे कि रात में वह जब तक तानसेन का गायन न सुन लें, तब तक नींद ही नहीं आती थी। इसीलिए तानसेन का निवास अपने शयनकक्ष के निकट ही रखा था, ताकि उन्हें तानसेन का संगीत हर समय सुनाई देता रहे।

तानसेन रात को संगीत का अभ्यास करते थे। उनका गायन सुनकर रात में सोना, बादशाह का रोज का नियम था। एक दिन बादशाह अकबर ने सोचा— 'क्यों न आज तानसेन के निवास पर जाकर उनका संगीत सुना जाए।' बस, वह वेश बदलकर तानसेन के निवास पर पहुंच गए और छिपकर तानसेन का गायन सुनने लगे।

सौभाग्य से तानसेन अन्य दिनों की अपेक्षा उस दिन और भी अच्छा गा रहे थे। रात के सन्नाटे में तानसेन का अद्‌भुत स्वर समुद्र की लहरों के समान उफान भर रहा था। काफी समय बाद तानसेन ने जब अपना गाना बंद किया, तो अकबर इतने मुग्ध हो गए कि वह अपने को रोक न सके। तानसेन के निकट पहुंचकर अपने गले का कीमती जड़ाऊ हार उनके गले में डाल दिया और चुपचाप खड़े हो गए।

अचानक बादशाह अकबर को इस तरह सामने देख और उनका उपहार पाकर तानसेन अचरज में पड़ गए।

अगले दिन दरबार में बादशाह ने रात की घटना का ज़िक्र किया। तानसेन से ईर्ष्या करने वाले दरबारी जल-भुन गए। उन्होंने तानसेन को नीचा दिखाने की सोची।

संयोग से तानसेन से वह हार कहीं खो गया। दरबारियों ने बादशाह से कहा— "तानसेन ने आपका दिया उपहार बेच दिया।" यह सुनकर बादशाह को बड़ा क्रोध आया। उन्होंने तानसेन को आदेश दिया कि वह अगले दिन हार लेकर दरबार में उपस्थित हों।

तानसेन दरबारियों की कुटिलता समझ गए, पर करते क्या ? रात भर परेशान रहे। फिर न जाने क्या सोचकर उन्होंने रीवा नरेश रामचंद्र के पास जाने की सोची। रीवा पहुंचकर राजा से मिले। राजा रामचंद्र ने उनका स्वागत किया और आने का उद्देश्य पूछा। तानसेन बोले— "मैं बहुत दिन के बाद आज आपको दो राग सुनाने आया हूं।" राजा बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने तुरंत सभा बुलाई। तानसेन गाने लगे। उनका गायन सुनकर, राजा को बड़ी खुशी हुई और उन्होंने उपहार स्वरूप अपने पैर की रत्नजड़ित खड़ाऊं तानसेन को दे दीं। यह बेशकीमती पुरस्कार पाकर तानसेन सीधे अकबर के दरबार में पहुंचे। खड़ाऊं बादशाह के सामने रख दीं और कहा— "हार का उचित मूल्य काटकर बाकी मुझे लौटा दें।" अकबर को अपनी भूल का एहसास हुआ। शर्मिंदगी भरे स्वर में उन्होंने तानसेन से माफी मांगी और खड़ाऊं लौटाते हुए कहा— "मेरे लिए तुमसे और तुम्हारे संगीत से बढ़कर कुछ नहीं है।"

यह देखकर ईर्ष्यालु दरबारियों के सिर झुक गए।

चतुर जुलाहा

चंदनपुर का राजा था सुजानसिंह। वह अपनी प्रजा को बहुत चाहता था। एक दिन राजा अपने दरबार में बैठा था। तभी पहरेदार ने आकर बताया कि विजयनगर राज्य से वहां के राजा का दूत आया है।

राजा ने तुरंत दूत को अंदर बुला भेजा। दूत ने अंदर आते ही राजा के सिंहासन के सामने एक भाला फेंका। पूरे दरबार में सन्नाटा छा गया। कोई भी दूत के इस व्यवहार का मतलब न समझ सका। मंत्री और दरबारी भी चकित थे। राजा ने सेनापति से कहा—"जाओ और हमारी प्रजा के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति को ढूंढ़कर लाओ।"

सेनापति कुछ सैनिकों को साथ ले चल दिया। बुद्धिमान व्यक्ति की तलाश करते कई दिन निकल गए। चलते-चलते सेनापति एक घर के सामने पहुंचा। घर के बाहर बहुत बड़ा पंखा लटका झूल रहा था। सेनापति घर के अंदर गया। वहां एक जुलाहा कपड़ा बुन रहा था। सेनापति ने उससे पंखे के झूलने का रहस्य पूछा।

जुलाहे ने कहा—"मैंने अनाज को पक्षियों से बचाने के लिए यह पंखा लगाया है। इस पंखे की डोर को करघे से बांध लिया है। जब करघा चलता है तो पंखा भी झूलने लगता है। इसकी तेज हवा से पक्षी भाग जाते हैं।" जुलाहे की बात सुनकर सेनापति को लगा कि यह आदमी सचमुच बहुत बुद्धिमान है। उसने जुलाहे को सारी बात बताई। अपने साथ दरबार में ले आया। दरबार में दूत बैठा मुसकरा रहा था। जुलाहे ने जाते ही कुछ गोलियां इधर-उधर बिखेर दीं। थोड़ी देर बाद दूत ने जौ के दाने फेंके। जुलाहे ने बाहर से एक मुर्गा मंगाया। मुर्गे ने सारे दाने खा लिए। यह देख, दूत वहां से चला गया। सब लोग जुलाहे की तारीफ करने लगे।

राजा ने जुलाहे से उसकी बातों का अर्थ पूछा। जुलाहा बोला—"दूत ने सिंहासन के पास भाला

फेंककर कहा था कि वे आपके सिंहासन पर अधिकार करने के लिए आक्रमण करने वाले हैं। मैंने गोलियां फेंककर बताया कि हमने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं। फिर दूत ने जौ के दाने फेंके। इसका अर्थ था कि उनकी सेना बहुत बड़ी है। मैंने मुर्गे को दाने खिलवाकर संदेश दिया कि हम उनके सैनिकों को निगल जाएंगे।"

जुलाहे की बातें सुनकर, राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे खूब इनाम दिया।

—नीलम, बिलासपुर (हि. प्र.)।

नई ढाल

विष्णुपुर का नाम दूर-दूर तक मशहूर था। वहां के राजा थे अग्रसेन। सब कहते कि अग्रसेन के राज्य में शेर और बकरी एक घाट ही पानी पीते हैं। प्रजा राजा को जी-जान से चाहती थी।

पड़ोसी राजा था देवकांत। वह राजा अग्रसेन की प्रसिद्धि से बहुत चिढ़ता था। एक बार उसने विष्णुपुर पर चढ़ाई कर दी। अग्रसेन युद्ध के लिए बिलकुल तैयार नहीं थे। हालांकि उनकी सेना बहुत बड़ी थी, लेकिन उनके पास अस्त्र-शस्त्रों की कमी थी। अच्छे हथियार बनाने के लिए बहुत-सा लोहा बाहर से मंगाना पड़ता। इस पर भारी खर्च होता। पैसा जुटाने के लिए प्रजा पर कर लगाना पड़ता। प्रजा का दुःख राजा को

जरा भी बर्दाश्त नहीं था ।

राज्य की खानों से जितना लोहा निकलता था, उससे बहुत अधिक अस्त्र-शस्त्र नहीं बन सकते थे । सबसे अधिक कमी ढालों की थी ।

राजा दरबार में बैठे इन्हीं समस्याओं पर विचार कर रहे थे । उसी समय दरबार में एक लुहार आया । उसके हाथ में एक ढाल थी । ढाल की खास बात यह थी कि इसमें अन्य ढालों के मुकाबले बहुत कम लोहा लगा था ।

राजा को विश्वास नहीं हुआ कि इस ढाल का इस्तेमाल युद्ध में किया जा सकता है । उन्होंने एक सैनिक को ढाल पर भाला चलाने के लिए कहा ।

सैनिक ने पूरी ताकत से ढाल की ओर भाला फेंका । मगर यह क्या ! भाला टूट गया लेकिन ढाल का कुछ न बिगड़ा । राजा की खुशी का ठिकाना न रहा । उन्होंने लुहार से पूछा कि क्या वह जल्दी से जल्दी ऐसी हजारों ढालें बना सकता है ।
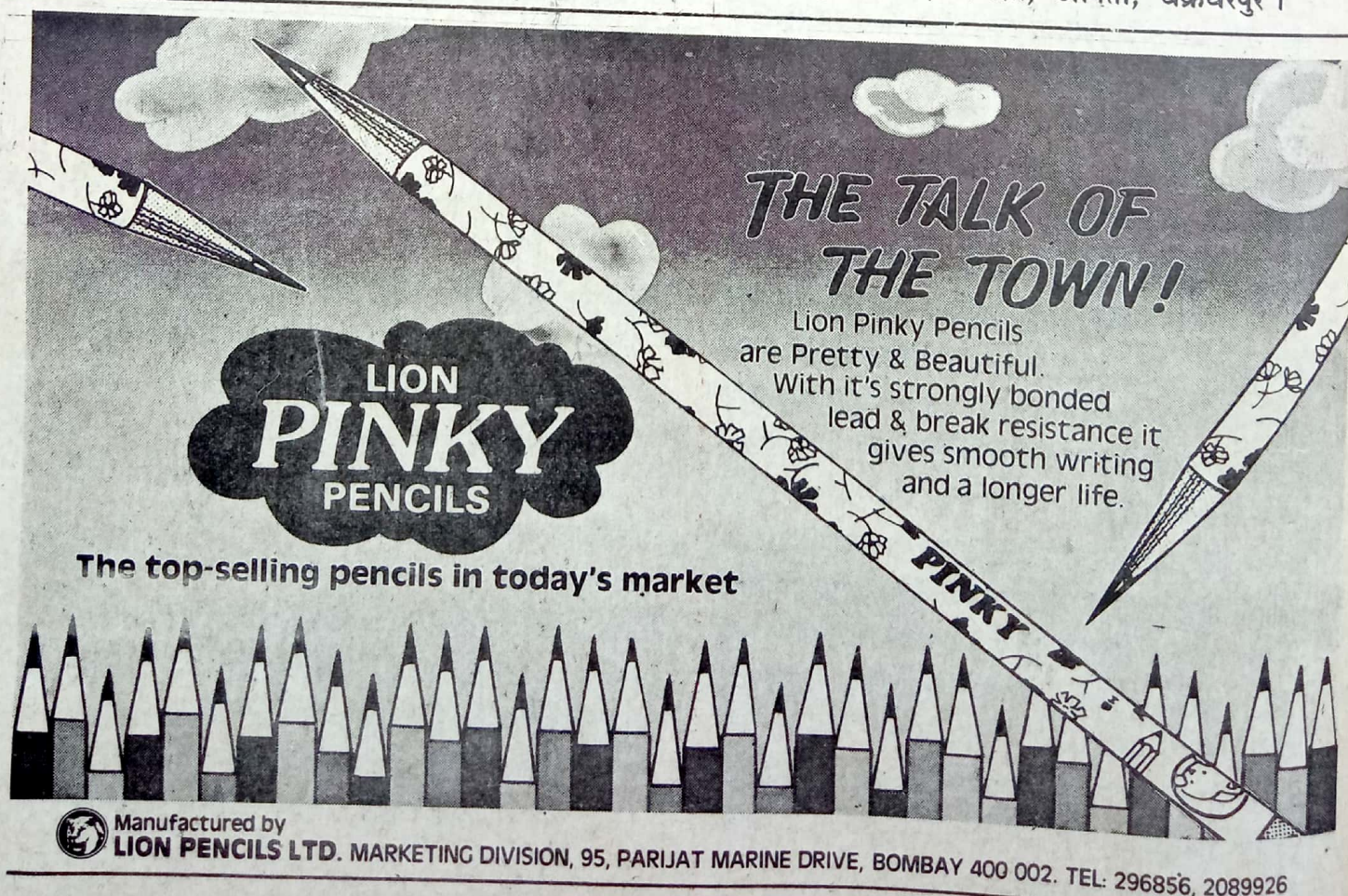
लुहार बोला—"महाराज, देश की रक्षा का सवाल है । आप युद्ध की तैयारी करें । राज्य में जितने भी कारीगर हैं, उनकी मदद से हम अपने सभी सैनिकों के लिए सिर्फ ढाल ही नहीं, अच्छे से अच्छे हथियार भी बना देंगे ।"

राजा लुहार की बातों से बहुत खुश हुए । अपने गले का हार उन्होंने लुहार को भेंट कर दिया ।

ज़ल्दी ही ढालें और हथियार तैयार हो गए । अग्रसेन की सेना नए हथियार और ढालें पाने से और अधिक जोश में आ गई । देवकांत की सेना से जमकर लोहा लेने लगी । शत्रु सैनिकों को इसकी उम्मीद न थी । वे मैदान छोड़-छोड़कर भागने लगे । देवकांत को अग्रसेन के सैनिकों ने गिरफ़्तार कर लिया । मगर गलती मानने पर राजा अग्रसेन ने उसे माफ कर दिया । अग्रसेन की विजय पर प्रजा ने खूब खुशी मनाई ।

—संजय बी. जोशी, बम्बई

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : नीरज खिंदरी, अमृतसर; संजयकुमार मिश्रा, कोटपाड़ (उड़ीसा); मनोजकुमार जैन, सिरसा; अनिता, चक्रधरपुर ।

नई पुस्तकें

हिन्दी की श्रेष्ठ बाल-कथाएं—सम्पादक : जयप्रकाश भारती; प्रकाशक : भारत पब्लिशिंग हाउस, १२३ दुर्गा चैम्बर्स, देशबंधु गुप्ता रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-५; बड़ा आकार पृष्ठ ११२; मूल्य : साठ रुपए।

बच्चों के लिए कहानी की छोटी पुस्तकें छपती रहती हैं जिनमें पांच-छह कहानियां होती हैं। इस पुस्तक में चुनी हुई इक्कीस कहानियां हैं। ये कहानियां तरह-तरह की हैं यानी परी-कथा, पौराणिक कथा, ऐतिहासिक कथा और सामाजिक कथा आदि। कुछ कहानियों में लोक-कथा की झलक है। सबसे बड़ी बात यह है कि कहानियां एक से बढ़कर एक रोचक हैं। जाने-माने लेखकों की कथाएं हैं जैसे प्रेमचंद, आचार्य चतुरसेन, भीष्म साहनी तो इसमें बच्चों के प्रिय कथाकार भी हैं जैसे मनोहर वर्मा, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', स्नेह अग्रवाल और डा. ओमप्रकाश सिंहल। नए कथाकारों की रचनाएं भी ली गई हैं जैसे उषा महाजन, मधुमालती जैन और डा. सत्येन्द्र वर्मा।

यह कहानी संग्रह छोटे-बड़े सभी पाठकों को रुचिकर लगेगा। कहानियों के साथ दो-रंगे चित्र हैं। छपाई भी अच्छी है।

१. चार चोर, २. षट्शास्त्री दोनों पुस्तकों के लेखक : नागार्जुन; प्रकाशक : यात्री प्रकाशन, बी-१३१, सादतपुर, दिल्ली-२४; मूल्य : प्रत्येक का आठ रुपए।

नागार्जुन हिन्दी के गौरव हैं। कवि के रूप में उनका नाम शीर्ष पर है। उन्होंने उपन्यास भी लिखे हैं। लेकिन बच्चों की कहानियां उन्होंने लिखी हैं, यह एक समाचार है। 'चार चोर' पुस्तक में छह रोचक कहानियां हैं। सरल भाषा में लिखी गई इन कहानियों में लोक-कथाओं का रस है।

'षट्शास्त्री' में पांच कहानियां हैं—सत्यवीर, षट्शास्त्री, राजा वलाह और विक्रमादित्य, हम्मीर देव और पंडित शांतिधर। बच्चे दोनों पुस्तकें पसंद करेंगे।

होशियार सिंह—लेखक : रमाकांत; प्रकाशक : यात्री प्रकाशन, सादतपुर, दिल्ली-९४; मूल्य : आठ रुपए।

पुस्तक में नेक दिल व्यापारी धर्मचंद और एक चतुर व्यक्ति होशियार सिंह की कथा है। कहानी की शैली रोचक है। भाषा भी सहज सरल है। बड़ी से बड़ी मुसीबत आने पर भी धीरज नहीं खोना चाहिए, कहानी में यही बात खूबसूरती से पिरोई गई है।

खाओ फल

— प्रकाशचन्द्र खत्री

प्राचीन समय में एक ऋषि थे। वह ध्यान और साधना में लगे रहते। उनके आश्रम में और कोई मनुष्य नहीं था। पशु-पक्षी निडर होकर वहां रहते थे। आश्रम के चारों ओर घना वन था। भांति-भांति के पेड़-पौधों और फलों के वृक्षों से घिरा उनका आश्रम बहुत सुंदर लगता था। ऋषि को जब भूख लगती, तो वह फलाहार कर लेते। चौकड़ी भरते हिरनों को प्रेम से निहारते और पुनः अपनी साधना में बैठ जाते। पशु-पक्षियों को ऋषि अपनी संतान की तरह चाहते थे। कभी किसी को चोट लग जाती तो तुरंत जड़ी-बूटियां घिसकर लेप करते। कोई बीमार पड़ जाता तो उसकी सेवा में लगे रहते।

उसी वन में एक राक्षस भी रहता था। जंगली जानवरों को मारकर अपनी भूख मिटाता और गुफा में जाकर सोता। ऋषि के आश्रम में कूदते-फांदते हिरनों को देख, उसके मुंह में पानी भर आता, किंतु उनका शिकार करने का साहस उसमें नहीं था। मन-ही-मन वह ऋषि से डरता था।
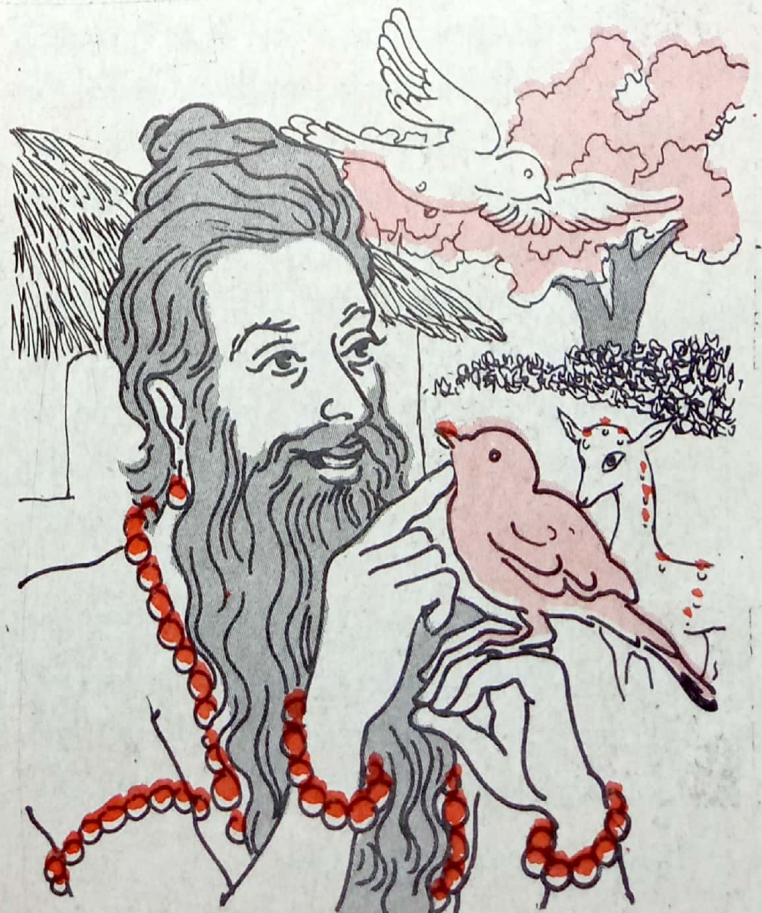
धीरे-धीरे वन के अन्य कमजोर पशु-पक्षी भी राक्षस से घबराकर ऋषि के आश्रम में शरण लेने लगे। अब राक्षस को शिकार मिलने में कठिनाई होने लगी। उसे बहुत इंतजार करना पड़ता। कभी-कभी तो लम्बे इंतजार के बाद इतना छोटा शिकार हाथ आता कि उसे खाकर राक्षस की भूख शांत न होती। धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आ गई कि दो-दो दिन गुजर जाते और राक्षस को कुछ खाने को न मिलता। भूख के कारण वह दिनों-दिन कमजोर होता जा रहा था। शिकार पकड़ पाने की उसकी ताकत भी क्षीण पड़ने लगी।

संकट जब गहरा होने लगा और राक्षस को अपनी मृत्यु नजर आने लगी, तो वह छटपटा उठा। उसने निश्चय किया कि वह ऋषि के आश्रम से ही अपना शिकार पकड़ेगा।

उस दिन ऋषि अपनी साधना से उठकर, कुटिया से बाहर आए! अपने प्रिय पशु-पक्षियों को निहारा, तो परेशान हो उठे। एक हिरन गायब था। दूसरे हिरन और पशु भी उन्हें डरे-डरे-से लगे। अपनी ध्यान शक्ति से उन्होंने सारी स्थिति का पता लगा लिया। वह उस राक्षस की क्रूरता को देख, क्रोध से कांपने लगे, किंतु उनके दयावान हृदय ने भूख से मरते राक्षस की दशा पर भी विचार किया। असमंजस की स्थिति में फंसे ऋषि को कोई विकल्प नहीं दिखाई दे रहा था। वह वापस कुटिया के भीतर गए और अपने दुखी चित्त को शांत करने के लिए फिर से ध्यान मग्न हो गए।

उधर राक्षस अपना शिकार पाकर बेहद खुश था। उसने कई दिनों के बाद अपनी भूख शांत की और आराम से गुफा में पसर गया। अब उसे ऋषि का उतना डर नहीं रहा। उसने अपने पेट पर हाथ फेरा और हंस पड़ा। उसे अपनी मूर्खता पर हंसी आ रही थी।

अब तक बेकार ही ऋषि के आश्रम की ओर नहीं गया। आगे से वह और कहीं नहीं जाएगा। जब भी भूख सताएगी, तो वहीं से शिकार पकड़ लाएगा। ढेरों पशु-पक्षियों के होते ऋषि को यह भान भी नहीं होगा कि कौन-सा पशु कम हो गया है।- यह सोच वह निद्रामग्न हो गया।
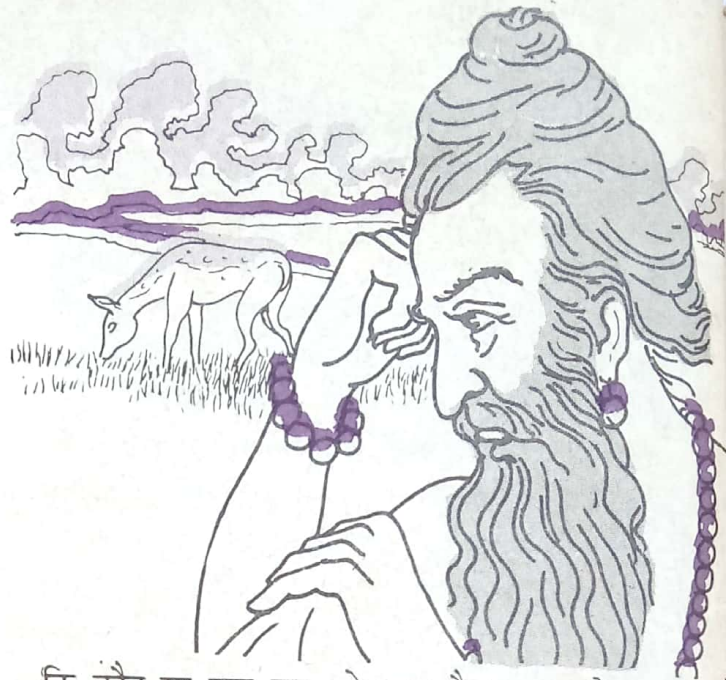
अगले दिन से राक्षस नियम पूर्वक ऋषि के आश्रम की ओर जाता और एक मोटे से हिरन को अपना शिकार बना लेता। राक्षस इतनी बुद्धिमानी अवश्य दिखाता था कि वह शिकार पकड़ने तभी जाता, जब ऋषि ध्यान में होते। उसे मालूम था कि साधनारत ऋषि कुछ भी हो जाने पर अपने ध्यान से उठने वाले नहीं थे। दिनों-दिन अच्छा भोजन मिलने से राक्षस ताकतवर होने लगा।

उधर ऋषि भी परेशान हो गए। पशु-पक्षियों के गायब होने से वह अत्यंत दुखी हो गए थे। ऋषि अपने नियम पर भी दृढ़ थे। साधना भंग कर उठना उन्हें नापसंद था। राक्षस उनके इस नियम की आड़ में अपना काम कर जाता था। अब तो स्थिति दिन पर दिन बिगड़ने लगी थी।

व्यथित ऋषि ने राक्षस को सबक सिखाने का उपाय खोज लिया। उन्होंने कुछ मायावी हिरनों की रचना की। वे हिरन देखने में एकदम जीवित हिरनों की भांति दौड़ते और कुलाचें भरते। उनसे अधिक मोटे और सुंदर प्रतीत होते। ऋषि ने उनकी रचना कर, उन्हें अपने आश्रम में जीवित हिरनों के बीच ही छोड़ दिया और निश्चिंत हो गए।

अगले दिन राक्षस पहले की भांति ऋषि के आश्रम में आया। अरे यह क्या! इतने मोटे-ताजें और

सुंदर हिरन ! राक्षस की आंखें चमकने लगीं । मुंह से लार टपकने लगी । उसने झपट्टा मारकर एक हिरन को दबोचा और घने वन की ओर चल दिया ।

अगले दिन वह देर तक सोता रहा । जब वह उठा और ऋषि के आश्रम की ओर बढ़ा, तो आधे रास्ते में उसे ख्याल आया कि ऋषि तो अपनी साधना पूर्ण कर चुके होंगे । वह ठिठक गया और सोचने लगा । कुछ सोचकर वह फिर आगे बढ़ा और आश्रम तक पहुंचकर रुक गया । घनी झाड़ियों की ओट से उसने देखा कि ऋषि पशु-पक्षियों के बीच घूम-फिर रहे हैं । ऋषि की शक्ति से भयभीत होकर वह लौट आया और गुफा में लेट गया । अब वह इतना आलसी हो गया था कि आश्रम के अलावा कहीं से शिकार ढूंढ़ पाने की सोच भी नहीं पाता था । उसने मन मारकर शिकार की बात अगले दिन पर छोड़ दी ।

उधर ऋषि ने जब एक मायावी हिरन को लापता पाया तो अपनी युक्ति के सफल होने पर मुसकरा उठे ।

अगले दिन राक्षस फिर आया । उस बार भी उसने मोटे-ताजे मायावी हिरन को अपना शिकार बनाया और गुफा की ओर चल पड़ा । लेकिन जल्दी ही राक्षस के पेट में आग-सी लगने लगी । वह भूख से बिलबिलाने लगा । वह गुफा से बाहर निकला और वन में भटकने लगा । पूरा वन जंगली जानवरों से खाली हो गया था ।

कई दिनों तक यही क्रम चलता रहा । राक्षस फिर कमजोर होने लगा । आश्रम से पकड़े मोटे-ताजे हिरनों को खाकर भी पेट खाली का खाली ही रहता । अब तो उसके हाथ-पैर इतने लाचार हो गए थे कि मायावी हिरन भी उसकी पकड़ से छूट जाते, वह देखता ही रह जाता । मन ही मन वह समझ गया कि यह सब ऋषि की बुद्धि के ही कारण हो रहा है ।

अंततः उसके धैर्य ने जवाब दे दिया । वह उठा और आश्रम की ओर बढ़ा । वहां पहुंच, उसने एक दृष्टि पशु-पक्षियों पर डाली और ऋषि के चरणों पर गिर पड़ा । साधना से निवृत्त होकर, ऋषि ने आंखें खोलीं तो राक्षस को पैरों में पड़ा देखा । भूख से तड़पते राक्षस ने गिड़गिड़ाते हुए प्रार्थना की— "हे ऋषिवर ! मैं क्षमाप्रार्थी हूं कि मैंने आपके आश्रम से पशुओं को चुराने और उनका शिकार करने का अपराध किया है, किंतु आप ही बताइए, मैं क्या करूं ? क्या मुझे अपना भोजन प्राप्त करने का भी अधिकार नहीं है ?"— राक्षस बिलख-बिलखकर रोने लगा ।

ऋषि द्रवित हो गए । उन्होंने राक्षस की क्षीण होती काया को देखा । बोले— "अरे राक्षस ! तुझे अपने शरीर की तो इतनी अधिक चिंता है, किंतु उन असहाय और दुर्बल जीवों की कोई परवाह नहीं, जो घास-फूस खाकर ही जीवित हैं । क्या उनकी पीड़ा का तुझे आभास नहीं ?"

इतना कह, ऋषि आश्रम के भीतर गए और फलों की टोकरी उठा लाए । उसे राक्षस को सौंपकर बोले— "ले, आज से तुझे इन्ही फलों को खाना है । भूख लगने पर किसी जीव की हत्या नहीं करनी है । यदि फिर से तूने जीव हत्या का रास्ता अपनाया तो मैं तुझे भस्म कर दूंगा ।"

राक्षस ने फलों की टोकरी उठाई और वहीं बैठकर फल खाने लगा । फल इतने सरस और मीठे थे कि राक्षस बहुत खुश हुआ । उसी दिन से वह ऋषि-आश्रम में रहने लगा और ऋषि तथा पशु-पक्षियों की सेवा में जुट गया । ●

शीर्षक बताइए

परिणाम

नंदन, नवम्बर '९३ में छपे रंगीन चित्र पर ये शीर्षक पुरस्कार के लिए चुने गए।

सज धज कर मैं आया हूं, सबके मन में छाया हूं।
— वीरेंद्रकुमार, विद्या भवन सीनियर स्कूल, न्यू बी. एड्. हास्टल, उदयपुर (राज.)।

लगता हूं मैं राजकुमार, पर मैं करता हूं व्यापार।
— नागेंद्रनाथ पांडेय, सत्येंद्रनाथ पांडेय, विक्टोरिया कोलियरी, लाल बाजार, पो. लाल बाजार, कुल्टी वर्धमान (प. बं.)

पगड़ी पहने आप जनाब, लगते हैं पूरे नवाब।
— गौरव ठक्कर, म. नं. ११६, निकट—शांति भवन, शहर बहादुरगढ़, रोहतक (हरि.)।

मत पूछो तुम मेरा नाम, शहजादा हूं करो सलाम।
— राजू, रामबाबू यादव, बी. एम. दास रोड, पो. बांकीपुर, पटना (बि.)।

इनके शीर्षक भी पसंद आए : रूपाली एस. जैन, जोगेश्वरी पूर्व, बम्बई; कुमार गोपाल भारद्वाज, बलिया (उ.प्र.); महिमा, मद्रास; मनीषकुमार मित्तल, बारा (राज.); बबिता मेहरोत्रा, लखनऊ।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. सीमा शुल्क वाले बोर्ड की बाईं सतह अधिक काली है।
२. बाएं कोने में लगे बल्ब का शेड गायब है।
३. बक्से की जांच करने वाले ने चश्मा लगाया हुआ है।
४. काउंटर पर खड़े व्यक्ति के पैर तले दबे बक्से पर देश की चिट लगी है।
५. उसकी टांग पर बंधी घड़ियों को देखते निरीक्षक की टोपी ऊपर से पिचकी हुई है।
६. दाएं कोने में खड़े व्यक्तियों के सामान में एक बैग अधिक बड़ा है।
७. निकासी द्वार के ऊपर से घोषणा बक्स गायब है।
८. छत पर लटके शेड में बल्ब नहीं है।
९. उसके नीचे खिड़की का शटर अधिक गिरा हुआ है।
१०. बाईं ओर खड़ी महिला के गले में माला है!
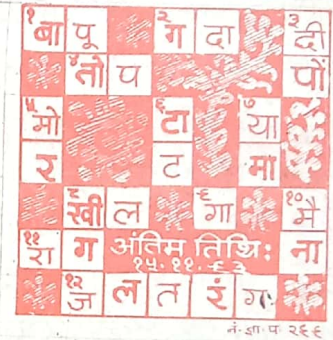
नंदन ज्ञान-पहेली : २९९

परिणाम

इस बार भी पाठकों ने ज्ञान-पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया, लेकिन कोई सर्वशुद्ध हल नहीं आ सका। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

एक गलती : पंद्रह : प्रत्येक को पैंसठ रुपए

१. कुमार अम्बर, देवघर; २. सीमा सिंघल, नजीबाबाद; ३. राकेश अवस्थी, देहरी आन सोन; ४. रोहन चौधरी, फरीदाबाद; ५. वैभव जैन, तीतरों (सहारनपुर); ६. विपिन बिहारी, सासाराम; ७. निधि गोयल, जबलपुर; ८. प्रीतमकुमार चौरसिया, धनबाद; ९. सुनीता हेनरी, इलाहाबाद; १०. राकेशकुमार प्रियदर्शी, मथुरापुर (जमुई); ११. सचिन रामचंद्र कुलकर्णी, खरगोन; १२. सुमितप्रकाश, मुजफ्फरपुर; १३. अमित श्रीवास्तव, इलाहाबाद; १४. अरविंदकुमार सिंह, बोकारो; १५. संजीव शुक्ला, ग्वालियर।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेंद्र प्रसाद द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ से मुद्रित तथा प्रकाशित।
कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

action SHOES
PISTA
बेटा अर्जुन, देखो हम तुम्हारे लिए क्या लाये हैं!
क्या लाये हैं डैडी?
एक्शन शूज?
याह्!
अब मेरे पास दो जोड़े एक्शन शूज हो गये!
द..द... दो जोड़े-? वो कैसे?? अभी रामू से पूछता हूं!
रामू!
आवत हैं मालिक!
अर्जुन के पास दूसरा जोड़ा जूता कहां से आया?
साहेब यो बचवा भी आप ही की तरह एक्सन सूस का दीवाना है!
अबे, साफ साफ बोल..!
साहेब, आज दोपहर में मेम साहेब किट्टी पार्टी में गई रहिन, और हम तनिक सुस्ता रहे थे, तो बचवा अर्जुन, आप के एक्शन शूज, आप की अल्मारी में से निकाल कर, सामने से ब्लेड से काट कर, अपने खुद के साइज के बना दियेन साहेब!
क्या..? दिखाओ .... क..क ... कहां हैं मेरे प्यारे ऐक्शन शूज..?
हाय..यह क्या हालत बना डाली है इस नालायक ने मेरे जूतों की.. म..मेरी छाती फटी जा रही है!
अब छाती फटने से जूते तो सिल नहीं जायेंगे साहेब ... आप को खुद ही को इत्ता ख्याल होना चाहिये था कि जब आप अपने जूते लाये थे तो बचवा के भी जूते तभी ले आने चाहिये थे...!
तुम ठीक कहते हो रामू!
अरे साहेब, आप कहां चल दिये... चाय तैयार है!
नहीं रामू.. पहले मैं जाकर अपने लिए नई जोड़ी ऐक्शन शूज ले आऊं.. तभी मैं चैन से बैठ पाऊंगा!
ठीक है साहेब, हमार वास्ते भी एक दस लम्बर का
ऐक्शन सूस ले आईयेगा ... दाम हम धीरे-धीरे अपनी तनखा में से कटवा देंगे.. "एक्शन शूज मुझे भी बहुत अच्छा लगता है जी";
समाप्त
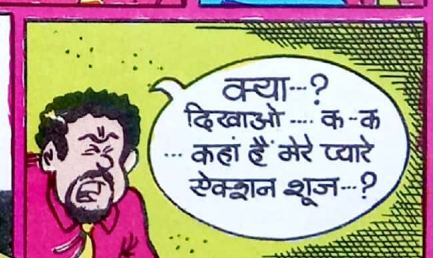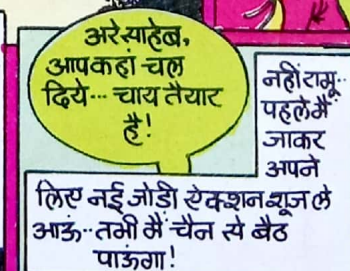
रजि. नं. डी.एल.-२७००५/९३ आर.एन.आई. नं. १०५२५/६४